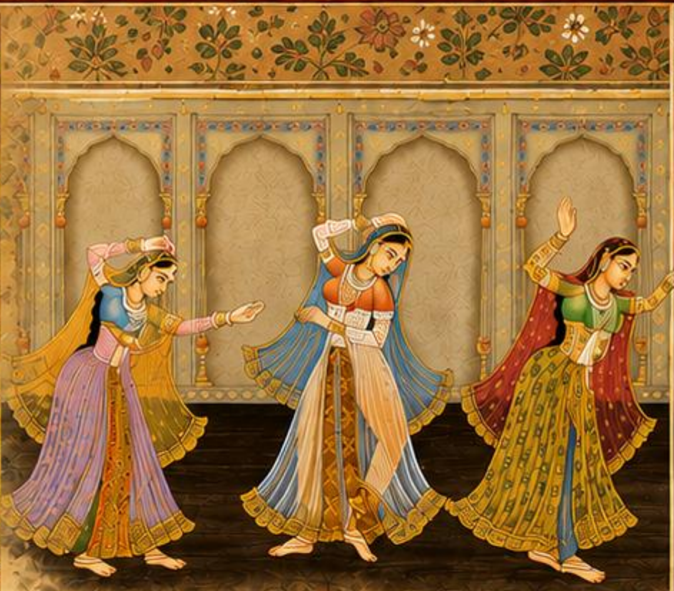

मरुवाणी

द्वितीय अंक

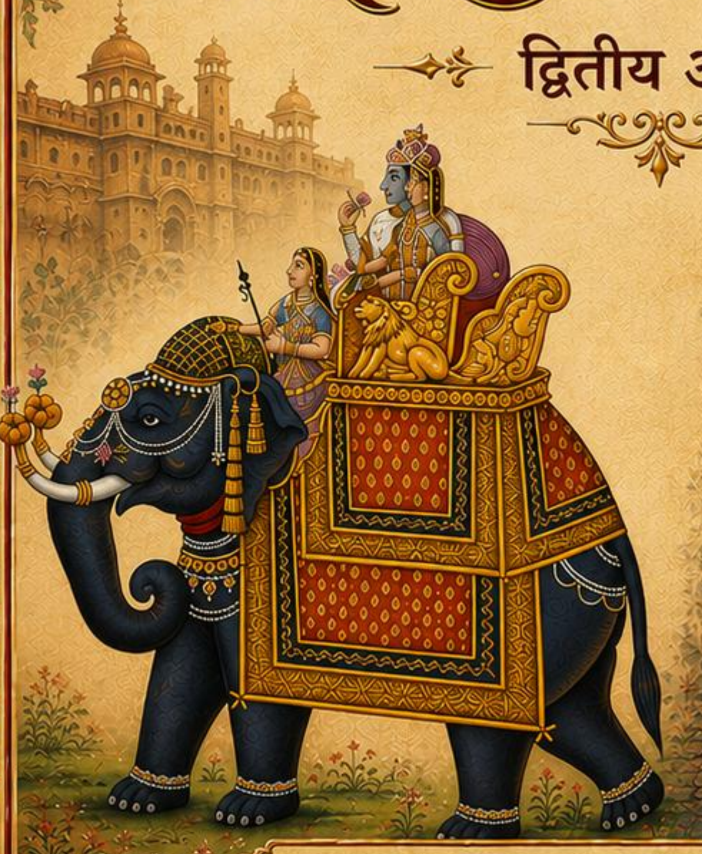

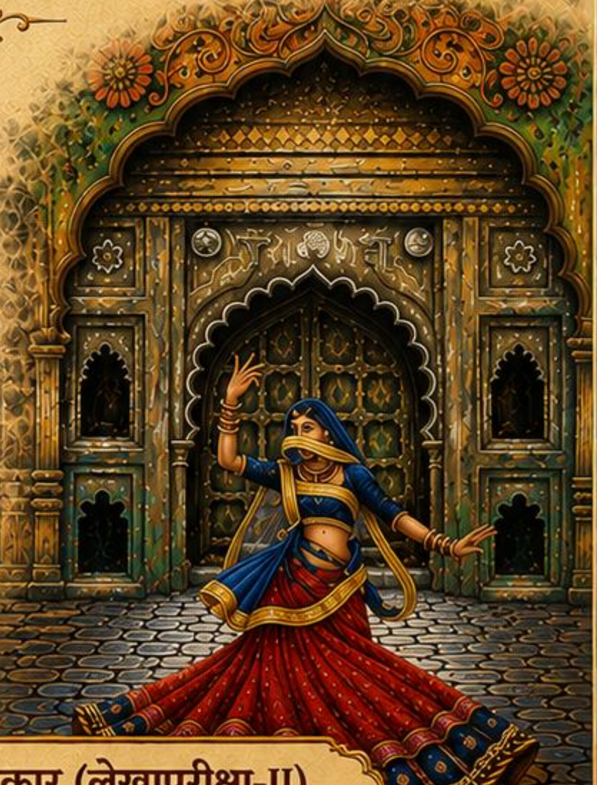

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
राजस्थान, जयपुर

भारत सरकार
गुह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

"भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि:

- अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और पुरस्कार से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे।

- अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।

- हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

मरुवाणी

पत्रिका परिवार

संरक्षक

सुश्री मणि के.
प्रधान महालेखाकार

श्री रामावतार शर्मा
भूतपूर्व महालेखाकार

परामर्शदात्री समिति

श्री विनोद परिहार
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

सुश्री प्रतिभा सिंह
भूतपूर्व उप महालेखाकार
(प्रशासन)

श्री राम भजन कुम्हार
उप महालेखाकार
(ए.एम.जी.-III)

संपादक

श्री वजीर सिंह
सहायक निदेशक

संपादन सहयोग

श्री सारांश गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों के व्यक्तिगत विचारों एवं भावनाओं का दर्पण हैं। इन विचारों से पत्रिका परिवार अथवा संपादक मंडल का सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद अथवा न्यायिक कार्यवाही की स्थिति में **न्यायिक क्षेत्र जयपुर (राजस्थान) होगा।**

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना / लेख	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री का संदेश	श्री अमित शाह जी	6-7
2.	संदेश	• प्रधान महालेखाकार एवं संरक्षक • भूतपूर्व महालेखाकार • वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) • उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III) • भूतपूर्व उप महालेखाकार • सहायक निदेशक (राजभाषा)	8-13
3.	'मरुवाणी' के प्रथम अंक के विमोचन की कुछ झलकियाँ		14
4.	आभार		15-16
5.	गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, ऑडिट रन एवं हिंदी पखवाड़ा की झलकियाँ		17-20
6.	राजस्थान के राज्य प्रतीक		21
7.	स्वर कोकिला	सारांश गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	22-26
8.	संघर्ष (अंतिम भाग)	राजेश रायसिंघानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	27-28
9.	ख्वाब	राहुल भदाला, लेखापरीक्षक	29
10.	श्री विवेक माथुर जी: एक गुरु और मार्गदर्शक	विजय सिंह रावण, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-32
11.	फौजी मेहर सिंह	वजीर सिंह, सहायक निदेशक	33-37
12.	राजस्थान के प्रमुख व्यंजन एवं मिठाईयां		38
13.	अनुभव की पाठशाला; हमारे बुजुर्ग	ओमप्रकाश गुप्ता (अतिथि रचनाकार)	39-42
14.	19 ऊँटों का बँटवारा	राजेश कुमार सैनी, लेखापरीक्षक	43-45
15.	घर से दूर एक घर	राहुल भदाला, लेखापरीक्षक	46-48
16.	मैं लड़की हूँ	नेहा गुप्ता (अतिथि रचनाकार)	49
17.	'जूनागढ़' बीकानेर का शौर्य	कुसुमलता, लेखापरीक्षक	50-52
18.	रस्में	अशोक कुमार वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	53-55

क्रम संख्या	रचना / लेख	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ संख्या
19.	नेतृत्व की परिवर्तन यात्रा	राजीव भाटिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	56-57
20.	छूटना	राम भजन कुम्हार, उप महालेखाकार	58-60
21.	प्रतियोगी परीक्षा; अंतिम लक्ष्य नहीं	मोहन शर्मा, लेखापरीक्षक	61-62
22.	मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो	नवीन दैया, निजी सहायक	63
23.	पूर्वोत्तर भारत; अरुणाचल प्रदेश	केशव शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	64-67
24.	माटी; माथे रो तिलक	प्रभाकर पारीक, लेखापरीक्षक	68-70
25.	ऐसा क्यूँ	ओमप्रकाश गुप्ता (अतिथि रचनाकार)	71
26.	वगैरह-वगैरह	गौरव कुमार प्रजापत, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं सचिव	72-74
27.	उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 अधिकार, सुरक्षा और न्याय की नई दिशा	बलवीर सिंह कस्वां वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	75-77
28.	स्त्री होना एक वरदान है, अभिशाप नहीं	राजेश रायसिंघानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	78
29.	कत्रिम बुद्धिमत्ता	शालिनी अग्रवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	79-82
30.	जीवन का रहस्य	रामनारायण, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	83-85
31.	कनाताल की ओर	विनय शर्मा, डी.ई.ओ.	86-87
32.	जिन्दगी तब समझ आती है	सुमित्रा, ऑडिट क्लर्क	88
33.	आटा-साटा की शादी	महेंद्र सिंह बाजिया (अतिथि रचनाकार)	89-92
34.	‘भूरा’ एक बेजुबान की कहानी	प्रभाकर पारीक, लेखापरीक्षक	93-94
35.	भारतीय सिनेमा और एक आलोचनात्मक कहानी	रामावतार शर्मा, लेखापरीक्षक	95-99
36.	भगत सिंह के आखिरी घंटे	सोनाली गुप्ता (अतिथि रचनाकार)	100-102

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

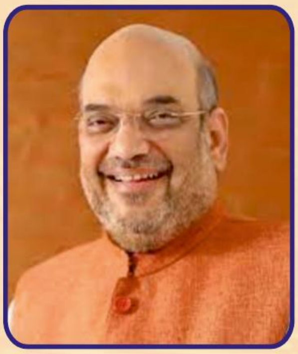

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका **"मरुवाणी"** का द्वितीय अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं कार्यालय में सृजनात्मक वातावरण को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास भी है।

किसी भी संस्था की पहचान उसके प्रशासनिक कार्यों से नहीं होती, बल्कि उसके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सरोकार भी उसकी विशिष्टता को दर्शाते हैं। "मरुवाणी" हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा, विचारों एवं अनुभवों को साझा करने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, लघुकथाएँ एवं अन्य साहित्यिक रचनाएँ पाठकों को ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ प्रेरणादायी भी सिद्ध होंगी। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उत्साहपूर्वक अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध करते रहेंगे।

मैं संपादक मंडल तथा इस अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके समर्पण, परिश्रम एवं उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। साथ ही "मरुवाणी" की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करती हूँ।

"आइए, हिंदी को केवल कार्यालय की भाषा नहीं, बल्कि विचार और व्यवहार की भाषा भी बनाएँ।"

(मणि के.)
प्रधान महालेखाकार

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "मरुवाणी" का द्वितीय अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक एकता, परंपरा और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है।

कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यह केवल एक औपचारिक आवश्यकता न होकर हमारे कार्य-संस्कृति का रचनात्मक अंग बनना चाहिए। राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक है कि हम अपने दैनिक कार्यों, पत्राचार, नोटिंग एवं मसौदा लेखन में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को नई गति प्रदान करने के साथ-साथ हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक सशक्त मंच उपलब्ध कराएगी। मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपनी सक्रिय एवं रचनात्मक सहभागिता द्वारा इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध तथा उपयोगी बनाने में योगदान देंगे।

मैं पत्रिका के संपादक और रचनाकारों के साथ अन्य सभी सदस्यों को उनके समर्पित एवं सराहनीय प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को अपने कार्य और व्यवहार की प्रमुख भाषा बनाने का संकल्प लें तथा राजभाषा के संवर्धन एवं प्रसार में सक्रिय योगदान दें।

(रामावतार शर्मा)
भूतपूर्व महालेखाकार

संदेश

राजभाषा हिंदी पत्रिका “मरुवाणी” का यह नवीन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है।

आज के इस परिवर्तनशील और प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में यह आवश्यक है कि हम अपनी भाषाई पहचान को सुदृढ़ बनाए रखते हुए प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रभावी बनाएं। यह पत्रिका हमारे संस्थान की रचनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक क्षमता और भाषाई प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इसके माध्यम से कार्यालय के सदस्यों की हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें—यह केवल राजभाषा का दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य भी है। “मरुवाणी” के सफल संपादन के लिए संपादक एवं संपादन सहयोग से जुड़े सभी सदस्यों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को केवल भाषा नहीं, बल्कि अपनी कार्यशैली और पहचान का अभिन्न हिस्सा बनाएं।

(विनोद परिहार)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

राजभाषा हिंदी पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। “मरुवाणी” न केवल हमारी भाषाई प्रतिबद्धता का दर्पण है, बल्कि संगठन की वैचारिक समृद्धि, सृजनात्मकता एवं सांस्कृतिक चेतना का भी सशक्त परिचायक है।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ देश की सांस्कृतिक विरासत, एकता और जनसंपर्क का सशक्त माध्यम है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता तथा जनसुलभता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह हम सभी का दायित्व है कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएँ तथा राजभाषा नीति के उद्देश्यों को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दें।

आशा है कि **"मरुवाणी"** का यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगा तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

राम भजन कुम्हार

(राम भजन कुम्हार)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

राजभाषा हिंदी पत्रिका **"मरुवाणी"** के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय में हिंदी के संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्रीय एकता की अभिव्यक्ति का सशक्त आधार है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रभावी प्रयोग प्रशासन को अधिक सहज, सरल एवं जनोन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कार्यालय के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का यह दायित्व है कि वे अपने कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करें तथा राजभाषा नीति के उद्देश्यों को साकार करने में सहयोग प्रदान करें।

मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल, राजभाषा अनुभाग तथा सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट प्रयास हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि **"मरुवाणी"** का यह अंक पाठकों के मध्य विशेष स्थान बनाएगा तथा हिंदी के प्रति नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा।

प्रतिभा सिंह

(प्रतिभा सिंह)
भूतपूर्व उप महालेखाकार

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका "मरुवाणी" के द्‌वितीय अंक को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। हमारी हिंदी पत्रिका "मरुवाणी" के द्‌वारा कार्यालय सदस्यों (सेवारत/सेवानिवृत) और उनके पारिवारिक सदस्यों के विभिन्न अनुभवों, कल्पनाओं, संस्मरणों इत्यादि के संकलन को प्रस्तुत किया गया है ताकि अन्य विभागीय सदस्य, आप और हम, भी उनके उन अनुभवों तथा कल्पनाओं से परिचित हो सकें।

पत्रिका के सफल विमोचन एवं प्रकाशन हेतु वर्तमान संरक्षक एवं प्रधान महालेखाकार महोदया सुश्री मणि के., भूतपूर्व संरक्षक एवं तत्कालीन महालेखाकार महोदय श्री रामावतार शर्मा, वर्तमान वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री विनोद परिहार, तत्कालीन उप महालेखाकार (प्रशासन) सुश्री प्रतिभा सिंह तथा उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III) श्री राम भजन कुम्हार के निर्देशन के लिए आभारी हूँ, जिनका समय-समय पर निर्देशन एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है, साथ ही साथ, मैं आभारी हूँ श्री अक्षय मोहन खंडारे का, तत्कालीन वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), जिनका हमारे कार्यालय से ट्रांसफर होने के बाद भी, उनका मार्गदर्शन हमें मिलता रहा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों, सभी साथियों का धन्यवाद तथा पत्रिका के सफल विमोचन एवं प्रकाशन के लिए राजभाषा (लेखापरीक्षा-II) में पदस्थ सभी साथियों को भी बधाई देता हूँ, विशेषकर श्री सारांश गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी का, जिनके सार्थक प्रयासों एवं सहयोग से हम पत्रिका का द्‌वितीय अंक आप सभी के बीच में ला पाए हैं। माँ 'हिंदी' और हमारी पत्रिका के प्रति आपका प्रेम और स्नेह ही हमारी ताकत है। आशा है आपका सहयोग हमेशा मिलता रहेगा।

(वजीर सिंह)
सहायक निदेशक

मरुवाणी के प्रथम अंक का विमोचन

आभार

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2024-25 दिनांक : 15-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
राजस्थान, जयपुर

विषय: पत्रिका की पावतीबाबत् -

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गुह पत्रिका "मरवाणी" के प्रथम संस्करण की ई-मृति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सजा तथा आवरण पुष्ठ बहुत ही आकर्षक और सुंदर है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं मनोरंजक व ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर, श्री आशीष अग्रवाल द्वारा रचित लेख 'टुकडे', श्री राजेश रायसिंहानी द्वारा रचित लेख 'संघर्ष', श्री वजीर सिंह द्वारा रचित लेख 'प्रेम कहानी" एवं श्री राहुल भाटला द्वारा रचित कविता 'खवाबों की दरमियां खवाब कई' अत्यत प्रशंसनीय हैं । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं प्रचार-प्रसार में जो हर संभव प्रयास किया गया है वह सराहनीय हैं ।

पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को सहत्र बधाईयों एवं शुभकामनाऐं ।

भवदीया,
Digitally signed by
A M Bhadrambika
Date: 15-07-2025
11:47:23
सहायक निदेशक (रा.मा.)/हिंदी कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र. हि.क./का-7/ जावक - 37 दिनांक 08.07.2025

प्रति,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर
भगवाता दास रोड, सी-स्कीम, अशोक नगर,
जयपुर ,राजस्थान-302005

विषय : हिंदी पत्रिका "मरवाणी" के प्रथम अंक (2025-26) की ई-मृति पावती बाबत ।
संदर्भ : क्र.रा.मा.(ले.प.-II)/एच-11025/फा-31(मरवाणी-प्रथम अंक)/2025-26/दिनांक 03.07.2025 ।

महोदय/महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "मरवाणी" के प्रथम अंक की ई-मति प्रा॰ हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाऐं प्रशंसनीय है विशेष तोर पर डिजिटल अर्टिस्ट, संयर्ष, महादेव-नाथों के नाथ, टुकडे, किस्मत की किताब, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक-रा.ज./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1046346/2025 दिनांक: 11-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
राजस्थान-302005

विषय:- हिंदी पत्रिका "मरवाणी" के प्रथम अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "मरवाणी" का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्र. सं.	रचनाकार	रचनाऐं
1	सुश्री शालिनी अग्रवाल	राजपूताना से राजस्थान: एक संयर्षमय यात्रा
2	श्री राहुल भटाला	अनुछ्का
3	सुश्री निधि अग्रवाल	मेरे बाऊजी

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाऐं।

भवदीया,
EKTA
सहायक निदेशक(राजभाषा)

महालेखाकार (ले व क), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम -695001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 17-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), राजस्थान,
जयपुर-302005

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी पत्रिका 'मरवाणी' के प्रथम अंक की प्राति के संबंध मे
संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 03.07.2025.

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'मरवाणी' के प्रथम अंक की ई-मृति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर सुश्री शालिनी अग्रवाल का लेख "राजपूताना से राजस्थान:एक संघर्षमय यात्रा", सुश्री सनंगि का लेख "डिजिटल अरिंस्ट", सुश्री निधि अग्रवाल की कविता "मेरे बाऊजी", सुश्री मोना वर्मा की कहानी "किस्मत की किताब" एवं श्री लोकेंद सिंह की कहानी "दोस्ती का सफर" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका "**मरवाणी**" की उतरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं ।

भवदीया,
Digitally signed by
Rohini K R
Date: 17-07-2025
09:35:01
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

सत्यमेव जयते

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिका/2025-26//51 दिनांक/Dated:7.07.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा-1)
राजस्थान, जयपुर

विषय - हिंदी पत्रिका 'मरवाणी' के प्रथम अंक (2025-26) की ई-प्रति का अवोकन- संबंधित।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'मरवाणी' की ई-प्रति प्राप्त हुई हैं। प्रत्दर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा और आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक हैं। इसके अलावा पत्रिका में सम्मिलित तस्वीरें इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाती हैं। राजभत्वाा की रानी, डिजिटल अरेस्ट, राजपताना हाड़ी रानी, किस्मत की किताब आदि रचनाएं उत्तम श्रेणी की हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादन मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केंन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

संदर्भ : सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/1042448/2025 दिनांक: 09-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

विषय: त्रैमासिक पत्रिका "मरवाणी" के प्रथम अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी ई- पत्रिका "मरवाणी" के प्रथम अंक प्राप्त हुआ। सहेक धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यावलीन गतिबिधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्फक हैं। इस पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रम.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री वजीर सिंह	प्रेम कहानी
2.	श्री सारेश गुप्ता	रणभूमि की रानी
3.	सुश्री कुसुमलता	कृषि प्रेमपाट
4.	सुश्री सुचिंमा	डिजिटल अरेंस्ट
5.	सुश्री शालिनी	राजपूताना : एक संवर्ध्मय यात्रा

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
SUMITH S
सहायक निदेशक/राजभाषा

022-2654 6803 022-2654 0352 pdacentralmumbai@cag.gov.in www.cag.gov.in

ले.प्र./सेवह/प.पा./2024-25/ I/1052540/2025

महालेखाकार (ले व ह). केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम-695001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्षा/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 17-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), राजस्थान,
जयपुर-302005

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी पत्रिका **"मरुवाणी"** के प्रथम अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

संदर्भः आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 03.07.2025.

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'मरुवाणी'** के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर सुश्री शालिनी अग्रवाल का लेख "राजपूताना से राजस्थान: एक संवर्धन यात्रा", सुश्री प्रतिमा का लेख "डिजिटल अरेस्ट", सुश्री निधि अग्रवाल की कविता "मेरे बाउजी", सुश्री शर्मिला का "...की किताब" एवं श्री लोकेन्द्र सिंह की कहानी "दोस्ती का सफर" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका **"मरुवाणी"** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 17-07-2025
09:35:01

सहायक निदेशक (राजभाषा)

महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/99 दिनांक :11.07.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
राजस्थान, जयपुर

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"मरुवाणी"** के प्रथम अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"मरुवाणी"** के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से- सुश्री शालिनी अग्रवाल का लेख **"राजपूताना से राजस्थान:एक संवर्धनीय यात्रा"**, सुश्री प्रतिमा का सुश्री "डिजिटल अरेस्ट", श्री ... की **"संघर्ष"**, श्री ओमप्रकाश गुप्ता की कविता **"लोगों ने मुझे छोड़ दिया है"**, सुश्री ... की कविता- **"अंतर्मन के साथ"** प्रशंसनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 15-07-2025
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, रांची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

पत्रांक:- रा.भा.अनु./ले.प./पत्रिका-पावती/2025-26/81 दिनांक:- 08-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर
भगवान दास रोड, सी-स्कीम, अशोक नगर,
जयपुर, राजस्थान -302005

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका **"मरुवाणी"** के प्रथम अंक के पावती के प्रेषण के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "मरुवाणी" के प्रथम अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं नमूना बहुत ही सुंदर है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है. विशेषकर श्री सारांश गुप्ता की "रणथम्भौर की किरती", श्री राहुल भदाला की "अनुभव" तथा सुश्री निधि अग्रवाल की "मेरे बाउजी" इत्यादि।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 08-07-2025
12:31:43

सहायक निदेशक (रा.भा.)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413880 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

---

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा I/1042448/2025 दिनांक 09-07-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

विषय: कार्यालयीन पत्रिका "मरुवाणी" के प्रथम अंक की समीक्षा संबंधी।

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी ई- पत्रिका "मरुवाणी" के प्रथम अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक हैं। ... में समाविष्ट रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय व सराहनीय हैं।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री वजीर सिंह	प्रेम कहानी
2.	श्री सारांश गुप्ता	रणथम्भौर की रानी
3.	सुश्री कुंपूर्णता	प्रेमपद
4.	सुश्री सुमित्रा	डिजीटल ओरेस्ट
5.	सुश्री शालिनी	राजपूताना : एक संवर्धनीय यात्रा

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

सत्यमेव जयते

सीएजी ऑडिट दौड़ 2025

नियंवक एवं पारतेखानरीक्षक
भारत

उत्कृष्टता का सम्मान

पारदर्शिता हेतु दौड़

जवाबदेही के लिए एकजुट

सत्यनिष्ठा • पारदर्शिता • जवाबदेही

15 अगस्त
2025
स्वतंत्रता दिवस

एकता • सत्यनिष्ठा • सेवा

गणतंत्र दिवस – 2026

सुश्री गीताली तारे,
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का
कार्यालय में आगमन एवं वृक्षारोपण

इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया तथा हरित एवं स्वच्छ वातावरण के संकल्प को पुनः दोहराया।

राजस्थान
के राज्य प्रतीक
राज्य पशु
(वन्यजीव)
चिंकारा
(Chinkara)
राज्य पशु
(पशुधन/धरोहर पशु)
ऊँट (कैमल)
(Dromedary Camel)
राज्य पक्षी
गोडावण
(Great Indian Bustard)
राज्य वृक्ष
खेजड़ी
(Prosopis cineraria)
राज्य पुष्प
रोहिड़ा
(Tecomella undulata)
राज्य पौधा
कैक्टस
(Cactus)
राज्य नृत्य
घूम्मर
(Ghoomar)
राज्य खेल
बास्केटबॉल
(Basketball)
पधारो म्हारें देश
राजस्थान की समृद्ध संस्कृति, शौर्य और गौरव के प्रतीक

सारांश गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

"स्वर कोकिला"

"नाम गुम जाएगा, चेहरा ये बदल जाएगा,
मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे"

भारत के संगीत इतिहास में यदि किसी स्वर ने करोड़ों दिलों को छुआ, पीढ़ियों को जोड़ा और भावनाओं को आवाज़ दी, तो वह स्वर था लता मंगेशकर का। उन्हें प्रेम से **स्वर कोकिला**, **भारत की बुलबुल** और **मेलोडी क्वीन** कहा जाता है। उनकी आवाज़ में ऐसी मिठास, पवित्रता और भावनात्मक शक्ति थी कि हर गीत अमर बन गया। लगभग आठ दशकों तक उन्होंने भारतीय संगीत जगत पर अपना अद्भुत प्रभाव बनाए रखा।

बहुत कम लोग जानते हैं कि जन्म के समय उनका नाम **हेमा** रखा गया था। बाद में पंडित दीनानाथ मंगेशकर ने अपने नाटक के एक पात्र "लतिका" से प्रेरित होकर उनका नाम **लता** रख दिया।

पहली कमाई बहुत छोटी थी, सपना बहुत बड़ा;

जब पिता का निधन हुआ, तब परिवार की जिम्मेदारी उन पर आ गई। छोटी उम्र में अभिनय और गायन से उन्होंने कमाई शुरू की। पहली कमाई मामूली थी, लेकिन उसी से घर चलाना शुरू हुआ। वही संघर्ष आगे चलकर महान सफलता बना।

शुरुआत में आवाज़ ठुकरा दी गई थी;

आज जिनकी आवाज़ को दुनिया पूजती है, उन्हें करियर की शुरुआत में यह कहकर अस्वीकार किया गया कि उनकी आवाज़ "बहुत पतली" है। उस समय भारी आवाज़ों का दौर था।

लेकिन समय ने साबित किया कि वही पतली आवाज़ भारतीय संगीत की सबसे मधुर पहचान बनेगी।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

लता मंगेशकर का जन्म **28 सितंबर 1929** को इंदौर में हुआ। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक और रंगमंच कलाकार थे। माता का नाम शेवंती मंगेशकर था। घर का वातावरण संगीत से भरा हुआ था, इसलिए लता जी को बचपन से ही संगीत की शिक्षा मिलने लगी।

उनका बचपन संघर्षों से भरा रहा। जब वे मात्र 13 वर्ष की थीं, तब उनके पिता का निधन हो गया। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई। छोटी उम्र में ही उन्होंने अभिनय और गायन दोनों शुरू किए ताकि परिवार का पालन-पोषण हो सके।

संगीत यात्रा की शुरुआत

लता जी ने प्रारंभ में मराठी फिल्मों में छोटे रोल किए और गीत गाए। बाद में वे मुंबई पहुँचीं, जहाँ हिंदी फिल्म उद्योग में संघर्ष आरंभ हुआ। उस समय भारी और गहरी आवाज़ का चलन था, इसलिए उनकी पतली आवाज़ को पहले अस्वीकार किया गया।

लेकिन उनकी प्रतिभा को रोकना संभव नहीं था। वर्ष 1949 में फिल्म महल का गीत **"आएगा आनेवाला"** अत्यंत लोकप्रिय हुआ और यहीं से लता जी का सितारा चमक उठा। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

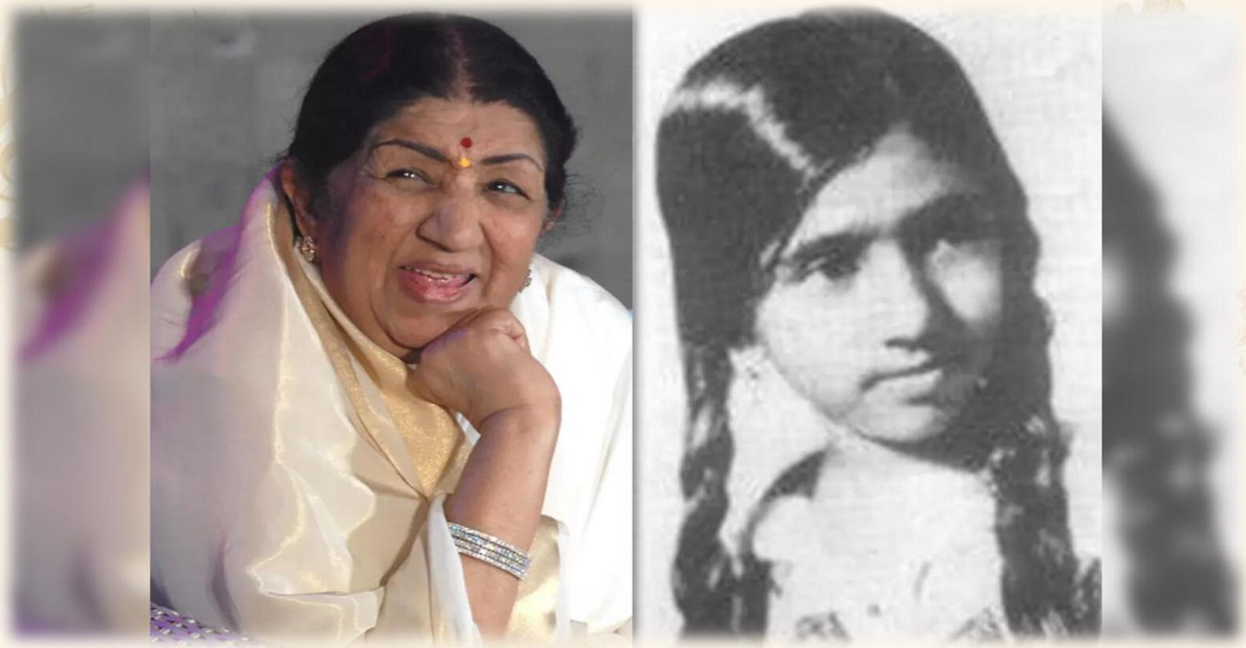

स्वर्णिम करियर - 1950 से 1980 का काल लता मंगेशकर के स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है। उन्होंने लगभग हर बड़े संगीतकार और अभिनेता के लिए गाया। उनकी आवाज़ ने अनेक अभिनेत्रियों को पहचान दिलाई।

उनके कुछ अमर गीत:

- लग जा गले
- अजीव दास्ताँ
- प्यार किया तो डरना क्या
- तेरे बिना जिंदगी से
- ऐ मेरे वतन के लोगों
- कभी ख़ुशी कभी गम

उनकी आवाज़ में प्रेम, विरह, भक्ति, देशभक्ति और करुणा–हर भावना सहज रूप से झलकती थी।

देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम

1963 में "ए मेरे वतन के लोगों" गीत ने पूरे देश को भावुक कर दिया। जब उन्होंने यह गीत पंडित जवाहर लाल नेहरू के सामने गाया, तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। यह गीत आज भी देशभक्ति का अमर प्रतीक माना जाता है।

पुरस्कार और सम्मान

लता मंगेशकर को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए:

- भारत रत्न (2001)
- पदम भूषण & पद्म विभूषण
- दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
- कई फिल्मफेयर अवार्ड्स
- राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

उनका सम्मान केवल पुरस्कारों से नहीं, बल्कि जनता के प्रेम से मापा जाता है।

व्यक्तित्व और जीवन शैली

प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचने के बाद भी उन्होंने सादगी नहीं छोड़ी। उन्हें क्रिकेट देखने, फोटोग्राफी और संगीत साधना का विशेष शौक था। वे अपने परिवार से बहुत जुड़ी हुई थी, विशेषकर आशा भोसले सहित अपने भाई-बहनों से।

अंतिम समय और निधन:

लता मंगेशकर का निधन **6 फरवरी 2022** को मुंबई में हुआ। उनके निधन से पूरा भारत शोक में डूब गया। सरकार ने राष्ट्रीय शोक घोषित किया। उनका जाना भारतीय संगीत जगत के लिए एक युग का अंत था। लता जी केवल एक गायिका नहीं थीं, वे भारतीय संस्कृति की आवाज़ थीं। उनकी आवाज़ आज भी रेडियो, टीवी, मंचों और लोगों के दिलों में जीवित है। आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें संगीत की सबसे ऊँची मिसाल के रूप में याद करेंगी।

लता मंगेशकर ने सिद्ध किया कि प्रतिभा, मेहनत और समर्पण से कोई भी व्यक्ति अमर हो सकता है। उन्होंने संगीत को पूजा माना और उसी साधना से इतिहास रच दिया।

वह शरीर से भले चली गईं, पर उनका स्वर सदैव अमर रहेगा।

राजेश रायसिंघानी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संघर्ष (अंतिम भाग)

मीटिंग में मंझले दामाद के पिता ने शुरू में तो अपने पुत्र के नपुंसक होने की बात को मानने से इंकार किया। जब मंझले दामाद की जांच करवाने की बात आई तो उसके पिता द्वारा इस बात को कुछ हद तक स्वीकार किया गया परन्तु मीटिंग का कोई हल न निकल पाया। उधर रात में मंझला दामाद अस्पताल में रुका और उसने अपनी पत्नी को फिर धमकाना शुरू किया कि तुमने अपने घर वालों को मेरे बारे में बता दिया है, अब घर आओगी तो तुमसे निपट लेंगे। आखिरकार अपने पति की धमकियों और बिना किसी बीमारी के अस्पताल में चल रहे इलाज से तंग आकर कमजोर हो चुकी मंझली पुत्री अगले ही दिन अर्थात 25 दिसम्बर, 1989 को क्रिसमस के दिन चल बसी। विष्णु की पत्नी और घरवालों के आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे क्योंकि जिस पुत्री का विवाह करके वह लोग आये थे उसका अंतिम संस्कार कर हिमाचल वापस जा रहे थे।

आखिर वक्त को कौन रोक सकता है, वह बीतता गया। वर्ष 1990 के अंत में एक खुशखबरी आई अर्थात बच्चों में सबसे छोटे पुत्र की सरकारी नौकरी लग गयी। छोटी बेटी के लिए भी वर की तलाश शुरू हो गयी थी क्योंकि वह बैंक में कार्यरत थी इसलिए उसके लिए बैंक में ही कार्यरत दिल्ली का लड़का मिल गया। नवम्बर 1991 में उसका विवाह कर दिया गया। पुत्र की भी सरकारी नौकरी लग चुकी थी इसलिए उसका भी विवाह 1995 में कर दिया गया।

संकट अभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए थे क्योंकि छोटी बेटी या दामाद के कोई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या नहीं होने के बावजूद उनके संतान नहीं हो पा रही थी। छोटी बेटी को सात बार गर्भपात करवाना पड़ा। इस कारण सम्पूर्ण परिवार (माँ, बाप, भाई, भाभी एवं बहन सभी) चिंतित रहने लगे। बड़ी बेटी अपनी छोटी बहन के औलाद नहीं होने, अपने बेटे की पढ़ाई की चिंता के कारण बिना किसी बीमारी के वर्ष 2003 में चल बसी। विष्णु की पत्नी जो कि अपनी बड़ी बेटी के वर्ष 1989 में हुए देहांत के गम से उभर ही नहीं पा रही थी, को इस घटना ने और तोड़ दिया। आखिर इन दुखों को सहते हुए विष्णु की पत्नी की एक आँख की रोशनी भी चली गयी और कुछ समय पश्चात आखिर वह अपने संघर्ष भरे जीवन को अलविदा कह गयी।

संघर्ष शीर्षक का यहाँ भावार्थ है एक ऐसी स्त्री से है, जिसका संघर्ष उसके -

(i) जन्म से ही शुरू हो गया था जब उसकी लाज और जान बचाने के लिए उसे बोरों में भरकर पाकिस्तान से भारत लाया गया।

(ii) शादी के पश्चात् पति के बीमार होने पर भी चार-चार बच्चों को उसने पढ़ाया-लिखाया और काबिल बनाया।
(iii) दो बच्चियों का असामयिक निधन होने का असहनीय दर्द सहा।

हमें भी इस स्त्री के संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए कभी मुश्किलों से नहीं घबराना चाहिए और जीवन को हमेशा बहादुरी से जीना चाहिए।

***

ख़्वाब

हवा की तरह ज़ुल्फ़ें उसकी यूँ लहराती हैं,
बाँध काला धागा कलाई पर वो इतराती हैं।

खुशबुओं से यूँ महक रहा है सारा चमन,
थाम के साँसें जब वो कली मुस्कुराती हैं।

पहनकर पायल जब वो पास से गुज़रती हैं,
अजीब-सी ख़ुशबू का दीवाना वो कर देती हैं।

ख़ास नहीं हैं बातें फ़िर भी कुछ-कुछ उसकी,
हसीं यादों से फिर इस दिल को भर जाती हैं।

फिर आती हैं, मुस्कुराती हैं और शरमाती हैं,
कुछ इसी तरह वो मुझसे इश्क़ फ़रमाती हैं!

— राहुल भदाला

विजय सिंह रावण
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विवेक माथुर जी: एक गुरु और मार्गदर्शक

जैसे कि श्री विवेक माथुर जी 31 मई 2026 को सेवानिवृत्त हो रहे है इसे महसूस करते ही मेरे लिए कृतज्ञता और भावनाओं को शब्दों में बयां करना मुश्किल हो रहा है। मेरे लिए और मेरे जैसे कई लोगों के लिए, वह सिर्फ एक सीनियर ऑडिट ऑफिसर ही नहीं रहे; बल्कि वह हमारे प्रोफेशनल जीवन के कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण दौर में एक गुरु, मार्गदर्शक और शांत शक्ति का स्रोत रहे हैं। उनके रिटायरमेंट से हमारा ऑफिस न केवल एक बुद्धिजीवी एवं अनुभवी अधिकारी की कमी महसूस करेगा बल्कि एक नेक, दयालु एवं मृदुभाषी इंसान की कमी भी महसूस करेगा जिन्होंने ऑडिट के काम के साथ-साथ लोगों को भी आकार दिया।

इसी क्रम में मुझे साल 2010 का एक वाकया आज भी याद है जब मुझे राजस्थान फाइनेंशियल कॉर्पोरेशन का एक थिमेटिक ऑडिट करने का काम सौंपा गया था। यह ज़िम्मेदारी अकेले मुझे ही सौंपी गई थी। उस असाइनमेंट के समय मैं अकेला होने के कारण भ्रमित और परेशान था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ऑडिट कहाँ से शुरू करना है और कहाँ खत्म करना है। अनिश्चितता और आत्म-संदेह की यह भावना हर युवा अधिकारी अपने शुरुआती करियर में महसूस करता है और मैं भी कोई अपवाद नहीं था।

उसी अनिश्चितता के समय जब मैं माथुर सर के पास गया तब वो रिपोर्ट सेक्शन में इंचार्ज थे। बिना किसी झिझक के और मुझे बिना कोई हीन भावना महसूस कराए, उन्होंने पूर्ण धैर्य से मेरी समस्या को सुना। उन्होंने मुझे बहुत ही सरल और आश्वस्त तरीके से समझाया कि इसमें कौन सा डाटा ज़रूरी है, क्या करना है, क्या नहीं करना है और कैसे सारे डाटाबेस को व्यवस्थित तरीके से पूरा करना है इत्यादि। उनका मार्गदर्शन सिर्फ एक तकनीकी ज्ञान तक ही सीमित नहीं था बल्कि यह आत्मविश्वास बढ़ाने वाला भी था। उनके मार्गदर्शन एवं सहयोगी रवैये से, जो कार्य मुझे शुरू में असंभव लग रहा था वो अब धीरे-धीरे मैनेजेबल सा लग रहा था। आखिरकार, न केवल एक, बल्कि छह यूनिट कार्यालयों का ऑडिट मैंने अकेले ने स्वतंत्र रूप से एवं पूर्ण आत्मविश्वास से पूरा किया। आज भी, जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि उस दिन ये असाइनमेंट उनके मार्गदर्शन के बिना मैं पूरा नहीं कर पाता। उस समय उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन एवं सहयोग की छाप आज भी मुझे याद है एवं उसके लिए आज भी मैं उनका दिल से आभारी हूँ, जिसने मेरे जीवन की प्रोफेशनल यात्रा पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

माथुर सर हमेशा ही ऐसे रहे हैं– बहुत मिलनसार, धैर्यवान और दूसरों का ख्याल रखने में हमेशा तहेदिल से आगे आकर पहल करने वाले। कोई भी उनके पास छोटे से लेकर बड़ी समस्या के साथ जा सकता था और वह हमेशा उतनी ही विनम्रता से उसका समाधान या मार्गदर्शन करते थे। उन्होंने कभी

अपना ज्ञान थोपा नहीं; उन्होंने इसे साझा किया। उन्होंने कभी पहचान नहीं मांगी; उन्हें दूसरों को आगे बढ़ते देखकर संतुष्टि मिलती थी। नियमों, प्रक्रियाओं, ऑडिट प्रथाओं और ऑफिस के इतिहास के बारे में उनकी व्यापक समझ असाधारण है, लेकिन जो चीज़ उन्हें सच में अलग बनाती है, वह है उनकी दयालुता और मृदुभाषी व्यवहार।

ऑफिसियल काम से परे, माथुर सर के साथ सबसे प्यारी यादें हमारे रोजाना के चायकाल की हैं। सुबह 12 बजे और दोपहर में 4 बजे, जब हम सब एक साथ इकट्ठा होते हैं जिसमें माथुर सर हमेशा हमारे साथ होते हैं, तब वो पल और खास बन जाते हैं जब वह अपनी लंबी सर्विस के अनुभव शेयर करते थे, ऑफिस का इतिहास बताते थे, और ये भी बताते थे कि समय के साथ सिस्टम को कैसे बदला जा सकता है। उन्हें सुनकर ऐसा लगता था जैसे हम किसी संस्थागत ज्ञान की चलती-फिरती क्लास में बैठे हों। सच में, वह हमारे ऑफिस का एक एनसाइक्लोपीडिया हैं, जो अपने अंदर इसकी यादें, मूल्य और परंपराएं समेटे हुए हैं। इसके साथ साथ हम सभी टी-ग्रुप में एक दूसरे को छेड़ते भी रहते थे और मजे लेते रहते थे। इस तरह हमारा चायकाल एक फॉर्मल एवं इनफॉर्मल बातचीत का एक महामंच था जहाँ हम चायकाल का पूरा लुत्फ़ उठाते थे। महामंच इसलिए कि हम सब एक साथ जाते थे, एक निश्चित समय पर जाते थे और ये बात हमारे हायर अप्स को भी मालूम रहती थी।

श्री विवेक माथुर सर (बाएं से पांचवे) के साथ चायकाल का आनंद लेते हुए

माथुर सर की समय की पाबंदी, ईमानदारी और अनुशासन ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। वह निर्देशों से नहीं, बल्कि अपने उदाहरण से नेतृत्व करते हैं। अपनी सीनियरिटी और बहुत ज़्यादा ज्ञान के बावजूद, वह हमेशा सरल, मिलनसार और दोस्ताना रहे हैं। उनकी मौजूदगी से सुकून मिलता है, उनके शब्दों से क्लैरिटी मिलती है और उनका व्यवहार सम्मान दिलाता है। उन्होंने सभी को, सीनियर्स और जूनियर्स दोनों को, उसी ईमानदारी और गरिमा के साथ गाइड किया है।

अब जब वह अपनी अच्छी-खासी रिटायरमेंट ले रहे हैं, तो मेरे दिल में एक गहरे नुकसान का एहसास है। उनकी शांत मौजूदगी और भरोसेमंद मार्गदर्शन के बिना ऑफिस अलग लगेगा। फिर भी, मुझे पूरा विश्वास है कि उनके मूल्य, शिक्षाएं और प्रभाव हम सभी के माध्यम से जीवित रहेंगे जिन्हें उनके साथ काम करने का सौभाग्य मिला। मैं माथुर सर को दिल की गहराइयों से धन्यवाद देता हूं - न केवल उनके प्रोफेशनल मार्गदर्शन के लिए, बल्कि उस इंसानियत, विनम्रता और गर्मजोशी के लिए जो वह हमारे काम की जगह पर लाए। मैं उनके लिए अच्छे स्वास्थ्य, शांति और खुशी से भरी रिटायरमेंट की कामना करता हूं। भले ही वह सर्विस से रिटायर हो रहे हों, लेकिन वह हमेशा मेरे मेंटर और मेरी ज़िंदगी में एक स्थायी प्रेरणा बने रहेंगे।

***

वजीर सिंह
सहायक निदेशक

फौजी मेहर सिंह

हरियाणा के सोनीपत जिले की खरखौदा तहसील के गाँव बरोणा में श्री नंदराम दहिया और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भरतो देवी के घर 15 फरवरी 1918 को उनके सबसे बड़े बेटे का जन्म हुआ जिसका नाम रखा गया मेहर सिंह दहिया।

इसी छोटे बच्चे को आने वाले समय में हरियाणा और उसके आस-पास के क्षेत्र में जाट परिवार में पैदा होने के कारण और एक मशहूर लोक-कवि एवं रागणी (रागनी) गायक होने के कारण जाट मेहर सिंह और फ़ौज में भर्ती होने के कारण फौजी मेहर सिंह के नाम से जाना गया। आम बोलचाल की भाषा पर उनकी पकड़ उन्हें आज भी प्रचलित करती है और आज उनके देहांत के लगभग 80 वर्षों बाद भी उन्हें उसी अदब और रसूख से याद किया जाता है जैसे पहले किया जाता था।

मेहर सिंह एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति की भावना और जातिवाद का विरोध ना केवल अपनी कलम से किया बल्कि अपने व्यवहार से भी किया। जातिवाद की बेड़ियों को तोड़ने का सबसे बेहतर तरीका होता है अपने संदेश को आसान भाषा में प्रचारित करना और वही मेहर सिंह ने किया; उन्हें गाँव में जिसका भी हुक्का मिल जाता था, वे बिना किसी जात-पात के वहीं हुक्का पीने बैठ जाते थे और समाज में बराबरी का संदेश अपने आप चला जाता था। वो कहते भी थे कि:

"यारी हो सै साझे की, हो कोई नीर भरणियाँ,
एक कृष्ण था यार सुदामा का, टोटा दूर करणियाँ,
राणा को सब कुछ दे दिया, भामाशाह था बाणियाँ।"

फौजी मेहर सिंह पर गहराई से बहुत कुछ पढ़ने-लिखने वाले श्री रामफल चहल जी, जिनका संगीत और गायन की तरफ झुकाव होने के कारण, जब एच.ए.यू. यूनिवर्सिटी हिसार से पास आउट होकर आकाशवाणी से जुड़ना हुआ तो उनका रुझान इस ओर अधिक बढ़ गया। हरियाणवी लोक गायन पर श्री रामफल चहल ने श्री रणधीर सिंह मथाना के साथ मिलकर काफी शोध किया, उनके अनुभवों को भी मैंने इस लेख में सम्मिलित किया है।

मेहर सिंह जी पाँच भाई-बहन थे और वो उन पाँचों में सबसे बड़े थे; उनके तीन भाईयों के नाम मांगेराम दहिया जिनका अल्पायु में ही निधन हो गया था, उनसे छोटे थे भूप सिंह दहिया, और सबसे छोटे भाई थे कंवर सिंह दहिया और उनकी बहन का नाम सहजो था।

श्री नंदराम दहिया जी की पारिवारिक माली हालत ज्यादा अच्छी नहीं थी जिसके चलते उनके पुत्र मेहर सिंह पढने में होशियार होने के बावजूद तीसरी जमात से आगे नहीं पढ़ सके। वे पढ़ाई छोड़कर अपने परिवार की मदद करने के लिए पशु चराने लगे और कृषि कार्यों में हाथ बंटाने लगे।

गाँव-गुहांड (गाँव और गाँव की सीमा के चारों तरफ के लगते गाँव) में जाट परिवारों में गाने-बजाने की पाबंदी थी तो मेहर सिंह के घर में भी इस पर पाबंदी थी; क्योंकि मेहर सिंह जी के पिता का मानना था कि रागणी गाने का काम जाटों का नहीं बल्कि एक जाति विशेष यानि मिरासियों (डूमों) का है, एक ऐसा समुदाय विशेष जो अपना जीवन-यापन संगीत के माध्यम से करते थे। पर, मेहर सिंह का मन तो रागणी सुनने और गाने में ही लगता था यानि रागनी गायन उनकी हॉब्बी (hobby) बन गया था इसलिए घर में रागनी पर पाबंदी होने के बावजूद भी वो समय और जगह को बिना देखे ही, कभी भी, कहीं भी, रागनी गाने बैठ जाते थे और इतने मशगूल हो जाते कि सब कुछ भूल जाते थे।

मान्डोठी गाँव में मेहर सिंह ने सूर्यकवि पंडित लख्मी चंद जी को अपना गुरु बनने का निवेदन किया था तो पंडित जी ने जवाब दिया, "भाई छोरे, कोई रागणी बना के सुनावे तो विचार करूँ।" इतना सुनते ही मेहर सिंह जी ने किस्सा शाही लकड़हारा को खड़े-खड़े ही तैयार कर दिया; उनका हुनर देखते हुए सूर्यकवि पंडित लख्मी चंद जी ने उनको आशीर्वाद दिया। परन्तु मेहर सिंह ने अपने पिता को वचन दिया था कि वे किसी के बेड़े से नहीं जुड़ेंगे इसीलिए उन्होंने सूर्यकवि पंडित लख्मी चंद जी को अपना गुरु तो माना परन्तु कभी उनके बेड़े में शामिल नहीं हुए। मेहर सिंह ने लगभग 12-13 किस्सों जैसे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शाही लकड़हारा, अंजना पवन, चाप सिंह, हकीकत राय, सरवर नीर, अजीत राजबाला, कालीचरण, पद्मावत इत्यादि की रचना की और बहुत सारी रागनियाँ गाई। परमात्मा में आस्था रखने का सन्देश देते हुए अजीत-राजबाला किस्से में उन्होंने लिखा कि:

काली पीली रात अन्धेरी घटा जोर की छाई,
मतना बोलै राजबाला कदे मारे जां बिन आई। टेक
अकलमन्द कै लाग बताई, समझणियां की मर सै,
न्यूं तो मैं भी जाण गया कोए, होणी का चक्कर सै,
समझदार नैं दुनियां के म्हां, बदनामी का डर सैं,
कहे मेहर सिंह मतना डरियो, सबका साथी 'हर' सै,
इस ईश्वर की लीला न्यारी, दे बना पहाड़ नैं राई।

मेहर सिंह की रागणी गायन का एक किस्सा है कि वे एक बार हल जोतने के लिए किढौली गांव की सीमा से लगते खेतों में गए। वे खेत में अपना काम शुरू करते उससे पहले ही किढौली वासियों ने उनसे गाने की फरमाइश कर डाली। बस मेहर सिंह ने साफा लिया बांध, कुर्ता लिया झाड़ और कर दिया अपना फेवरेट काम शुरू - रागणी गायन।

तो सुबह-सुबह से ही रागनियों का दौर शुरू हो गया और जब दोपहर को उनका छोटा भाई भूप सिंह दोपहर का भोजन लेकर खेत में पहुँचा तो उसने देखा कि बल्ल्ध (बैल) तो खेत में जुत्ते (कन्धों पर हल लिए) खड़े हैं और मेहर सिंह लगे हुए हैं रागनी गानें में और वे किढौलीवासी भी खाळ (नाली) खोदने की बजाय रागनी सुनने में मग्न हैं। घटना का पता चलने पर मेहर सिंह के पिता नंदराम काफी नाराज हुए, वो तो पहले से ही इसके खिलाफ थे कि उनका बेटा पुश्तैनी काम यानि जाट-जमीदारा छोड़कर गाना-बजाना करे।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार उनके गाँव के जयदेव की बारात झज्जर जिले के डीघल गाँव में जानी थी और डीघल गाँव के निवासियों ने उस शादी का रिश्ता पक्का करते वक्त ये शर्त रखी थी कि बारात में रागनी गायक मेहर सिंह को जरुर लाना है तब फेरे होंगे। इसी शर्त के कारण उनके पिता नंदराम ने सिर्फ एक बार ही उन्हें रागनी गाने की अनुमति थी।

अंततः मेहर सिंह के रागनी गायन से तंग आकर उनके पिता ने 1936-37 में उनकी शादी समसपुर के श्री लखीराम डागर की 16-17 वर्षीय पुत्री प्रेमकौर से करा दी। मेहर सिंह की शादी में उनके एक साथी ने उन्हें वादा किया था कि वो मेहर सिंह की शादी में बड़ी मोटर गाड़ी लेकर आयेगा, उस वक्त शादी में गाड़ी का आना बहुत बड़ी बात थी परन्तु वो शादी में नहीं आ पाया और मेहर सिंह के कानों में ये बात पड़ी तो उन्होंने तुरंत दो लाइनें कही कि:

“बीर, व्यापारी, पुलिस, ड्राइवर, नहीं किसे के प्यारे,
भीतरले का भेद नहीं दें, मीठे बोलै सारे।”

मेहर सिंह और उनकी धर्मपत्नी प्रेमकौर जी तकरीबन 9 वर्षों (1936-1945) के अपने वैवाहिक जीवन के दौरान सिर्फ दो बार ही एक-दूसरे से मिले थे। उनकी धर्मपत्नी प्रेमकौर ने मेहर सिंह के इस दुनियाँ से जाने के बाद आजीवन सती की तरह जीवन व्यतीत किया। आज आळे चाहे लोग हों चाहे लुगाई, अगर इसा हो ज्या तै सांझ तांही फैसला करलें सैं; लेकिन वो अपणे धर्म पै बणी रही। (आज-कल के मर्दों और औरतों के लिए इस तरह का सतीत्व बहुत मुश्किल है।) मेहर सिंह की सामाजिक जीवन पर आधारित रागनियाँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे:

तुरंत का लिप्या दिखै सै, आगे का ख्याल करया कोन्या,
तेरे प्रेम मै मरी पड़ी सु, इस में खोट मेरा कोन्या,
घरा बैठकै के खागे ईसा, कुआं जोहड़ भरया कोन्या,
कह जाट मेहर सिंह इन बीराँ नै, मर्दा बिना सरया कोन्या !!

परन्तु, मेहर सिंह की शादी के बावजूद, उनका रागनी लिखने व गाने का सिलसिला पहले की तरह जारी रहा। हरियाणा के अलावा दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में मेहर सिंह के लिखे किस्से व रागनियों को बड़े चाव से गाया व सुनाया जाता है।

पिता के आदेशानुसार, मेहर सिंह को अपनी इच्छा के विरुद्ध 1937 में 2nd जाट रेजिमेंट, बरेली में फ़ौज में भर्ती होना पड़ा और कवि जाट मेहर सिंह बन गए फौजी मेहर सिंह। फ़ौज में उन्हें उनके साथी कृष्ण चन्द्र सिसाना वाले मिले जो अंत समय तक उनके साथी रहे। उनके फौजी जीवन का उनकी लेखनी पर इतना प्रभाव था कि उन्होंने फौजी जिंदगी को आधार बनाकर अनेक रचनाएं रचीं। उन्होंने न केवल फौजी जिंदगी पर ही लिखा बल्कि उन्होंने पारस्परिक मिलन, विरह, सुख-दु:ख सहित कृषक जीवन पर भी खूब लिखा। फौज में भर्ती होने पर उन्होंने लिखा कि:

"देश नगर घर गाम छूटग्या, कित का गाणा गाया रै।
कहै जाट तै डूम हो लिया, बाप मेरा बहकाया रै।।"

बेहतरीन कवि मेहर सिंह द्वारा अपने फौजी जीवन का अहसास अपनी इस रागनी में बखूबी किया गया है -

"साथ रहणियां संग के साथी, दया मेरे पै फेर दियो।
देश के ऊपर जान झौंक दी, लिख चिट्ठी में गेर दियो।"

गाँव में आजाद जीवन जीने वाले मस्तमौला आदमी के लेखनी थामने वाले हाथों को जब बंदूक थामनी पड़ी तो जीवन में नई मुश्किलों का आना हुआ और शायद इसी कारण उन्हें छुट्टी बिताने के बाद लौटना भारी लगता था। उनके मन का बोझ इन पंक्तियों में साफ झलकता है-

"छुट्टी के दिन पूरे होगे, फिकर करन लगा मन में।
बांध बिस्तरा चाल पड़ा, के बाकि रहगी तन में।"

फौजी जीवन का उनका व्यक्तिगत अनुभव कितना ही कटु रहा हो, लेकिन देश के सच्चे सिपाही होने के नाते उन्होंने अपनी रागनियों से सदैव सैनिकों का मनोबल ही बढ़ाया। एक फ़ौजी होने के कारण उनकी रचनाओं में फ़ौज के जीवन, युद्ध इत्यादि का उल्लेख स्वभाविक है। आजाद हिंद फौज के नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयासों को उन्होंने एक रागनी में कुछ यूं व्यक्त किया-

"घड़ी ना बीती ना पल गुजरे, उतरा जहाज शिखर तै।
बरसण लागै फूल बोस पै, हाथ मिले हिटलर तै।।"

फौजी जीवन व कला में अनूठा तालमेल बनाने वाले मेहर सिंह अंग्रेजों की फ़ौज में भर्ती हुए फिर अंग्रेजों की बगावत करने वाली फ़ौज का हिस्सा होकर नेताजी की आजाद हिन्द फ़ौज का हिस्सा बने और अंग्रेजों के खिलाफ लडे और 1945 में दूसरे वर्ल्ड वार के दौरान 5 मार्च 1945 को मांडले (तब के बर्मा और आज के म्यांमार देश) के एक हॉस्पिटल में शहीद हो गए और इस संसार को छोड़ गए।

मेहर सिंह जी के 1945 में दुनियाँ से जाने के बाद उनकी पत्नी प्रेमकौर ने ऐसा जीवन जिया कि वो एक उद्धाहरण बन गया जिसमें वो ऐसी डूबी कि उनको दुनिया का होश ही नही रहा। मेहर सिंह जी के जाने और दादी प्रेमकौर के 2004 में जाने के बीच की अवधि है- लगभग 59 साल और ये 59 साल उन्होंने कैसे काटे होंगे आज आप और हम उसकी केवल कल्पना कर सकते हैं। पति के जाने के बाद प्रेमकौर अपनी ससुराल बरोणा गाँव से बाहर एक कदम भी नही रखा, उन्होंने ना दोबारा शादी की, जीवन-पर्यंत निसंतान रही। वो कभी अपने मायके समसपुर (दिल्ली) भी नही गई और अपने व्यवहार एवं समर्पण से स्वर्गवासी पति व परिवार की इज्जत को आसमान की बुलंदियों तक ले गई।

आज से 22 साल पहले लगभग 92 वर्ष की आयु पूरी करके 02/04/2004 को दादी प्रेमकौर इस धरती को छोड़कर मेहर सिंह जी के पास स्वर्ग में चली गई लेकिन वो अपनी ससुराल "बरोणा गाम" को बरोणा धाम बनाकर विदा हुई। बरोणा गाम को बरोणा धाम बनाने में उस सती का बहुत बड़ा हाथ है।

1993 में स्थापित शहीद मेहर सिंह स्मारक समिति उनकी याद में उनकी जयंती के अवसर पर 15 फरवरी को गांव बरोणा के स्टेडियम में, जहाँ मेहर सिंह जी की आदमकद प्रतिमा है, पिछले कई वर्षों से रागनी गायन कार्यक्रम आयोजित करवा रही है। जीवन और इसके सामाजिक ताने-बाने पर यानि धन, दान, इश्क, आशिक, शर्म, लिहाज और यारी-दोस्ती पर कवि मेहर सिंह की कुछ पंक्तियाँ है कि:

धन बिन दान,

दान बिन दाता,

दाता बिन जग सूना है।

अश्क बिन इश्क,

इश्क बिन आशिक,

आशिक बिन संसार नहीं।

शर्म बिन लहाज,

लहाज बिन मतलब,

मतलब बिन कोई यार नहीं।

***

राजस्थान
के प्रसिद्ध शाकाहारी व्यंजन एवं मिठाइयाँ
स्वाद भी, संस्कृति भी
प्रमुख शाकाहारी व्यंजन
1. दाल बाटी चूरमा
राजस्थान की पहचान, दाल, बाटी और मीठा चूरमा का अदवुत संगम।
2. गट्टे की सब्जी
बेसन के गट्टों से बनी स्वादिष्ट सब्जी, रोटी या चावल के साथ लाजवाब।
3. केर-सांगरी
मरुस्थल की विशेष सब्जी, केर और सांगरी का अनोखा स्वाद।
4. पंचमेल दाल
पांच प्रकार की दालों का मिश्रण, पौष्टिक और स्वादिष्ट।
5. बाजरे की रोटी और लहसुन की चटनी
राजस्थान का पारंपरिक भोजन, सादगी में छुपा है असली स्वाद।
6. कढ़ी-पकौड़ी
खट्टी-मीठी कढ़ी में पकोड़ों का स्वाद, सबको भाता है।
7. पापड़ की सब्जी
पापड़ और मसालों से बनी अनोखी और चटपटी राजस्थानी सब्जी।
8. मूंग दाल मंगौड़ी की सब्जी
मंगौड़ी और दाल से बनी हेल्दी और स्वादिष्ट सब्जी।
9. खिचड़ी
चावल और दाल से बनी घी से महकती पौष्टिक राजस्थानी खिचड़ी।
10. मिस्सी रोटी
बेसन और आटे से बनी पौष्टिक रोटी, स्वाद और सेहत से भरपूर।
प्रसिद्ध मिठाइयाँ
1. घेवर
सावन और तीज का विशेष पारंपरिक मीठा व्यंजन।
2. मावा कचौरी (जोधपुर)
खोए और मेवों से भरी मीठी कचौरी, जोधपुर की शान।
3. मोहनथाल
बेसन और घी से बनी शाही और लाजवाब मिठाई।
4. मालपुआ
घी में तला मीठा पकवान, रबड़ी के साथ और भी खास।
5. मूंग दाल हलवा
सर्दियों की खास मिठाई, घी और मेवों से भरपूर।
6. बालूशाही
खस्ता और रस से भरी पारंपरिक मिठाई।
7. फीणी (फेणी)
जयपुर और बीकानेर की प्रसिद्ध सूक्ष्म मिठाई।
8. रबड़ी
गाढ़े दूध की मलाईदार मिठाई, कई व्यंजनों के साथ परोसी जाती है।
9. चूरमा लड्डू
घी और गुड़ / चीनी से बना पौष्टिक और स्वादिष्ट लड्डू।
10. गोंद के लड्डू
सर्दियों में बनने वाले पारंपरिक और पौष्टिक लड्डू।
पधारो म्हारे देश...
स्वाद लीजिए राजस्थान की शान का!

श्री ओमप्रकाश गुप्ता (अतिथि रचनाकार)

अनुभव की पाठशाला: हमारे बुजुर्ग

गाँव के बीचों-बीच एक विशाल पुराना पीपल का पेड़ था। उसकी जड़ें धरती में बहुत गहराई तक फैली थीं और उसकी शाखाएँ पूरे चौपाल को छाया देती थीं। कहा जाता था कि वह पेड़ गाँव का सबसे पुराना पेड़ है। उसी पेड़ के नीचे हर शाम गाँव के बुज़ुर्ग बैठते थे। कोई रामचरितमानस का दोहा सुनाता, कोई खेती-बाड़ी की बातें करता, कोई पुराने जमाने की घटनाएँ सुनाता, तो कोई जीवन की सीख देता।

बच्चे खेलते-खेलते वहाँ आ जाते और दादा-दादी से कहानी सुनकर खुश हो जाते। कुछ जवान लोग आदर से नमस्ते करके निकलते, पर कई लोग मन ही मन सोचते, "इन बुज़ुर्गों का अब क्या काम? बस बैठे रहते हैं, पुरानी बातें करते रहते हैं।"

उसी गाँव में मोहन नाम का एक युवक रहता था। वह शहर में पढ़ाई करके लौटा था। पढ़ा-लिखा था, मोबाइल और नई तकनीक की बातें करता था, और खुद को बहुत समझदार मानता था। उसे लगता था कि अब दुनिया बदल गई है, पुराने लोगों की सोच का कोई उपयोग नहीं रहा।

वह अक्सर अपने दोस्तों से कहता, “अब जमाना इंटरनेट का है। हर चीज़ मोबाइल पर मिल जाती है। इन बुजुर्गों से क्या सीखना?”

उसकी बातें सुनकर कुछ युवक भी उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगे।

एक दिन पंचायत में नई सड़क बनाने की बात उठी। गाँव के लोग वर्षों से टूटी सड़क से परेशान थे।

मोहन तुरंत बोला, “सीधी सड़क बनानी है तो इस पीपल के पेड़ को कटवा दीजिए और यह चौपाल भी हटवा दीजिए। बुजुर्ग कहीं और बैठ जाएँगे।”

यह सुनकर चौपाल में सन्नाटा छा गया। कई लोगों को बुरा लगा, पर कोई बोला नहीं। तभी गाँव के सबसे बुजुर्ग हरिराम जी, जिनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष थी, धीरे-धीरे उठे। उनकी कमर झुकी हुई थी, हाथ में लकड़ी की छड़ी थी, पर आवाज़ में अब भी गहराई थी।

उन्होंने कहा, **“बेटा, सड़क सीधी बन जाएगी, पर रास्ते टेढ़े हो जाएँगे।”**

मोहन हँस पड़ा। उसे लगा दादाजी पहेली बुझा रहे हैं।

कुछ दिनों बाद सड़क का काम शुरू हुआ। मजदूरों ने जैसे ही जमीन खोदनी शुरू की, कुछ ही गहराई पर मिट्टी धँसने लगी। जाँच हुई तो पता चला कि वहाँ नीचे एक बहुत पुराना कुआँ दबा हुआ है, जिसे वर्षों पहले मिट्टी से भर दिया गया था। अगर सड़क वहीं बन जाती, तो बरसात में पूरी सड़क धँस जाती और बड़ा हादसा हो सकता था।

सब लोग घबरा गए। तब हरिराम जी बोले, “मैंने अपने बचपन में यहाँ यह कुआँ देखा था। तब लोग इसी से पानी भरते थे।”

गाँव वाले हैरान रह गए। जिस बात का रिकॉर्ड कहीं नहीं था, वह एक बुजुर्ग की स्मृति में सुरक्षित थी।

सड़क का रास्ता बदल दिया गया और गाँव एक बड़ी मुसीबत से बच गया।

लेकिन मोहन के मन में अभी भी पूरी तरह बदलाव नहीं आया था। वह सोचता था–“ठीक है, एक बात याद थी, इससे क्या फर्क पड़ता है?”

कुछ महीनों बाद भयंकर सूखा पड़ा। खेत सूखने लगे, कुएँ खाली होने लगे, तालाब में दरारें पड़ गईं। किसान परेशान हो गए। गाँव में चिंता फैल गई। कई लोग शहर जाने की सोचने लगे।

पंचायत बुलाई गई। हर कोई परेशान था। तभी हरिराम जी ने कहा, “पुराने समय में भी ऐसा सूखा पड़ा था। तब हमने पहाड़ी के पीछे वाले पुराने तालाब से नहर निकालकर पानी खेतों तक पहुँचाया था।”

लोगों ने पूछा, “पर वह नहर कहाँ है?”

हरिराम जी मुस्कुराए, “मिट्टी के नीचे दब गई है, पर रास्ता अब भी वहीं है।”

उनके बताए अनुसार लोग गए। झाड़ियाँ हटाईं, मिट्टी खोदी, और सचमुच पुरानी नहर मिल गई। गाँव के युवक जुट गए, कई दिनों तक मेहनत की, रास्ता साफ किया। कुछ ही समय में तालाब का पानी खेतों तक पहुँचने लगा। सूखे खेत फिर हरे होने लगे।

अब लोग खुलकर कहने लगे - **“बुजुर्ग अनुभव का खजाना होते हैं।”**

मोहन चुप रहने लगा, लेकिन उसका अहंकार अभी पूरी तरह टूटा नहीं था।

एक दिन उसके अपने घर में बड़ा विवाद हो गया। पिता की जमीन के बँटवारे को लेकर मोहन और उसके भाइयों में झगड़ा हो गया। बात इतनी बढ़ गई कि भाई एक-दूसरे से बात करना बंद कर दिए। माँ रोती रहती, पिता परेशान रहते। मोहन ने वकील बुलाने की बात कही। तभी उसकी माँ बोली, “पहले हरिराम जी से बात कर लो।” मन मारकर मोहन उन्हें बुलाने गया।

हरिराम जी घर आए। सबको शांत बैठाया। फिर बोले, “तुम लोग जमीन बाँट सकते हो, पर क्या माँ-बाप भी बाँटोगे? खेत के हिस्से कर लोगे, क्या बचपन के दिन भी बाँट लोगे? जब छोटे थे तब एक थाली में खाते थे, आज दो बीघा जमीन के लिए दुश्मन बन गए?”

घर में सन्नाटा छा गया। उन्होंने आगे कहा, “धन से घर नहीं बनता, मन से घर बनता है।”

उनकी बातों ने सबका दिल पिघला दिया। भाइयों ने गले लगकर झगड़ा खत्म किया। पिता की आँखों में आँसू आ गए। उस दिन पहली बार मोहन को लगा कि बुजुर्ग केवल सलाह नहीं देते, टूटते घरों को जोड़ते भी हैं।

समय बीता। एक वर्ष बाद गाँव में अचानक महामारी फैल गई। लोग डर गए। हर कोई घबराया हुआ था। हरिराम जी ने पुराने घरेलू उपाय बताए—सफाई, दूरी, उबला पानी, रोगी की देखभाल, संयम। साथ ही डॉक्टर की सलाह मानने को कहा।

उन्होंने कहा, **“नई दवा जरूरी है, पर पुरानी समझ भी जरूरी है।”**

गाँव ने सावधानी बरती और जल्दी संकट से बाहर निकल आया।

अब मोहन पूरी तरह बदल चुका था। उसने चौपाल की मरम्मत करवाई, पीपल के पेड़ के चारों ओर चबूतरा बनवाया, वहाँ पानी की टंकी रखवाई और हर शाम खुद बुजुर्गों के पास बैठने लगा।

वह बच्चों से कहता, “मोबाइल ज्ञान दे सकता है, पर अनुभव नहीं। अनुभव बुजुर्गों के पास होता है।”

एक दिन उसने पूरे गाँव के सामने हरिराम जी के चरण छुए और कहा, **“दादाजी, मैंने आपको बेकार समझा था। आज समझ आया कि बुजुर्ग घर की छत नहीं, नींव होते हैं।”**

हरिराम जी मुस्कुराए और बोले, “बेटा, पेड़ का फल नया होता है, पत्ते नए होते हैं, फूल नए होते हैं… पर जड़ हमेशा पुरानी होती है। नई पीढ़ी फल है, बुजुर्ग जड़ हैं। जड़ सूख जाए तो फल टिक नहीं सकता।” उनकी बात सुनकर सबकी आँखें नम हो गईं।

उस दिन से गाँव में एक नियम बना, हर बड़े फैसले से पहले बुजुर्गों की राय ली जाएगी। बच्चे उनसे संस्कार सीखेंगे, युवक उनसे धैर्य सीखेंगे, और परिवार उनसे एकता सीखेगा।

धीरे-धीरे वह गाँव आसपास के क्षेत्रों में मिसाल बन गया। लोग कहते–

“जहाँ बुजुर्गों का सम्मान होता है, वहाँ बरकत अपने आप आती है।”

सीख: बुजुर्ग केवल उम्रदराज लोग नहीं होते, वे चलते-फिरते विद्यालय होते हैं। उनके पास अनुभव, धैर्य, प्रेम, त्याग और जीवन की सच्ची समझ होती है। जो समाज अपने बुजुर्गों का सम्मान करता है, वह कभी गरीब नहीं होता।

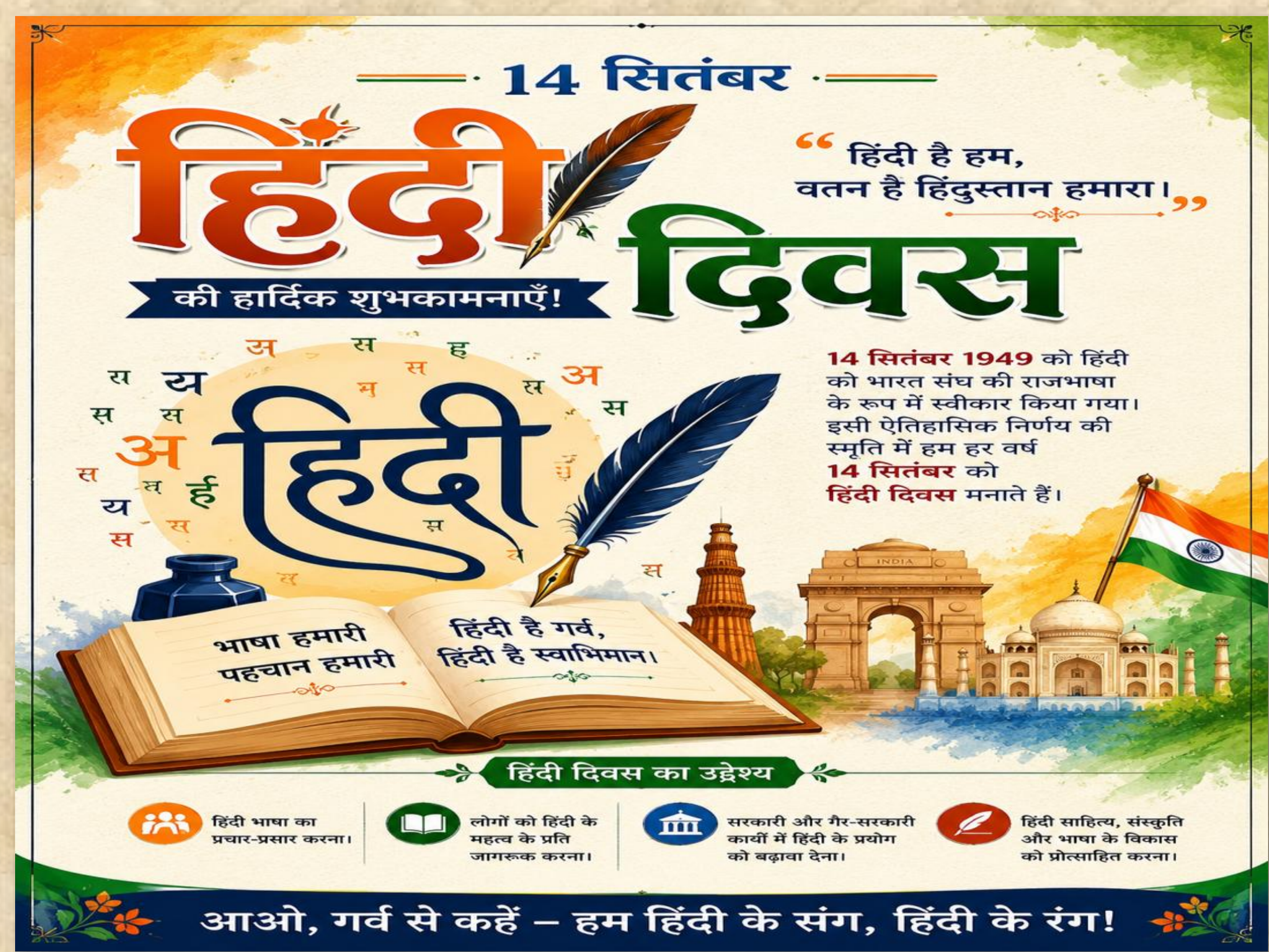

***

एक गाँव में एक बहुत धनी, न्यायप्रिय और धर्मात्मा व्यापारी रहता था। उसके पास अपार धन-संपत्ति थी, लेकिन उसे सबसे अधिक प्रिय थे उसके **19 ऊँट**। वह कहा करता था–

"धन तो आता-जाता रहता है, पर न्याय और संस्कार हमेशा साथ रहते हैं।"

समय बीता और एक दिन व्यापारी गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। उसे लगा कि अब जीवन अधिक नहीं बचा। उसने अपने तीनों पुत्रों को पास बुलाया और कहा–

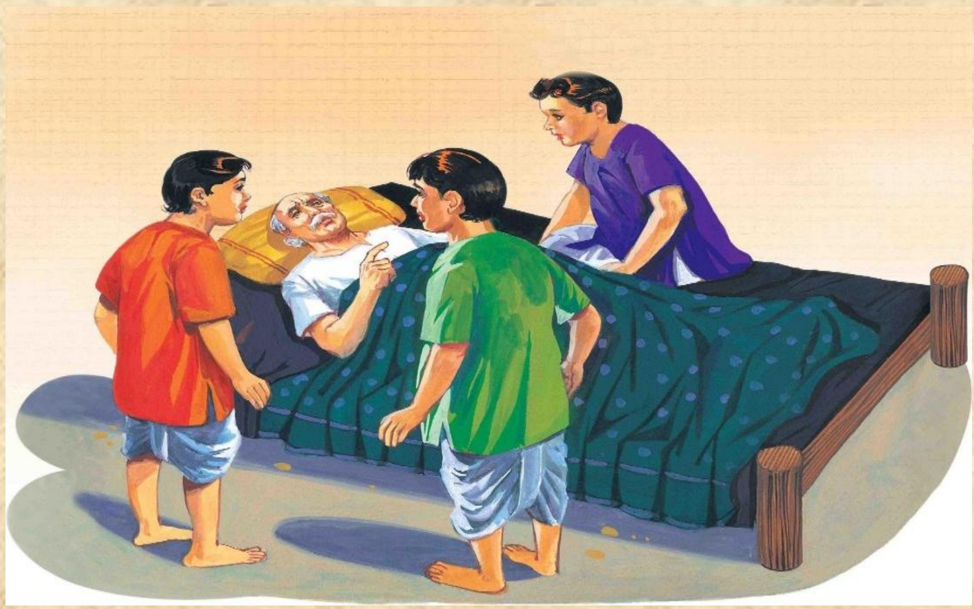

"बेटों! मेरे जाने के बाद इन **19** ऊँटों का बँटवारा मेरी इच्छा के अनुसार करना।"

उसने अपनी वसीयत लिखवाई–

- बड़े बेटे को **आधा (1/2)** हिस्सा मिलेगा।
- मँझले बेटे को **एक चौथाई (1/4)** हिस्सा मिलेगा।
- छोटे बेटे को **एक पाँचवाँ (1/5)** हिस्सा मिलेगा।

कुछ दिनों बाद व्यापारी का देहांत हो गया।

तेरहवीं के बाद तीनों भाई बैठकर ऊँटों का बँटवारा करने लगे।

किसी ने कहा, "एक ऊँट काट दो।"

दूसरा बोला, "पिता ने कभी जीव को कष्ट नहीं दिया। यह उनकी इच्छा के विरुद्ध होगा।"

मामला पूरे गाँव में फैल गया। बड़े-बड़े लोग आए, पर कोई समाधान न निकाल सका।

आख़िर किसी ने कहा–

"पास के आश्रम में एक महात्मा रहते हैं। उनके पास चलो।"

तीनों भाई महात्मा के चरणों में पहुँचे।

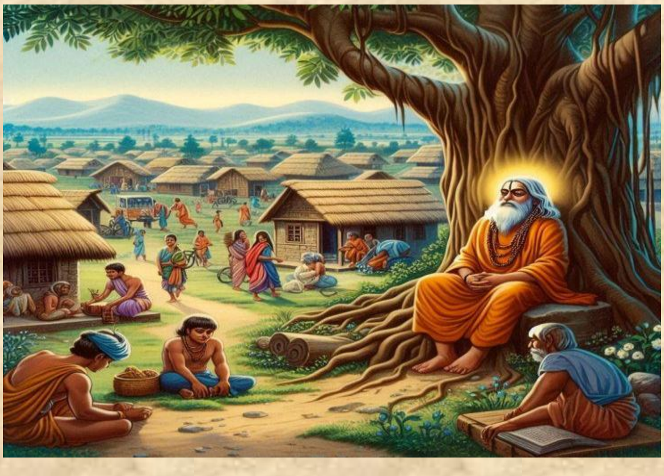

महात्मा ने पूरी बात सुनी। फिर मुस्कुराकर बोले–

"इतनी-सी बात पर विवाद? लो, मेरा एक ऊँट भी ले जाओ।"

अब कुल ऊँट हो गए 20।

महात्मा बोले–

"अब वसीयत के अनुसार बाँट दो।"

20 का आधा = 10 ऊँट। बड़े बेटे को मिल गए।

20 का चौथाई = **5** ऊँट। मँझले बेटे को मिल गए।

20 का पाँचवाँ = **4** ऊँट। छोटे बेटे को मिल गए।

अब गिनती हुई–

10 + 5 + 4 = **19**।

एक ऊँट बच गया।

महात्मा मुस्कुराए और बोले–

"यह मेरा ऊँट है, मैं इसे वापस ले जाता हूँ।"

तीनों भाई आश्चर्यचकित रह गए।

उन्होंने महात्मा के चरण पकड़ लिए।

"गुरुदेव! आपने ऐसा अद्भुत समाधान कैसे निकाला?"

महात्मा बोले–

"समस्या ऊँटों की नहीं थी, सोच की थी। जब तक मनुष्य केवल अपने हिस्से की सोचता है, समाधान नहीं मिलता। जब कोई अपना थोड़ा-सा त्याग जोड़ देता है, तब सबका भला हो जाता है।"

फिर उन्होंने आगे कहा–

"जीवन में भी ईश्वर ऐसे ही अपना 'एक ऊँट' जोड़ देते हैं। जब मनुष्य की बुद्धि हार मान लेती है, तब गुरु का ज्ञान और भगवान की कृपा रास्ता दिखाती है।"

तीनों भाइयों की आँखें भर आईं।

उन्होंने प्रण किया कि जीवन में कभी संपत्ति के लिए आपस में नहीं लड़ेंगे।

महात्मा ने अंत में कहा–

"याद रखो, जहाँ अहंकार होता है वहाँ गणित उलझ जाती है; जहाँ त्याग होता है वहाँ जीवन का हर हिसाब अपने आप सुलझ जाता है।"

उस दिन तीनों भाई केवल ऊँटों का बँटवारा ही नहीं, बल्कि जीवन का सबसे बड़ा पाठ भी सीखकर लौटे।

***

"घर से दूर एक घर"

राहुल भदाला (लेखापरीक्षक)

जीवन की राहों में एक समय ऐसा अवश्य आता है जब रोज़गार और जिम्मेदारियों की खातिर इंसान को अपने घर, अपने शहर और अपने लोगों से दूर जाना पड़ता है। ऐसी ही एक कहानी है रोनी की।

डाक विभाग में चयन होने के बाद रोनी को अपने प्रिय गुलाबी शहर जयपुर को छोड़कर मेवाड़ की धरती पर जाना पड़ा। दिसंबर का महीना था। सर्दियाँ दस्तक दे चुकी थीं और वर्ष अपने अंतिम पड़ाव पर था। बाहर की ठंड जितनी तीखी थी, भीतर का खालीपन उससे कहीं अधिक गहरा था। संयुक्त परिवार में पले-बढ़े रोनी के लिए एक अनजान शहर में अकेले रहना किसी परीक्षा से कम नहीं था।

धीरे-धीरे उसकी दिनचर्या एक जैसी हो गई। सुबह दफ्तर जाना, शाम को लौटना, कुछ देर पढ़ाई करना और फिर अगले दिन की तैयारी में सो जाना। सप्ताह के छह दिन काम और शनिवार की शाम जयपुर के लिए रवाना हो जाना, यही उसकी दुनिया बन गई थी। लोगों के बीच रहकर भी वह भीतर से अकेला था।

समय बीतने के साथ यह अकेलापन मानसिक दबाव में बदलने लगा। न कोई घनिष्ठ मित्र था, न मन की बात सुनने वाला कोई अपना। ऐसे समय में दफ्तर के कुछ लोग उसके लिए सहारा बने। एक वरिष्ठ सहकर्मी मैडम और चाय वाले काका अक्सर मुस्कुराकर कहते, "अब यही काम करना है तो मन लगाना सीखो।" उनकी छोटी-छोटी बातें भी उसके लिए किसी मरहम से कम नहीं थीं।

कहते हैं, जब हम अपने शहर से दूर होते हैं और अचानक अपने इलाके का कोई व्यक्ति मिल जाए, तो लगता है जैसे अपनों का कोई अंश मिल गया हो। रोनी को भी कुछ ऐसे लोग मिले। संयोग से एक व्यक्ति उसके ही गाँव के थे और कुछ जयपुर से थे। लेकिन जीवन की अपनी रफ्तार होती है। किसी का स्थानांतरण हो गया, कोई प्रतिनियुक्ति पर चला गया और कोई दूसरे विभाग में चयनित हो गया। तब रोनी ने पहली बार महसूस किया कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता।

इसी बीच प्रशिक्षण के लिए सहारनपुर से बुलावा आ गया। प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद फिर से वापस मेवाड़ लौटना पड़ा, दूसरी ओर वह किसी अन्य विभाग की तैयारी भी कर रहा था ताकि जल्द से जल्द अपने गृह जिले में लौट सके। बढ़ती जिम्मेदारियाँ, पढ़ाई का दबाव और भीतर का अकेलापन उसे लगातार थका रहा था। कई बार उसे लगता कि शायद घर पर भी कोई उसकी मनःस्थिति को पूरी तरह समझ नहीं पा रहा।

कहते हैं, जब इंसान भीतर से टूटने लगता है, तब ईश्वर किसी न किसी रूप में उसके जीवन में सहारा भेज ही देते हैं।

रोनी के जीवन में भी ऐसा ही हुआ।

दफ्तर में उसकी मुलाकात एक वरिष्ठ सहकर्मी से हुई, जो कुछ दिनों की छुट्टी के बाद लौटे थे। वे मुख्य डाकघर के पोस्टमास्टर थे। एक दिन उन्होंने सहजता से पूछा, "क्या हुआ?"

यह एक साधारण-सा प्रश्न था, लेकिन शायद रोनी बहुत दिनों से अपने भीतर सब कुछ दबाए बैठा था। इतना सुनते ही उसकी आँखें भर आईं। शब्द जैसे कहीं खो गए थे। वह कुछ कह नहीं पाया।

उन्होंने बिना कोई और प्रश्न किए बस इतना कहा, "चलो, मेरे साथ घर चलते हैं।"

उस दिन उनके घर पहुँचकर रोनी ने एक ऐसा अपनापन महसूस किया जिसकी उसे लंबे समय से तलाश थी। वहाँ उनके माता-पिता, धर्मपत्नी और दोनों बच्चे थे। उनकी धर्मपत्नी भी डाक विभाग में कार्यरत थीं। सबने उसका स्वागत ऐसे किया मानो वह कोई अतिथि नहीं, बल्कि परिवार का ही सदस्य हो।

चाय के साथ मिला वह स्नेह उसके भीतर जमा हुए दर्द को धीरे-धीरे पिघलाने लगा।

उस दिन के बाद जीवन बदलने लगा।

लगभग हर दूसरे दिन उनके घर से उसके लिए भोजन आने लगा। कभी साथ बैठकर खाना, कभी बाज़ार की छोटी-सी सैर, तो कभी यूँ ही घंटों बातें करना – इन साधारण से पलों ने उसके जीवन को फिर से रंगों से भर दिया। धीरे-धीरे उसे एहसास ही नहीं हुआ कि कब वह परिवार उसके अपने परिवार जैसा बन गया।

पोस्टमॉस्टर सर और पोस्टमॉस्टर मैडम ने उसे इतना स्नेह दिया कि वह स्वयं को उनका ही सदस्य समझने लगा। मैडम हमेशा यह ध्यान रखतीं कि उसने समय पर भोजन किया या नहीं। उनके माता-पिता का स्नेह और बच्चों की मासूम मुस्कान उसके अकेलेपन की सबसे बड़ी दवा बन गए।

समय पंख लगाकर उड़ता रहा। देखते ही देखते एक वर्ष बीत गया और रोनी का चयन एक अन्य विभाग में हो गया। सबसे बड़ी खुशी यह थी कि उसे उसका गृह जिला मिल गया था।

जब यह समाचार सर और मैडम को मिला, तो वे उससे भी अधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने उसका मुँह मीठा कराया और उसकी सफलता को अपनी सफलता की तरह मनाया।

रोनी भी बेहद खुश था, लेकिन जैसे-जैसे विदाई का समय निकट आता गया, उसके भीतर एक अजीब-सी उदासी जन्म लेने लगी। जिस घर लौटने के लिए वह पूरे वर्ष संघर्ष कर रहा था, उसी खुशी के साथ अब एक दर्द भी जुड़ गया था। उसे महसूस होने लगा कि वह केवल एक शहर नहीं छोड़ रहा, बल्कि एक और परिवार को पीछे छोड़कर जा रहा है।

उसके अंतिम दिनों में दफ्तर में कुछ नए लोग भी आए। उनसे बने रिश्ते आज भी उतने ही जीवंत हैं। वे लोग उसके जीवन की उन खूबसूरत यादों का हिस्सा हैं जिन्हें वह हमेशा "अच्छे लोग" कहकर याद करता है।

फिर वह दिन भी आ गया जब उसका विदाई समारोह आयोजित हुआ। मंच का संचालन पोस्टमॉस्टर सर कर रहे थे। भाषणों और शुभकामनाओं के बीच दोनों ही भावुक हो गए।

उस क्षण रोनी ने महसूस किया कि जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति पद, वेतन या उपलब्धियाँ नहीं होतीं, बल्कि वे रिश्ते होते हैं जो सफर के दौरान बनते हैं।

उसी दिन उसने जाना कि मनुष्य जीवन कितना सुंदर, संवेदनशील और मार्मिक है। कुछ लोग हमारे जीवन में थोड़े समय के लिए आते हैं, लेकिन अपने प्रेम और अपनत्व से हमेशा के लिए हमारे हृदय में बस जाते हैं।

आज वर्षों बीत चुके हैं। रोनी अपने घर, अपने परिवार और अपने शहर में है। जीवन अपनी गति से आगे बढ़ रहा है। लेकिन जब भी वह उन दिनों को याद करता है, पोस्टमॉस्टर सर, मैडम, उनके परिवार और उन सभी अच्छे लोगों की स्मृतियाँ मन को नम कर देती हैं।

वह उन्हें शायद कभी नहीं भूल पाएगा, क्योंकि उन्होंने उसे केवल सहारा नहीं दिया था; उन्होंने उसे यह सिखाया था कि रिश्ते केवल खून से नहीं, प्रेम, विश्वास और अपनत्व से भी बनते हैं।

और यही उसके जीवन की सबसे सुंदर स्मृति है–

उसने अपने घर से दूर, एक और घर बना लिया था।

मैं लड़की हूँ

मैं लड़की हूँ, बेटी हूँ,
माँ की ममता, पिता की प्रीति हूँ।
घर की हँसी, आँगन की रौनक,
हर रिश्ते की मीठी संगीत हूँ।

जब बेटी बनकर जन्म लिया,
कई आँखों में सपने सजाए,
पापा की उँगली थाम-थाम कर,
जीवन के पहले कदम बढ़ाए।

फिर एक दिन विदा की घड़ी आई,
आँखों में आँसू, होंठों पर मुस्कान थी,
अपनों से बिछड़ने का दर्द भी था,
पर नई दुनिया की पहचान थी।

मैं बहू हूँ उस घर की अब,
जहाँ अपनेपन के दीप जलाती हूँ,
सबकी खुशियों को अपना मानकर,
हर रिश्ते को दिल से निभाती हूँ।

मैं टूटती भी हूँ, बिखरती भी हूँ,
पर हर बार फिर सँवर जाती हूँ,
अपने आँसू छुपाकर अक्सर,
सबके चेहरे पर मुस्कान सजाती हूँ।

मैं त्याग हूँ, मैं विश्वास हूँ,
मैं प्रेम की अमिट कहानी हूँ,
मैं केवल एक नारी नहीं,
पूरे संसार की निशानी हूँ।

मैं पत्नी हूँ, जीवनसंगिनी हूँ,
सुख-दुख की सच्ची साथी हूँ,
जब राह कठिन और मंज़िल दूर हो,
मैं ही हौसले की बाती हूँ।

मैं लड़की हूँ, बेटी हूँ, बहू हूँ, पत्नी हूँ,
हर रूप में जीवन का श्रृंगार हूँ,
मेरे सम्मान से ही जग का सम्मान है,
मैं नारी हूँ, सृष्टि का आधार हूँ।

लेखिका : नेहा गुप्ता
(पत्नी श्री सारांश गुप्ता)

कुसुमलता (लेखापरीक्षक)

"जूनागढ़" बीकानेर का शौर्य

राजस्थान के मजबूत किलों में बीकानेर का जूनागढ़ किला बहुत प्रसिद्ध है। यह चारों तरफ से सुरक्षित और मजबूत किला माना जाता है। लाल पत्थरों से बना यह किला बीकानेर के शासक रायसिंह ने बनवाया था। वे पहले अकबर और फिर जहांगीर के महत्वपूर्ण सेनापति थे। उन्होंने मुगलों की ओर से गुजरात, काबुल और दक्षिण भारत के कई युद्धों में हिस्सा लिया और सफलता पाई।

बीकानेर के संस्थापक राव बीकाजी ने संवत 1542 (1485 ई.) में पहले किले की नींव रखी थी। बाद में महाराजा रायसिंह ने वर्तमान भव्य जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया। इस किले में छोटी-छोटी ईंटों की कारीगरी देखने योग्य है।

'दयालदास की ख्यात' के अनुसार जब महाराजा रायसिंह दक्षिण भारत के अभियान पर थे (संवत 1642), तब उन्होंने अपने मंत्री कर्ण चन्द को नया किला बनवाने का आदेश दिया। पहले जहाँ पुराना 'मोती महल' था, वहीं नए किले की नींव डाली गई। बाद में इस किले को 'कर्णमपुर का गढ़' भी कहा गया। संवत 1645 में किले की दीवारें तैयार हो गईं और पूरा किला संवत 1650 में बनकर तैयार हुआ।

किला कुल 19 गज ऊँचा था। महल के नीचे 20 गज गहरा तहखाना था। किले के बाहर 20 गज चौड़ी और 25 गज गहरी खाई बनाई गई थी।

इतिहासकारों के अनुसार, नया किला उसी जगह पर बनाया गया जहाँ पहले पुराना किला था। ऐसा माना जाता है कि सुजानगढ़ का यह किला बीकानेर के राजा सुजानसिंह ने बनवाया था। किले का मुख्य प्रवेश बहुत मजबूत था और इसे 1645 ई. में और भी मजबूत किया गया।

किले के चारों ओर 20-25 फीट गहरी और चौड़ी खाई है। किले में प्रवेश के दो मुख्य द्वार हैं: पूर्वी द्वार कर्णाल और पश्चिमी द्वार चांदपोल। इनके अलावा, दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल, और ध्रुव पोल जैसे आंतरिक द्वार भी हैं। मूल रूप से, किला सूरजपोल तक ही विस्तारित था; अन्य द्वार बाद के शासकों द्वारा जोड़े गए।

सूरजपोल पीले पत्थरों से बना है, जो शायद जैसलमेर से लाए गए थे। इस द्वार पर संस्थापक राजा रायसिंह की प्रशस्ति उत्कीर्ण है, जो उनके शासनकाल की घटनाओं का प्रमाणिक विवरण प्रदान करती है। यहां स्वर्गारोहण करने वाली वीरांगनाओं के हाथ के निशान भी अंकित हैं, और पास में गणेश जी का एक छोटा मंदिर है। सूरजपोल के पास, 1567 ईस्वी के चित्तौड़ साके में वीरगति प्राप्त करने वाले जयमल मेड़तिया और पत्ता सिसोदिया की गज पर बैठी मूर्तियां हैं, जो उनके पराक्रम और बलिदान की याद दिलाती हैं। अकबर ने भी आगरा किले में ऐसी मूर्तियां स्थापित करवाई थीं, जिससे महाराजा रायसिंह को प्रेरणा मिली हो। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने 1633 ईस्वी तक आगरा में इन मूर्तियों को देखा था, लेकिन बाद में औरंगजेब ने इन्हें हटवा दिया।

जूनागढ़ बाहर से जितना मजबूत दिखता है, भीतर से उतना ही भव्य और सुंदर है। विशाल चौक में बने आलीशान महल अपनी शिल्प कला के लिए दर्शनीय हैं। जनानी ड्योढ़ी से त्रिपोलिया तक पाँच मंजिला महलों की श्रृंखला सुंदर और मनमोहक है। ये महल महाराजा रायसिंह और बाद के शासकों द्वारा बनवाए गए थे, जो स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जूनागढ़ के भव्य महलों के निर्माण में बीकानेर के लगभग सभी महाराजाओं का योगदान रहा है।

इन महलों में रायसिंह का चौबारा, फूल महल, चन्द्र महल, गज मंदिर, अनूप महल, रतन निवास, रंग महल, कर्ण महल, दलेल निवास, छत्र महल, लाल निवास, सरदार निवास, गंगा निवास, चीनी बुर्ज, सुनहरी बुर्ज, विक्रम विलास, सूरत निवास, मोती महल, कुंवरपदा और जालीदार बारहदरियां प्रमुख हैं

ये महल राजस्थान की मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक हैं क्योंकि इनमें राजपूत और मुस्लिम कला शैलियों का सुंदर मिश्रण है। इन महलों की वास्तुकला मुख्य रूप से राजपूत शैली पर आधारित है, लेकिन इनकी सजावट और अलंकरण में मुस्लिम शैली की प्रमुखता है। जैसा कि बीकानेर के अंतिम महाराजा डॉ. करणीसिंह ने अपनी किताब में लिखा है: "बीकानेर के किले (जूनागढ़) में ऐसी स्थापत्य सुंदरता है, जिसे देखकर इतिहासकार को फतेहपुर सीकरी और दिल्ली के लाल किले की याद आ जाती है।"

जूनागढ़ के इन महलों के अंदर कई जगहों पर कांच की पच्चीकारी और सुनहरे रंग का बहुत सुंदर काम किया गया है। महलों की दीवारों पर हुए रंगीन प्लास्टर ने उनकी शोभा को दोगुना कर दिया है।

अनूप महल के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए डॉ. करणीसिंह ने लिखा है: "बीकानेर के किले में स्थित अनूप महल, जिसमें सोने की कलम से काम किया गया है, एक बेहतरीन कलाकृति है और अपनी तरह के सबसे अच्छे नमूनों में से एक है।"

दीवारों पर सोने की पच्चीकारी का जो काम हुआ था, उसकी मूल ताजगी आज भी वैसी ही बनी हुई है। भव्य अनूप महल में ही बीकानेर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था। इसमें रखा सुंदर हिंडोला (झूला) भी कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। इसके अलावा, फूल महल और गज मंदिर शीशे की बारीक कटाई व फूल-पत्तियों के सजीव चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, वहीं गंगा निवास में लाल रंग के पत्थरों पर सोने का काम देखने लायक है। सबसे ऊपर की मंजिल पर बना छत्र निवास, अपनी सुंदर लकड़ी पर कृष्ण की रासलीला के सजीव चित्रण के कारण दर्शनीय है। हर मंदिर में विवाह, गणगौर व अन्य उत्सव मनाए जाते थे।

जूनागढ़ के भीतर अनेक आवासीय भवन, पाकशाला, आतिश (अश्वशाला), शूतरखाना (उष्ट्रशाला), सुजान महल, डूंगर निवास, गुलाब निवास, शिव निवास, फीलखाना, संगमरमर का तालाब इत्यादि हैं। किले के भीतर महाराजा डूंगरसिंह द्वारा निर्मित एक ऊँचा और भव्य घंटाघर उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि करता है। दुर्गवासियों को जलापूर्ति के लिए रामसर और रानीसर दो अथाह जलराशि वाले कुएँ उल्लेख हैं। जूनागढ़ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसके प्रांगण में दुर्लभ प्राचीन वस्तुएँ, शस्त्रास्त्रों, देव प्रतिमाओं, विविध प्रकार के पात्रों तथा फारसी व संस्कृत में लिखे हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत समृद्ध संग्रहालय है। सारतः बीकानेर का यह भव्य दुर्ग इतिहास, कला और संस्कृति की बहुमूल्य निधि को संजोये हुए है जिसे देखने के लिए देशी विदेशी पर्यटक वहाँ आते हैं।

***

रस्में

लेखक
अशोक वर्मा
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

मुरझाई सी सूरत, दो नयन कमल लिए ताक रही।

झीनी सी घूंघट की ओट से बाहर वो झांक रही।

आते जाते लोग बैठे है ऐसे पंगत में।

जैसे भोज पर वानर बैठे हो संगत में।

पचास का जनमा, पूड़ी नरम मांग रहा।

बेटे की उमर का था, ये भी उसे न भान रहा।

देख ये दृश्य, उसकी आंखों से अश्रु सैलाब पिघल गया।

बेटे के मौसर का निवाला कैसे वो निगल गया।

बहुत समझाया करती थी, सजन जी नही पीना है।

मेरे लिए न सही, इन जिगर के टुकड़ों के लिए जीना है।

मर्ज ऐसा लगा सजन को, बचाने के लिए सर्वस्व झोंक दिया।

रुपए, बच्चो का बचपन, खिलोने, घर यहां तक कि खुद को तक फूंक दिया।

कुछ दस, ग्यारह दिन पहले ऐसी कुछ बात हुई।

मेरी और जिगर के टुकड़ों की सजन से फिर न मुलाकात हुई।

रिश्ते, नाते, रूठना, मनाना, वादे सब पीछे छूट गए।

कुठाराघात था नियति का, जो सजन मुझसे रूठ गए।

पगड़ी, दाढ़ी और मूंछ वालो का हुजूम उमड़ आया।

चार बरस के लाल को उन सबके बीच में पाया।

श्वेत, रक्त वर्ण की, पाग उसके सर रख दी जाती है।

ये देख निष्ठुर नियति को दया भी नही आती है।

कुछ ग्राम वजन की इस पगड़ी को, कैसे वो संभाल पाएगा।

समाज और नियति के दो पाटो के बीच वो पीसता चला जायेगा।

रश्म पगड़ी की पूरी हुई, अब रुपए कुछ दस, बीस आशीर्वाद में पाएगा।

आशीर्वाद तो ठीक है, मगर ये ऋण कैसे चुका पाएगा।

कुछ लाख सवा दो, खर्च करवा दिए इन रश्मो रीवाजो पर।

अब पाई पाई मांगने आयेगा साहूकार, घर के दरवाजों पर।

घर के दरवाजे भी तो गिरवी रख दिए इन रश्मो रीवाज़ो पर।

कहां मझधार में छोड़ गया वो, जो दौड़ा चला आता था बच्चो की आवाज़ों पर ।

दरवाजे पर खड़ा साहूकार, मूल और सूद को एक साथ गिनाएगा।

मैं बस इतना बोलूंगी "कुछ दिन की मोहलत दो, कर्जा सारा चूक जायेगा"।

टकटकी सी नजरो से मंजर सारा उसने देख लिया।

कुंआ, रस्सी, जहर,, नही, नही, ये क्या मैने सोच लिया।

आंसू उसने पोंछे, और हाथ बड़ी बच्ची के सर पर रख दिया।

इतने में निगल निवाले, पचास का जनमा भी उठ गया।

एक वक्त खा लूंगी, बेशक बच्चो को कम पढ़ाऊंगी ।

मगर समाज की ये रस्में निभाऊंगी, रस्में जरूर निभाऊंगी।।

एक तरफ सजन रूठ गए तो दूजे छोर समाज रस्मो-रीवाज़ों पर अड़ा था।

अंदर खेल रही थी भूख बच्चो के संग तो दरवाजे पर साहूकार खड़ा था।।

खेलते देख उदासी के आंचल में बचपन को, आंख भर आती है।

दोष क्या था मेरा और इन अभागो का, नियति ये क्यूँ नहीं मुझे बताती है।।

बरस एक चौथाई बीत गया, घर का राशन सारा रीत गया।

दुख, अभाव, पीड़ा, दया, करूणा, ये सब मिले जब से मीत गया।।

उमर चालीस, बच्चे चार, गीली आंखे,खाली बर्तन, ये ही अब इस जीवन का सार।

दृश्य उभर आये सारे, जब मना किया करती थी सजन को बारम्बार।।

पहली रोटी गाय की, आखिरी रोटी कुत्ते के हिस्से की आती है।

बंद हुआ ये सब भी, क्यूंकि बच्चों की भूख अब बहुत डराती है।।

स्वजनो का आना बंद हुआ, अब तो केवल साहूकार चौखट पर आता है।

साहूकार नहीं ये तो यम का दूत हुआ, सोचकर मन बड़ा घबराता है।।

दुःख के तराजू में बराबर बैठकर, नीलामी के संग तौली गई हूँ।

दुःखियारी, अनाथा, पतिहिना, अपशगुनी इन्ही शब्दों से बोली गई हूँ।।

कजरी के इस पहाड़ पर, हर पल, हर वक़्त-बेवक़्त अकेली गई हूँ।

नेतृत्व की परिवर्तनकारी यात्रा

राजीव भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आज की गतिशील दुनिया में, नेतृत्व हर संगठनात्मक सफलता के अग्रिम मोर्चे पर खड़ा होता है। यह आत्म-जागरूकता, निर्णय-निर्माण और निरंतर उत्कृष्टता की ओर बढ़ने की यात्रा का प्रतीक है। नेतृत्व और प्रबंधन दोनों ही किसी संगठन की सफलता के लिए आवश्यक हैं, लेकिन इनके दृष्टिकोण, कार्यशैली और उद्देश्य अलग होते हैं। नेतृत्व लोगों को प्रेरित कर दिशा देता है, जबकि प्रबंधन संसाधनों एवं कार्यों का व्यवस्थित संचालन करता है। जबकि नेतृत्व और प्रबंधन को अक्सर एक ही रूप में लिया जाता है, यह महत्वपूर्ण है कि दोनों के बीच अंतर को पहचाना जाए।

- ***नेतृत्व*** *वह क्षमता है जिससे व्यक्ति दूसरों को प्रेरित करके एक साझा लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है।*
- ***प्रबंधन*** *वह प्रक्रिया है जिसमें योजना, संगठन, निर्देशन और नियंत्रण के माध्यम से कार्यों को पूरा किया जाता है।*

हालांकि ये कुछ पहलुओं में अधिव्यापन (ओवरलैप) कर सकते हैं, नेतृत्व का सार प्रबंधन की सीमाओं को पार कर जाता है, विशेष रूप से जब बात मानव क्षमता और संगठनात्मक वृद्धि की जटिलताओं को समझने की होती है। प्राचीन समय में, लोग मानते थे कि प्रबंधन और नेतृत्व एक ही चीज़ हैं, और दोनों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था। यह विचार पारंपरिक दृष्टिकोणों में गहरे रूप से निहित था, जहाँ अधिकार और जिम्मेदारी को अक्सर नेतृत्व के साथ समानार्थी माना जाता था। हालांकि, जैसे-जैसे हमारे मानव व्यवहार को समझने का दृष्टिकोण विकसित हुआ, यह स्पष्ट हो गया है कि ये दो अवधारणाएँ अलग-अलग उद्देश्य की पूर्ति करती हैं और उनके स्रोत भी अलग-अलग हैं।

नेतृत्व एक जटिल और सूक्ष्म अवधारणा है, जो व्यक्ति को निरंतर बेहतर बनने के लिए प्रेरित करती है। यह किसी औपचारिक पद या बाहरी शक्ति से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर से उत्पन्न होती है। नेतृत्व बिना किसी औपचारिक अधिकार पर निर्भर हुए व्यक्तिगत विकास, सत्यनिष्ठा और दूसरों को प्रेरित और प्रभावित करने की क्षमता से प्रेरित होता है। यह एक व्यक्तिगत चयन है, और आत्मनिर्देशित होने के कारण, यह विशिष्ट चुनौतियाँ लाता है जो निरंतर विकास और आत्म-मूल्यांकन की मांग करती हैं। नेता बनने की यात्रा किसी नियमावली या निर्देशों द्वारा मार्गदर्शित नहीं होती; यह अनुभवों, मूल्यों और दूसरों की सफलता और कल्याण के लिए जिम्मेदारी लेने की तत्परता से आकारित होती है।

नेतृत्व का वास्तविक सार एक प्राचीन कथा में व्यक्त किया जा सकता है, जिसमें एक नेता पर्वत की चोटी तक चढ़ता है। जब भी कबीले के भविष्य के बारे में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना होता, नेता चोटी पर चढ़ता। जबकि कबीले के कुछ लोग इसे अहंकार या प्रभुत्व की दिखावट मानते थे, इसका प्रतीकवाद कहीं अधिक गहरा था। जब इसका प्रश्न किया गया, तो नेता ने गहरी समझ के साथ उत्तर दिया "केवल पर्वत की चोटी से ही मैं अपने कबीले के लिए सर्वोत्तम दिशा देख सकता हूँ। वहाँ से मैं प्रत्येक व्यक्ति की ताकतों और कमजोरियों को भी देख सकता हूँ, यह मूल्यांकन कर सकता हूँ कि हमें कितनी दूरी तय करनी है और संभावित गंतव्यों की पहचान कर सकता हूँ।"

यह कहानी नेतृत्व के सार को उस प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें तत्कालिक, रोज़मर्रा की चिंताओं से ऊपर उठकर एक व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त किया जाता है। सच्चा नेतृत्व करने के लिए मौजूदा चुनौतियों की गहरी समझ, भविष्य का स्पष्ट दृष्टिकोण और खुद तथा टीम दोनों की ताकतों और कमजोरियों के प्रति जागरूकता की जरूरत होती है। नेतृत्व केवल निर्णय लेने या दिशा निर्देश देने का नाम नहीं है–यह अपनी जागरूकता और समझ को ऊंचा करने का विषय है। एक नेता को अपनी व्यक्तिगत दृष्टिकोण से परे देखना आना चाहिए और पूरे टीम की आवश्यकताओं, ताकतों और चुनौतियों पर विचार करना चाहिए। उन्हें एक उच्चतर चेतना से काम करना चाहिए, जो उन्हें व्यक्तिगत प्रयासों और सामूहिक मिशन के आपसी जुड़ाव को पहचानने की अनुमति दे। यह निरंतर आत्म-विकास, आत्म-जागरूकता और व्यक्तिगत विकास के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। एक नेता को अपने पूर्वाग्रहों को चुनौती देने, अपनी धारणाओं पर सवाल उठाने और सहानुभूति तथा समझ के साथ नेतृत्व करने के लिए आवश्यक भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसमें स्वयं की आत्म-जागरूकता महत्वपूर्ण है क्योंकि नेतृत्व का मतलब दूसरों पर अपनी इच्छा थोपना नहीं है, बल्कि दूसरों को प्रेरित और उत्साहित करना है ताकि वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकें। नेतृत्व विश्वास, सहयोग और खुले संचार की एक संस्कृति को बढ़ावा देता है, जिससे किसी को अपना कार्य संभालने और संगठन की सामूहिक सफलता में योगदान देने का अवसर मिलता है।

असल में, नेतृत्व आत्म-खोज और सामूहिक सशक्तिकरण की यात्रा है। यह अधिकारी के पद पर बैठने के बारे में नहीं है, बल्कि उच्चतर चेतना और समझ के स्तर तक उठने के बारे में है। जैसे-जैसे हम आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करते हैं, यह स्पष्ट है कि नेतृत्व, पहले से कहीं अधिक उत्कृष्टता की दिशा की ओर अग्रसर है।

निष्कर्ष: नेता परिवर्तन को अपनाते हैं और नई दिशा प्रदान करते हैं, जबकि प्रबंधक स्थिरता बनाए रखते हुए कार्यों का सुचारु संचालन सुनिश्चित करते हैं। इस प्रकार, नेतृत्व और प्रबंधन एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी भी संगठन की प्रभावी कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक है कि नेतृत्व और प्रबंधन दोनों के गुणों का संतुलित समन्वय हो।

***

राम भजन कुम्हार,
उप महालेखाकार

छूटना

राजस्थान की माटी में बसा एक गाँव है - सुदर्शनपुरा। नाम से भ्रमित न हों, यह एकदम सादा-सा गाँव है, जहाँ प्रकृति अपने पूरे रंग में बिखरी है और मनुष्य अपने सहज स्वभाव में। यहीं रहता है चन्दन। उसका बचपन आर्थिक अभाव के बीच बीता, शरीर ने मेहनत की माटी चाटी और मन ने सपनों के रंग देखे। हर युवा की तरह उसके सपने भी सतरंगी थे, पर एक सपना उन सबसे ऊपर था- वह एक ऐसा सशक्त व्यक्ति बने जो परिवार को सहारा दे और नाम रोशन करे। संजीदगी उसकी पहचान थी। उसी संजीदगी के बल पर वह भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग में सहायक लेखापरीक्षक चुन लिया गया।

चन्दन का सपना साकार हुआ तो परिवार में हर्ष की लहर दौड़ गई। गाँववालों ने उसकी प्रशंसा के पुल बाँधे। कुछ ने दावा किया कि उन्हें पहले से ही उसकी सफलता का पक्का यकीन था। सफलता और मृत्यु में एक समानता है- दोनों में व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं और लोगों की निगाहें उसकी भलाइयों पर केन्द्रित हो जाती हैं। चन्दन को दिल्ली में नियुक्ति मिली। शुभचिन्तकों ने बधाई दी, ईर्ष्यालुओं ने आशंका जताई कि महानगर में जाकर कहीं भटक न जाए।

बाहर की यह बात हुई, अब चन्दन के भीतर झाँकें। चन्दन मन से निष्कपट है और प्राय: अपनी ही दुनिया में खोया रहता है। आज तक वह घर से लम्बे समय के लिए कभी दूर नहीं गया। बाहरी दुनिया के बारे में उसने सिर्फ कहानियाँ सुनी हैं। इस नौकरी ने उसके सपने तो पूरे कर दिए, पर मन में अनगिनत विचार उठते-बैठते रहते हैं। चन्दन ने सफलता का केवल एक पक्ष देखा था कि सफलता से बहुत कुछ मिलेगा। यह कभी नहीं सोचा था कि कुछ खोना भी पड़ेगा। अब जब सोचने बैठा, पहला ख्याल यही उभरा- क्या अब उसका यह गाँव, यह प्रदेश उससे हमेशा के लिए छूट जाएगा?

यही एक ख्याल मन में यादों और विचारों की पूरी श्रृंखला खोल गया। उसे याद आया कि वह हमेशा सोचा करता था- बड़ा होकर कुछ बनेगा, परिवार और अपने जीवन में कुछ नया और अच्छा जोड़ेगा। लेकिन उसने कभी ज़रा भी नहीं सोचा कि उसे इसके बदले कुछ खोना भी पड़ेगा। आज वे खो जाने वाली चीज़ें साफ़ दिख रही थीं- जन्मभूमि, सुखी संयुक्त परिवार का साथ, अपनों से दूरी, और परिवार की वह बड़ी परिभाषा, जिसमें सिर्फ माँ-बाप-बीवी नहीं, पूरा गाँव शामिल होता है। वह सोचने लगा- क्या यह सफलता उसे इस कीमत पर चाहिए थी? उसे लगा जैसे किसी हरे भरे पौधे, जिसे गाँव की उपजाऊ भूमि में रोपा और सींचा गया, और अब जब वह फलने-फूलने लगा है, उसे उखाड़कर शहर की बंजर ज़मीन में रोपा जाना है।

उसने शहर को आज तक अच्छी और लुभावनी चीजों के केंद्र के रुप में देखा था। पर अब उसे लगने लगा है कि शहर में सब कुछ नए सिरे से शुरू करना होगा। उसके सारे पुराने सामाजिक संबंध टूट जाएँगे। और क्या शहर में वैसे संबंध फिर से बना पाना उसके लिए आसान होगा? उसने सुना था- शहर का जीवन स्वार्थ और आवश्यकता के आदान-प्रदान पर चलता है। वहाँ हर कोई दूसरे को उपयोगिता की निगाह से देखता है। व्यक्ति खुद को कई परिधियों में घेरे रहता है- छोटी परिधि, बड़ी परिधि, सबसे बड़ी परिधि। जिनके केन्द्र में स्वयं व्यक्ति और उसका परिवार रहता है, फिर घटते विश्वास और भरोसे के आधार पर आगे के घेरे बनते हैं।

यह सब सोचकर चन्दन उदास हो गया। उसकी रुचियाँ सादी थीं- अच्छा खाना, निष्कपट व्यवहार, ताज़ी हवा, प्राकृतिक सुन्दरता और सादगी भरा जीवन। अब उसे लगा- क्या यह सब उसे शहर में आसानी से मिलेगा? और अगर मिलेगा, तो किस कीमत पर? उसने फिर सोचा- जीवन में आगे बढ़ना है तो शहर अवसरों से भरे हैं। अच्छी शिक्षा, बच्चों के लिए सीखने के नए-नए हुनर, जीवन की सुविधाएँ, मनोरंजन के साधन- सब कुछ वहाँ है। पर इन सबके बीच सुरक्षा की चिन्ता भी तो है। क्या बच्चों को गलियों में यूँ ही खेलने भेज सकते हैं? हर वक्त उनके पीछे पहरा देना पड़ता है, उनकी फ़िक्र बनी रहती है। गाँव जैसा स्वतंत्र और खुला माहौल उन्हें नहीं मिल पाता। जाने-पहचाने चेहरे तो दिख जाते हैं, पर एक हद के बाद वो भी अजनबी लगने लगते है। हाँ, भले अजनबी भी होते हैं, पर शहर में हर कोई दूसरे को उतनी अच्छी तरह जानना नहीं चाहता, न ही जान पाता है। सब 'अहं ब्रह्मास्मि' के भाव में, अपने ही केन्द्र में खोए रहते हैं। अपनी नज़र से खुद को देखते हैं और दुनिया को भी। यह समदर्शिता उन्हें कम उदार बना देती है।

चन्दन ने आगे सोचा- उसकी पत्नी और बूढ़ी माँ भी तो उसके साथ पलायन करेंगी। श्रीमती जी सदा गाँव में रही हैं, सहज और सरल। पति के साथ चलना उनका धर्म है, पर मन में बार-बार यही बात कचोटती है कि इस उम्र में फिर से उखड़ना पड़ेगा। पति के सुख में ही अपना सुख मानकर वह यह पीड़ा सहने को तैयार हैं। वैसे भी हर स्त्री की तरह इस शाश्वत पीडा का दंश वह एक बार झेल चुकी है जब उन्हें विवाह पश्चात अपनी दुनिया से उखाडकर ससुराल में ला खडा किया गया था। एक बार छूटने के बाद *'अब कहीं भी रहो, क्या फर्क पड़ता है'* का भाव कुछ हद तक उनके दुख को कम करता है। पर माँ का सवाल और भी चिन्ताजनक है। माँ को शहर की सुविधाओं से कोई मतलब नहीं। उनकी उम्र में शरीर सुविधाओं का मोह नहीं रखता, उन्हें तो बस बातें करने वाले चाहिए, उनके जैसे लोग, जिनसे वे बिना किसी झिझक के दिल की बात कह सकें और पूछ सके। शहर में ऐसे मित्र मिलना मुश्किल है, जो बिना किसी प्रयोजन के बात करना पसंद करें। वहाँ वह किससे बिना मतलब की बातें करेगी? खेतों में स्वच्छंद घूमने वाली माँ को शहर का पार्क कितना रोमांच दे पाएगा? दूसरों की निगाहों से अपनी इज़्ज़त आँकने वाले शहरी परिवारों के उलाहने और सलाह उन्हें कितना लज्जित करेंगे, कितना घुटन भरा महसूस कराएँगे? चन्दन को मुंशी प्रेमचन्द की *'बूढ़ी काकी'* और भीष्म साहनी की *'चीफ की दावत'* याद आ गई। काश, उसकी माँ के साथ ऐसा न हो। चन्दन ने मन ही मन ठाना- सारे दुखों के बावजूद वह बनावटीपन से दूर रहेगा और माँ को भी सहज-स्वाभाविक जीवन जीने का माहौल देगा।

अब तक चन्दन पलायन करने वाले परिवार के बारे में सोच रहा था। अब ख्याल आया- पीछे छूट जाने वालों का क्या होगा? वह परिवार का सबसे सशक्त व्यक्ति था। उसके जाने से क्या परिवार कमज़ोर हो जाएगा? घर के छोटे बच्चे, जो उसे ही आदर्श मानकर उत्साहित होते हैं, क्या समय के साथ उनका उत्साह मन्द पड़ जाएगा? क्या वे उस मशाल को गिरा देंगे, जो चन्दन ने उनके हाथों में थमाई है? उनका दोष भी नहीं है। अक्सर जब कोई व्यक्ति परिवार सहित अपनी जड़ें छोड़ता है, तो थोड़े समय में उसकी जगह दूसरे रिश्ते भर देते हैं, जैसे बर्तन में से पानी निकालने पर बचा हुआ पानी फिर से समतल हो जाता है। अपनी जड़ों से उखड़ने के बाद जब आदमी वापस अपने घर को लौटता हैं, तो अपने ही घर में मेहमान सा बन जाता है।

इन सब विचारों से चन्दन बहुत उदास हो गया। उसे लगा, यह छूटना किसी धुले हुए कपड़े को निचोड़ने जैसी पीड़ा दे रहा है। हाँ, चन्दन को आशा है कि आज से बीस-पच्चीस साल बाद वह वापस यहाँ आएगा और फिर से इसी जीवन को जीएगा। पर कौन समझाए चन्दन को कि उसकी तरह शेष दुनिया भी गतिशील है। जब वह लौटेगा, तब शायद मोहन राकेश की *'मलबे का मालिक'* कहानी की तरह उसके हाथ सिर्फ स्मृतियों का मलबा ही लगे। या फिर उसे एक नई शुरुआत करनी पड़े। और जीवन के उस पड़ाव में क्या उसमें नई शुरुआत का साहस बचेगा? चन्दन को लगा, जैसे यह एक जीवन जीने के लिये कम पड़ रहा है। उसे एक और जीवन चाहिए- अपने मन से जीने के लिए।

***

मोहन शर्मा (लेखापरीक्षक)

प्रतियोगी परीक्षा जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं होती

वर्तमान समय में प्रतियोगी परीक्षाओं का महत्व बहुत बढ़ गया है। लगभग हर विद्यार्थी अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने और एक अच्छी नौकरी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करता है। समाज में भी इन परीक्षाओं को बहुत प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है। इसी कारण कई बार विद्यार्थी और उनके परिवार यह मानने लगते हैं कि प्रतियोगी परीक्षा में सफलता ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। प्रतियोगी परीक्षा जीवन का केवल एक साधन है, न कि जीवन का अंतिम उद्देश्य।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि जीवन बहुत व्यापक और बहुआयामी है। प्रतियोगी परीक्षाएँ केवल कुछ निश्चित पदों और नौकरियों के लिए योग्य उम्मीदवारों का चयन करती हैं। ये परीक्षाएँ किसी व्यक्ति की संपूर्ण प्रतिभा, क्षमता और व्यक्तित्व का सही आकलन नहीं कर सकतीं। यदि कोई विद्यार्थी इन परीक्षाओं में सफल नहीं हो पाता, तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह जीवन में असफल हो गया। हर व्यक्ति के भीतर अलग-अलग प्रकार की प्रतिभाएँ और योग्यताएँ होती हैं, जिन्हें पहचानकर वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

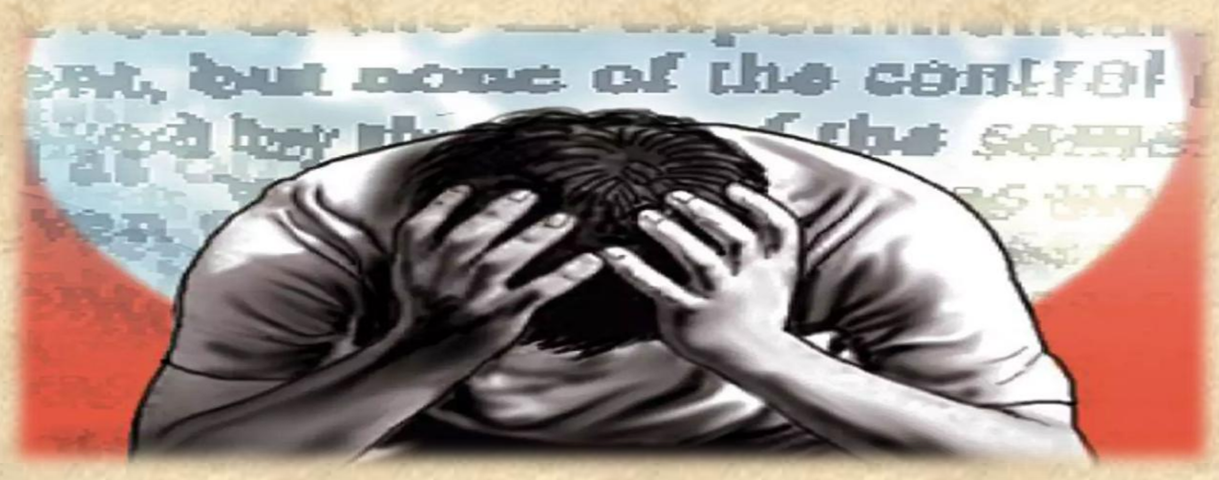

आज के आधुनिक युग में सफलता प्राप्त करने के अनेक मार्ग उपलब्ध हैं। पहले के समय में सरकारी नौकरी को ही सफलता का मुख्य आधार माना जाता था, लेकिन आज के दौर में व्यापार, उद्योग, विज्ञान, तकनीक, कला, खेल, पत्रकारिता और उद्यमिता जैसे अनेक क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहे हैं। इन क्षेत्रों में भी व्यक्ति अपनी मेहनत, लगन और कौशल के बल पर बहुत ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है। दुनिया के अनेक प्रसिद्ध और सफल व्यक्तियों ने बिना किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा को पास किए भी अपने जीवन में

महान उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि सफलता के लिए केवल प्रतियोगी परीक्षा ही एकमात्र मार्ग नहीं है।

इसके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का भी अपना महत्व होता है। इन परीक्षाओं की तैयारी करते समय विद्यार्थी में अनुशासन, धैर्य, समय प्रबंधन और कड़ी मेहनत करने की आदत विकसित होती है। ये गुण जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी होते हैं। इसलिए यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में सफल नहीं भी हो पाता, तो भी उसकी मेहनत और अनुभव व्यर्थ नहीं जाते। यह अनुभव उसे जीवन के अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

आज के समय में प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव भी बहुत बढ़ गया है। कई बार विद्यार्थी असफलता को सहन नहीं कर पाते और निराश हो जाते हैं। कुछ लोग अपने आत्मविश्वास को खो देते हैं और स्वयं को असफल मानने लगते हैं। यह सोच बिल्कुल गलत है। जीवन में असफलता भी सफलता की ओर बढ़ने का एक महत्वपूर्ण कदम होती है।

इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने रुचि और योग्यता के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करें। केवल समाज या परिवार के दबाव में आकर किसी प्रतियोगी परीक्षा को जीवन का अंतिम लक्ष्य बना लेना उचित नहीं है। हर व्यक्ति की रुचि और क्षमता अलग-अलग होती है, इसलिए जीवन में सफलता का मार्ग भी अलग-अलग हो सकता है।

समाज और परिवार को भी इस विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। विद्यार्थियों पर अत्यधिक दबाव डालने के बजाय उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपनी क्षमताओं को पहचानें और अपने जीवन का सही मार्ग चुनें। यदि किसी परीक्षा में सफलता नहीं मिलती, तो उसे जीवन की समाप्ति नहीं समझना चाहिए, बल्कि नए अवसरों की खोज करनी चाहिए।

निष्कर्ष:

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्रतियोगी परीक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव अवश्य है, लेकिन यह जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। जीवन में सफलता पाने के अनेक मार्ग होते हैं। आत्मविश्वास, परिश्रम, सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास के द्वारा व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है इसलिए हमें प्रतियोगी परीक्षाओं को जीवन का एक अवसर समझना चाहिए, न कि जीवन का अंतिम उद्देश्य।

हिंदी में काम करेंगे,

राष्ट्र का मान बढ़ाएँगे।

***

नवीन दैया 'एकांत',
पी.एस.

मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो ???

मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो ???

अहंकार मेरे में था और तुम भी ईर्ष्या का भाव रखते हो।

मैं धर्म से भटका था और तुम कौन से पथ पे चलते हो।।

कहते हैं मैं बहुत ज्ञानी था, फिर भी घमंड ने घेर लिया।

ज्ञानी तो तुम भी हो बहुत, फिर क्यों मुझ सा बनना चाहते हो।।

मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो ???

सिर मेरे दस थे, विचार वहीं से आते थे।

फेसबुक, इंस्टा, यू-ट्यूब जैसे दस सिर लिए तुम भी तो फिरते रहते हो।।

मैंने राम की बात नहीं मानी, कुल और वंश का नाश किया।

तुम भी कहाँ किसी की सुनते हो।।

मेरे पथ पे क्यों चलते हो।

मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो ???

मैंने राम को नहीं माना, तुम तो मर्यादा में रह सकते हो।

मेरे जैसा बनना नहीं तुमको, राम ही मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।।

मैं रावण हूँ तो फिर तुम कौन हो ???

मेरा उद्धार तो स्वयं राम ने किया।

तुम्हें राम बनकर खुद का उद्धार करना है।।

मैं रावण हूँ तो क्या, अब तुमको राम बनना है, तुमको राम बनना है......

"जय श्री राम" "जय श्री राम"

केशव शर्मा
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

पूर्वोत्तर भारत: अरुणाचल प्रदेश की एक झलक

मेरा नाम केशव शर्मा है। मैं सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/वाणिज्यिक के पद पर महालेखाकार कार्यालय, जयपुर में कार्यरत हूँ। अप्रैल 2018 में मेरी पहली नियुक्ति अरुणाचल प्रदेश के महालेखाकार कार्यालय, ईटानगर में हुई। यह केवल एक नई नौकरी की शुरुआत नहीं थी, बल्कि जीवन की एक ऐसी यात्रा का आरंभ था, जिसने मेरे दृष्टिकोण, अनुभव और सोच–तीनों को बदल दिया।

उस समय ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश की राजधानी) पहुँचना आज की तरह आसान नहीं था। मेरे गृह नगर से दिल्ली, फिर दिल्ली से गुवाहाटी की उड़ान, और उसके बाद रेल यात्रा के माध्यम से नाहरलागुन पहुँचना पड़ता था। नाहरलागुन, जो ईटानगर का निकटतम रेलवे स्टेशन है, वहाँ से आगे पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए राजधानी तक पहुँचना होता था। दिल्ली से नाहरलागुन के लिए ट्रेन भी थी, पर वह 2-3 दिनों का समय लेती थी। यात्रा धैर्य, समय और जज़्बे की परीक्षा लेती थी। लेकिन समय के साथ परिवर्तन आया। वर्ष 2022 में होलोंगी क्षेत्र, ईटानगर में डोनी पोलो एयरपोर्ट के शुरू होने के बाद अब दिल्ली से सीधी उड़ान मात्र 2-3 घंटे में ईटानगर पहुँचा देती है।

ईटानगर की बात करें तो यह शहर पहाड़ियों पर बसा हुआ है। यहाँ की जलवायु अत्यंत सुखद है - गर्मियों में हल्की गर्माहट, मानसून में प्रचुर वर्षा, और सर्दियों में ठंडी लेकिन मनभावन सुबहें। यहाँ का पर्यावरण इतना स्वच्छ है कि मैंने अपने पूरे कार्यकाल में AQI को शायद ही कभी 100 से ऊपर जाते देखा हो। स्वच्छ हवा, हरियाली और शांत वातावरण—यह सब मिलकर जीवन को एक अलग ही सुकून देते हैं।

मेरे कार्यकाल के दौरान कई ऑडिट यात्राएँ हुईं, परंतु तवांग का अनुभव मेरे जीवन का सबसे अद्भुत और यादगार अध्याय बन गया। फरवरी का महीना था, जब हमें ऑडिट के लिए तवांग जाना था। तवांग की यात्रा अपने आप में रोमांच से भरी होती है। रास्ते में समुद्र तल से लगभग 13,700 फीट की ऊँचाई पर स्थित सेला पास आता है। जैसे ही हमने सेला पास पार किया, मौसम ने अचानक करवट ली और बर्फबारी शुरू हो गई—वह उस सीजन की पहली बर्फबारी थी।

तवांग पहुँचने के बाद जो अनुभव हुआ, वह अविस्मरणीय है। पूरे सात दिनों तक लगातार बर्फबारी होती रही। दिन हो या रात—आसमान से गिरती बर्फ ने पूरे क्षेत्र को सफेद चादर में ढक दिया था। केवल दो दिन ऐसे थे जब दिन में हल्की धूप दिखाई दी, लेकिन शाम होते-होते फिर से बर्फ गिरने लगती थी। तापमान दिन में भी शून्य से नीचे रहता था, और रात में यह -8 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता था। हमने उसी कड़ाके की ठंड और लगातार बर्फबारी के बीच अपना ऑडिट कार्य पूरा किया। सुबह बर्फ से ढकी सड़कों पर निकलना, ठंडी हवाओं के बीच कार्य करना, और फिर शाम को लौटकर अगले दिन की तैयारी करना—यह सब एक चुनौती भी था और एक अनोखा अनुभव भी।

एक समय तो ऐसा लगा कि इतनी भारी बर्फबारी के कारण वापस लौटना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन प्रकृति ने जैसे हमारी परीक्षा लेकर हमें पुरस्कृत किया—जिस दिन हमें तवांग से लौटना था, उसी दिन से मौसम साफ होना शुरू हुआ, धूप निकल आई, और हमारा वापसी का सफर बिना किसी बाधा के पूरा हुआ।

तवांग केवल प्राकृतिक सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ से चीन सीमा एवं इसके निकटवर्ती क्षेत्रों की झलक भी देखी जा सकती है। रास्ते में पड़ने वाली माधुरी झील (सांगेसर झील), ऊँचाई पर स्थित शांत जलराशि के रूप में मन मोह लेती है। इसके अलावा मार्ग में कई अन्य छोटी-बड़ी झीलें और एक सुंदर जलप्रपात (नूरानांग वाटरफॉल) भी आता है, जो इस यात्रा को और भी यादगार बना देता है।

तवांग क्षेत्र मुख्यतः मोनपा जनजाति से संबंधित संस्थानों और तवांग मठ (Tawang Monastery) से जुड़ा हुआ है। तवांग मठ भारत का सबसे बड़ा और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है, जो न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जब हमारा तवांग से लौटने का समय आया, तब वहाँ लोसर पर्व की तैयारियाँ चल रही थीं। लोसर, जो तिब्बती नववर्ष का प्रतीक है, विशेष रूप से मोनपा जनजाति द्वारा बड़े उत्साह से मनाया जाता है। पूरा क्षेत्र रंग-बिरंगे परिधानों, पारंपरिक नृत्य और उत्सव की तैयारियों से जीवंत हो उठता है।

अरुणाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता अद्वितीय है। यहाँ 26 से अधिक प्रमुख जनजातियाँ और 100 से अधिक उप-जनजातियाँ निवास करती हैं। मोनपा, न्यीशी, आदि, अपातानी और मिश्मी जैसी जनजातियाँ अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। यहाँ 50 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, लेकिन हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में सभी को जोड़ती है, जबकि अंग्रेजी आधिकारिक भाषा है–इस कारण कार्य में कोई कठिनाई नहीं हुई। पूर्वोत्तर भारत, जिसे पहले "सात बहनों" के रूप में जाना जाता है, आज आठ राज्यों का समूह है। यह क्षेत्र भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 8% भाग है और "चिकन नेक" नामक गलियारे से देश के अन्य भागों से जुड़ा हुआ है।

अरुणाचल प्रदेश का इतिहास भी रोचक है। पहले इसे NEFA (North-East Frontier Agency) कहा जाता था। 1972 में इसे केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया और 20 फरवरी 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। यह राज्य "उगते सूरज की भूमि" के नाम से प्रसिद्ध है और भौगोलिक दृष्टि से पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की सीमाएँ चीन, भूटान और म्यांमार से मिलती हैं, जो इसे सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं।

प्राकृतिक दृष्टि से यह राज्य एक स्वर्ग है–घने जंगल, ऊँचे पर्वत, बहती नदियाँ और अद्भुत जैव विविधता। यह राज्य जल संसाधन संपन्न राज्य है, जहाँ देश की कुल संभावित जलविद्युत क्षमता का लगभग 40% (58,000 मेगावाट से अधिक) निहित है। यहाँ की प्रमुख नदियाँ ब्रम्हपुत्र नदी प्रणाली से संबंधित हैं, जो तिब्बत क्षेत्र से "सियांग" के रूप में प्रवेश करती है। मुख्य नदियों में सियांग, सुबनसिरी, लोहित, दिबांग, कामेंग एवं तिराप प्रमुख हैं।

राज्य की इस अपार जल क्षमता के उपयोग हेतु कई जलविद्युत परियोजनाएँ विकसित की जा रही हैं, जिनमें अपर सियांग जलविद्युत परियोजना (11,000 मेगावाट), लोअर सुबनसिरी जलविद्युत परियोजना (2,000 मेगावाट) तथा दिबांग बहुउद्देश्यीय परियोजना (2,880 मेगावाट) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये परियोजनाएँ ऊर्जा उत्पादन के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास में भी सहायक हैं।

पर्यटन की दृष्टि से भी अरुणाचल प्रदेश अत्यंत समृद्ध है। तवांग के अलावा जीरो घाटी, नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान, मेचुका, दिरांग और पासीघाट जैसे स्थान अपनी अलग पहचान रखते हैं। यहाँ की हर जगह अपने भीतर एक नई कहानी समेटे हुए है।

मार्च 2025 में जब मेरा स्थानांतरण जयपुर महालेखाकार कार्यालय में हुआ, तो एक ओर अपने गृह राज्य में लौटने की खुशी थी, तो दूसरी ओर अरुणाचल प्रदेश को छोड़ने का भावुक क्षण भी। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो महसूस होता है कि अरुणाचल प्रदेश ने मुझे केवल अनुभव ही नहीं, बल्कि जीवन की अनेक अनमोल यादें भी दी हैं। पूर्वोत्तर भारत वास्तव में "प्रकृति का स्वर्ग" और "भारत का प्रहरी" है–और मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे इस अद्भुत भूमि को इतने करीब से जानने और जीने का अवसर मिला।

***

माटी; माथे रो तिलक

माटी
माथे रो तिलक

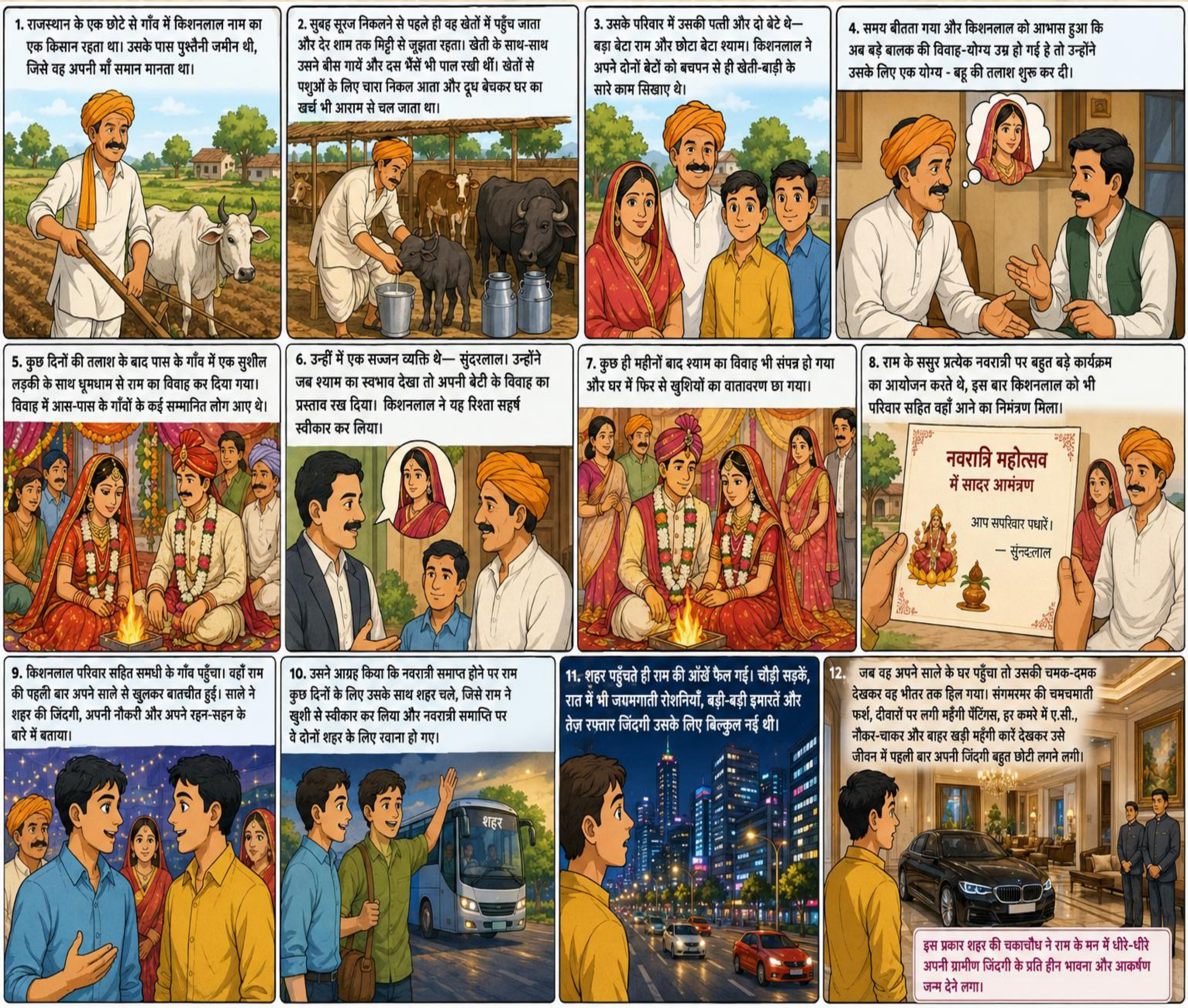
1. राजस्थान के एक छोटे से गाँव में किशनलाल नाम का एक किसान रहता था। उसके पास पुश्तैनी जमीन थी, जिसे वह अपनी माँ समान मानता था।
2. सुबह सूरज निकलने से पहले ही वह खेतों में पहुँच जाता और देर शाम तक मिट्टी से जूझता रहता। खेती के साथ-साथ उसने बीस गायें और दस भैंसें भी पाल रखी थीं। खेतों से पशुओं के लिए चारा निकल आता और दूध बेचकर घर का खर्च भी आराम से चल जाता था।
3. उसके परिवार में उसकी पत्नी और दो बेटे थे— बड़ा बेटा राम और छोटा बेटा श्याम। किशनलाल ने अपने दोनों बेटों को बचपन से ही खेती-बाड़ी के सारे काम सिखाए थे।
4. समय बीतता गया और किशनलाल को आभास हुआ कि अब बड़े बालक की विवाह-योग्य उम्र हो गई हे तो उन्होंने उसके लिए एक योग्य - बहू की तलाश शुरू कर दी।
5. कुछ दिनों की तलाश के बाद पास के गाँव में एक सुशील लड़की के साथ धूमधाम से राम का विवाह कर दिया गया। विवाह में आस-पास के गाँवों के कई सम्मानित लोग आए थे।
6. उन्हीं में एक सज्जन व्यक्ति थे— सुंदरलाल। उन्होंने जब श्याम का स्वभाव देखा तो अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव रख दिया। किशनलाल ने यह रिश्ता सहर्ष स्वीकार कर लिया।
7. कुछ ही महीनों बाद श्याम का विवाह भी संपन्न हो गया और घर में फिर से खुशियों का वातावरण छा गया।
8. राम के ससुर प्रत्येक नवरात्री पर बहुत बड़े कार्यक्रम का आयोजन करते थे, इस बार किशनलाल को भी परिवार सहित वहाँ आने का निमंत्रण मिला।
नवरात्रि महोत्सव
में सादर आमंत्रण
आप सपरिवार पधारें।
— सुंदरलाल
9. किशनलाल परिवार सहित समधी के गाँव पहुँचा। वहाँ राम की पहली बार अपने साले से खुलकर बातचीत हुई। साले ने शहर की जिंदगी, अपनी नौकरी और अपने रहन-सहन के बारे में बताया।
10. उसने आग्रह किया कि नवरात्री समाप्त होने पर राम कुछ दिनों के लिए उसके साथ शहर चले, जिसे राम ने खुशी से स्वीकार कर लिया और नवरात्री समाप्ति पर वे दोनों शहर के लिए रवाना हो गए।
शहर
11. शहर पहुँचते ही राम की आँखें फैल गईं। चौड़ी सड़कें, रात में भी जगमगाती रोशनियाँ, बड़ी-बड़ी इमारतें और तेज़ रफ़्तार जिंदगी उसके लिए बिल्कुल नई थी।
12. जब वह अपने साले के घर पहुँचा तो उसकी चमक-दमक देखकर वह भीतर तक हिल गया। संगमरमर की चमचमाती फर्श, दीवारों पर लगी महँगी पैंटिंग्स, हर कमरे में ए.सी., नौकर-चाकर और बाहर खड़ी महँगी कारें देखकर उसे जीवन में पहली बार अपनी जिंदगी बहुत छोटी लगने लगी।
इस प्रकार शहर की चकाचौंध ने राम के मन में धीरे-धीरे अपनी ग्रामीण जिंदगी के प्रति हीन भावना और आकर्षण जन्म देने लगा।

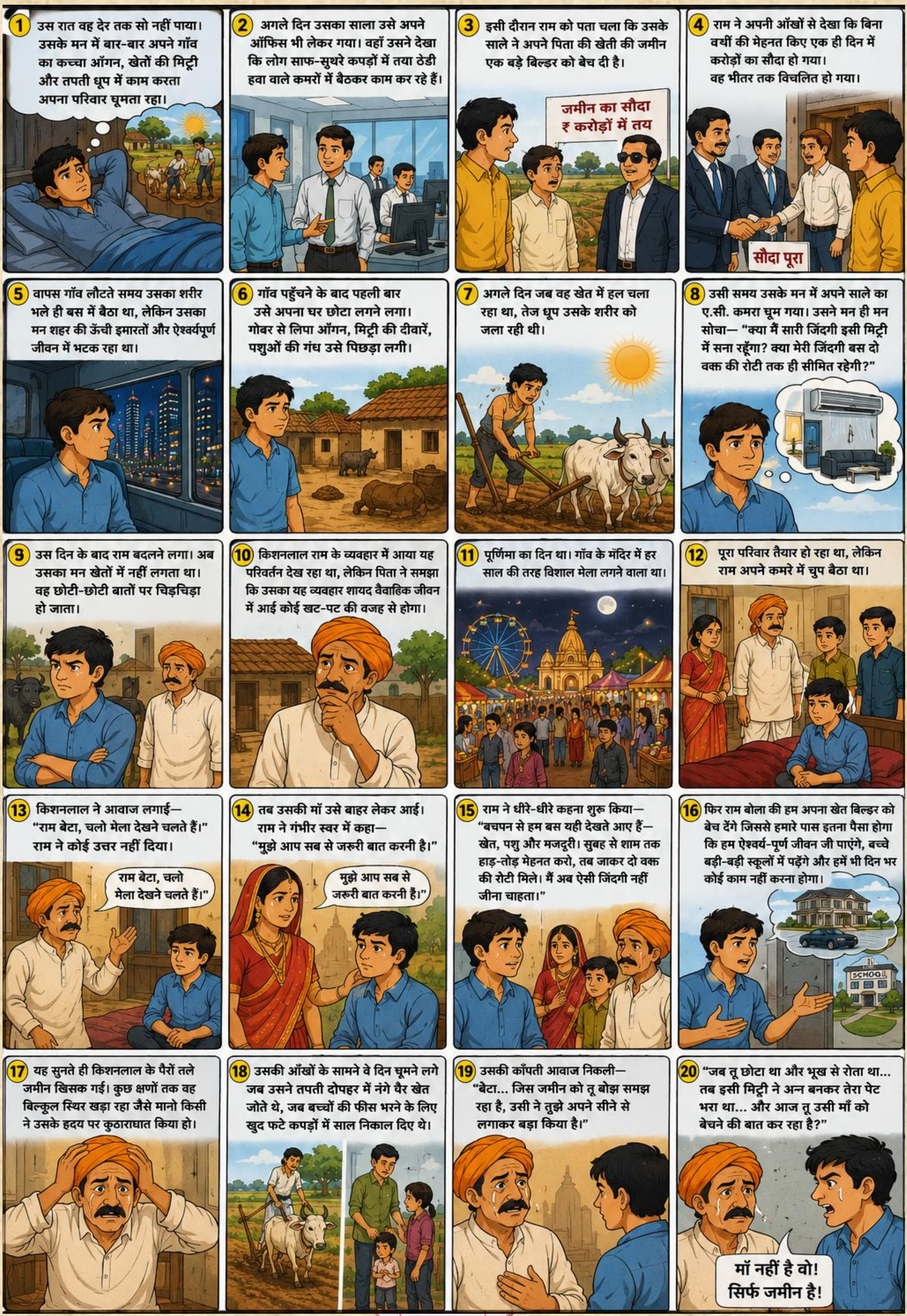

1 उस रात वह देर तक सो नहीं पाया। उसके मन में बार-बार अपने गाँव का कच्चा आँगन, खेतों की मिट्टी और तपती धूप में काम करता अपना परिवार घूमता रहा।
2 अगले दिन उसका साला उसे अपने ऑफिस भी लेकर गया। वहाँ उसने देखा कि लोग साफ-सुथरे कपड़ों में तया ठेडी हवा वाले कमरों में बैठकर काम कर रहे हैं।
3 इसी दौरान राम को पता चला कि उसके साले ने अपने पिता की खेती की जमीन एक बड़े बिल्डर को बेच दी है।
जमीन का सौदा ₹ करोड़ों में तय
4 राम ने अपनी आँखों से देखा कि बिना वर्षों की मेहनत किए एक ही दिन में करोड़ों का सौदा हो गया। वह भीतर तक विचलित हो गया।
सौदा पूरा
5 वापस गाँव लौटते समय उसका शरीर भले ही बस में बैठा था, लेकिन उसका मन शहर की ऊँची इमारतों और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन में भटक रहा था।
6 गाँव पहुँचने के बाद पहली बार उसे अपना घर छोटा लगने लगा। गोबर से लिपा आँगन, मिट्टी की दीवारें, पशुओं की गंध उसे पिछड़ा लगी।
7 अगले दिन जब वह खेत में हल चला रहा था, तेज धूप उसके शरीर को जला रही थी।
8 उसी समय उसके मन में अपने साले का ए.सी. कमरा घूम गया। उसने मन ही मन सोचा— "क्या मैं सारी जिंदगी इसी मिट्टी में सना रहूँगा? क्या मेरी जिंदगी बस दो वक्त की रोटी तक ही सीमित रहेगी?"
9 उस दिन के बाद राम बदलने लगा। अब उसका मन खेतों में नहीं लगता था। वह छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ा हो जाता।
10 किशनलाल राम के व्यवहार में आया यह परिवर्तन देख रहा था, लेकिन पिता ने समझा कि उसका यह व्यवहार शायद वैवाहिक जीवन में आई कोई खट-पट की वजह से होगा।
11 पूर्णिमा का दिन था। गाँव के मंदिर में हर साल की तरह विशाल मेला लगने वाला था।
12 पूरा परिवार तैयार हो रहा था, लेकिन राम अपने कमरे में चुप बैठा था।
13 किशनलाल ने आवाज लगाई— "राम बेटा, चलो मेला देखने चलते हैं।" राम ने कोई उत्तर नहीं दिया।
राम बेटा, चलो मेला देखने चलते हैं।"
14 तब उसकी माँ उसे बाहर लेकर आई। राम ने गंभीर स्वर में कहा— "मुझे आप सब से जरूरी बात करनी है।"
मुझे आप सब से जरूरी बात करनी है।"
15 राम ने धीरे-धीरे कहना शुरू किया— "बचपन से हम बस यही देखते आए हैं— खेत, पशु और मजदूरी। सुबह से शाम तक हाड़-तोड़ मेहनत करो, तब जाकर दो वक्त की रोटी मिले। मैं अब ऐसी जिंदगी नहीं जीना चाहता।"
16 फिर राम बोला की हम अपना खेत बिल्डर को बेच देंगे जिससे हमारे पास इतना पैसा होगा कि हम ऐश्वर्य-पूर्ण जीवन जी पाएंगे, बच्चे बड़ी-बड़ी स्कूलों में पढ़ेंगे और हमें भी दिन भर कोई काम नहीं करना होगा।
SCHOOL
17 यह सुनते ही किशनलाल के पैरों तले जमीन खिसक गई। कुछ क्षणों तक वह बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा जैसे मानो किसी ने उसके हृदय पर कुठाराघात किया हो।
18 उसकी आँखों के सामने वे दिन घूमने लगे जब उसने तपती दोपहर में नंगे पैर खेत जोते थे, जब बच्चों की फीस भरने के लिए खुद फटे कपड़ों में साल निकाल दिए थे।
19 उसकी काँपती आवाज निकली— "बेटा... जिस जमीन को तू बोझ समझ रहा है, उसी ने तुझे अपने सीने से लगाकर बड़ा किया है।"
20 "जब तू छोटा था और भूख से रोता था... तब इसी मिट्टी ने अन्न बनकर तेरा पेट भरा था... और आज तू उसी माँ को बेचने की बात कर रहा है?"
माँ नहीं है वो! सिर्फ जमीन है!

"हिंदी में बसता है भारत का आत्मसम्मान।"

ऐसा क्यों ?

मनुष्य का जीवन बार-बार नहीं मिलता। फिर भी उसके मन से ईर्ष्या, क्रोध और अहंकार पूरी तरह समाप्त नहीं होते। शायद यही मनुष्य की सबसे बड़ी परीक्षा है।

एक बार मैंने और मेरे परम मित्र ने बीस-बीस रुपये के लॉटरी टिकट खरीदे। दो दिन बाद परिणाम आया। उसे 11,000 रुपये मिले और मुझे 10,000 रुपये।

सुनने में यह बात बहुत छोटी लगती है। आखिर मुझे भी तो 10,000 रुपये मिले थे, जो केवल 20 रुपये के निवेश पर बहुत बड़ी राशि थी। मुझे प्रसन्न होना चाहिए था। मित्र की खुशी में खुश होना चाहिए था। परन्तु मन में एक प्रश्न बार-बार उठता रहा–

"उसे 11,000 और मुझे 10,000 ही क्यों?"

मैं स्वयं को समझाता रहा कि बह मेरा परम मित्र है। उसकी खुशी मेरी खुशी होनी चाहिए। फिर भी मन के किसी कोने में एक हल्की-सी कसक बनी रही। यह कसक धन की नहीं थी, बल्कि तुलना की थी।

तभी समझ आया कि मनुष्य को दु:ख अक्सर अपनी कमी से नहीं, बल्कि दूसरे की थोड़ी-सी अधिकता से होता है। 10,000 रुपये मिलने की खुशी उस एक हजार रुपये के अंतर के आगे छोटी पड़ गई।

यही ईर्ष्या का सूक्ष्म रूप है। यह तब भी जन्म ले लेती है जब हमें सब कुछ मिला हो। क्योंकि मन का स्वभाव तुलना करना है, संतोष करना नहीं।

यदि मैं उस समय यह सोचता कि 20 रुपये के बदले मुझे 10,000 रुपये मिले हैं, तो मैं अत्यंत प्रसन्न होता। परन्तु मैंने यह सोचा कि मेरे मित्र को मुझसे 1,000 रुपये अधिक क्यों मिले। और यहीं से खुशी कम हो गई।

" सुख वस्तुओं में नहीं, दृष्टिकोण में है। "

जब हम दूसरों की उपलब्धि को अपनी हार समझ लेते हैं, तब ईर्ष्या जन्म लेती है।
और जब दूसरों की सफलता में अपनी खुशी खोज लेते हैं, तब मन शांत हो जाता है।

आज भी कभी-कभी मन पूछता है–

"आखिर ऐसा क्यों?"

फिर भीतर से उत्तर आता है–

" क्योंकि मनुष्य होना आसान है, लेकिन मन को जीतना कठिन है। "

— ओमप्रकाश गुप्ता

वगैरह वगैरह

गौरव कुमार प्रजापत
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं सचिव

नमस्कार प्रिय पाठकगणों...

तो हमारे सहायक निदेशक महोदय के बहुत इसरार के बाद इस नाचीज ने यह हिम्मत जुटाई कि इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका के लिए एक लेख लिखने का प्रयास किया जाना चाहिए। परन्तु क्या लिखा जाए, किस विषय पर लिखा जाए, किस भाषा में लिखा जाए और कितना लिखा जाए। कितना लिखा जाए इसकी गुत्थी सबसे पहले सुलझ गयी क्योंकि लिखना सिर्फ उतना था जिससे कि इस लेख का पारितोषिक मिल जाए।

किस भाषा में लिखा जाए यह मुश्किल सवाल था क्योंकि हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी, सभी भाषाओं पर मेरा समान नियंत्रण है यानि बहुत खराब। नियंत्रण तो मेरा मेरे घर और ऑफिस पर भी नहीं, खैर छोड़िये वह एक अलग दुखती रग है और एक अलग लेख का विषय है। तो फैसला यह हुआ कि लेख हिन्दी और उर्दू की खिचड़ी यानि हिन्दुस्तानी में लिखा जाए क्योंकि हमने बुर्जुगों की नसीहतों और आर्युवेद के नुस्खों में पढ रखा है कि खिचड़ी एक सुपाच्य खाद्य प्रदार्थ है।

किस विषय पर लिखा जाए यह मुश्किल हमारे कार्यालय के सहायक निदेशक महोदय परम सम्मानीय श्री वजीर सिंह जी ने हल कर दी। उन्होनें फरमाया कि विषयों की कहां कमी हैं, बहुत विषय हैं, आप किसी पर भी लिख सकते हैं किस्सा, कहानी, संस्मरण, कार्यालय विधियां, वगैरह-वगैरह। कुछ यकीन से नहीं कह सकता कि क्यूं, पर मुझे भी उनके द्वारा बताया गया अंतिम विषय यानि 'वगैरह-वगैरह' बहुत पसंद आया। कुछ देर अक्ल पर हाथ मारा तो वजह समझ में आई।

अव्वल तो हम हैं ही इसी विषय के विशेषज्ञ जैसा कि अंग्रेजी में कहते हैं ना कि जैक ऑफ ऑल ट्रेड्स। कुछ संबल इस लोक-धारणा से मिला कि कार्यालय पत्रिका पढता ही कौन है। तो उपर वाले से यही प्रार्थना है कि यह परम्परा इस बार भी कायम-ओ-दायम रहे और इस नाचीज के लेख को भी कोई ना ही पढ़ें। वो गालिब ने फरमाया है ना:

बात पर वां जबान कटती है,
वो कहें और सुना करे कोई,
बक रहा हूँ जुनूं में क्या क्या कुछ,
कुछ ण समझे खुदा करे कोई।

फिर भी हमारे सहायक निदेशक महोदय श्री वजीर सिंह जी की प्रेरणा से लिखे जा रहा हूँ, जो अपने पदनाम के अनुरूप बहुत ही 'सहायता प्रदायक' है, यदि ऐसा कोई विशेषण हिन्दी में है तो। यदि नहीं, तो मैं पहले ही इस दावे से इनकार कर चुका हूं कि भाषाओं पर मेरी कोई विशेषज्ञता है। देखिये हम भी कहां निकल गये, बात हम वजीर भाई साहब की कर रहे थे। तो गरज ये कि भाई साहब एक मिलनसार व्यक्तित्व हैं। ईश्वर मेरा गवाह है कि गत वाक्य में कतई व्यंजना शक्ति का उपयोग नहीं किया गया है क्योंकि वह मेरे दोस्त भी हैं या यूं भी कह सकते हैं कि कम से कम मैं तो उनसे दोस्ती का दावा करता हूं। दुआ ये भी है कि इस लेख के बाद भी यह दोस्ती बनी रहे।

हँसी-मजाक के क्षणों के दौरान सहायक निदेशक महोदय (नीली शर्ट में) और मैं

इस दोस्ती के दावे के बावजूद और उनके बार बार इसरार के बाद भी मैं इस पत्रिका के लिये कोई लेख क्यों नहीं लिखता उसकी भी एक खुफिया वजह है। खैर आप तो अपने हैं और अपनों से क्या छुपाना। तो बात ये है कि हमारे वजीर भाई साहब हिन्दी भाषा के ज्ञानी गुणी आदमी है और ऐसे ज्ञानी गुणी व्यक्तित्व के सामने इस नाचीज का यह तुच्छ प्रयास ऐसे ही है जैसे सूरज के सामने 5 वॉट की एलईडी जलाना। पर जैसा किसी शायर ने कहा है कि: **था जो ना-खूब, बतदरीज वही खूब हुआ।**

तो हो सकता है कि ये ना-खूब उनकी संगत से रफ्ता रफ्ता खूब बन जाए। मारवाड़ी में वैसे भी एक कहावत है कि **काले के संग गौरा बैठे, रंग नहीं तो गुण तो आये।** हमारी तो प्रार्थना है कि हम में उनके गुण और रंगत दोनों आ जायें। हमारी इस हसरत की वजह केवल वही सुधी पाठक समझ पायेंगें जो भाई साहब और मेरी, दोनों की रंगत से वाकिफ हैं। पर हमें इस बात का पूरा एहसास है कि हमारी दुआओं में इतना असर नहीं है क्योंकि उपर वाले के पास हमारे पाप-पुण्य के खाते का बेलेन्स अवश्य ही नेगेटिव चल रहा होगा।

लीजिये, लिखते लिखते भी मेरा ध्यान इसी गणित पर है कि क्या मैं इतना लिख चुका हूं कि पारितोषिक प्रदान किये जाने की न्यूनतम अर्हता पूर्ण हो चुकि है। उम्मीद है कि वगैरह-वगैरह शीर्षक को पढने के पश्चात सुधी पाठकगण इस लेख से किसी ज्ञान प्राप्ति की आशा नहीं रखते होंगें। इसलिये अगर फुरसत-ए-वक्त और खराबी-ए-जहन की वजह से आप पढते-पढते इस लेख की समाप्ति पर आ ही चुके हैं तो इस अकिंचन के प्रथम प्रयास को हरि-रूपी पाठक, भृगु की लात की तरह सहन कर क्षमा करेंगे, यही प्रार्थना है।

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।

का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात।

पुनश्च: इस लेख में मुझ से सरज़द हुई तमाम गुस्ताखियों के लिए माह-ए-फागुन की मदहोश हवाओं और होली के माहौल को ही कसूरवार ठहराया जाए। मैं खुद इसकी कोई व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने से सरासर इनकार करता हूं।

***

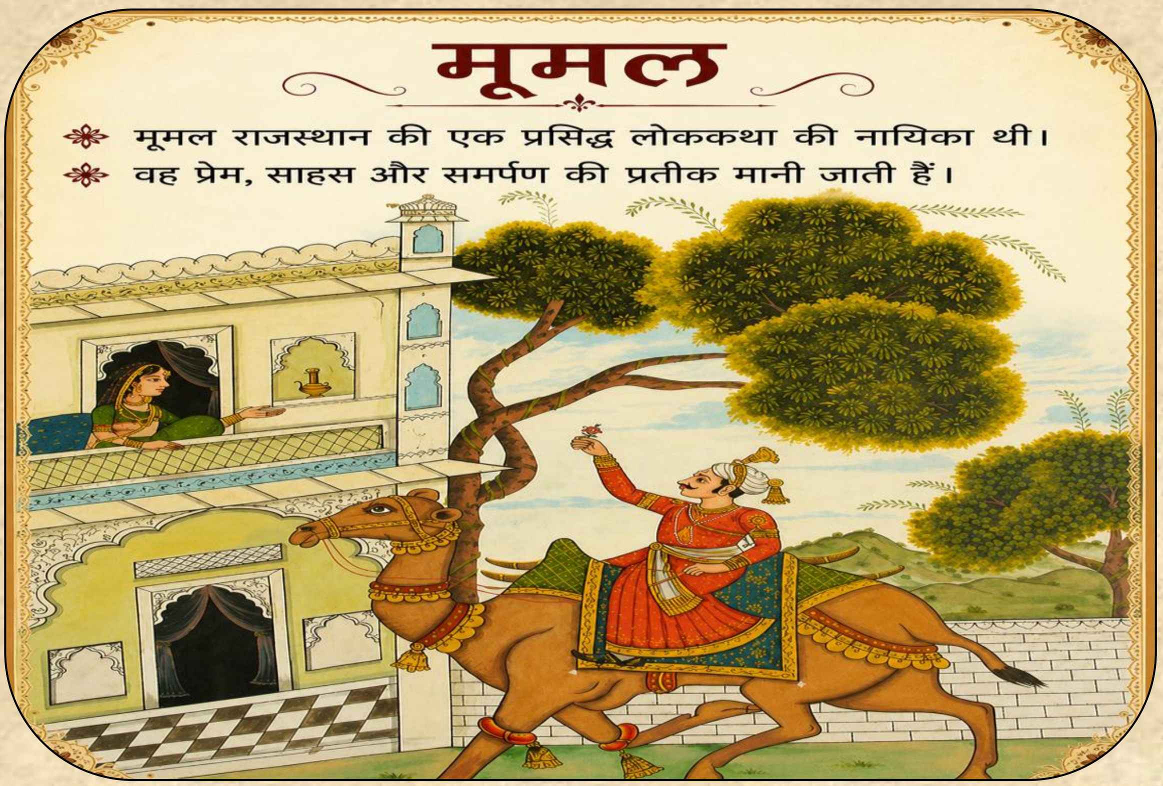

बलवीर सिंह कस्वां
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019: अधिकार, सुरक्षा और न्याय की नई दिशा

उपभोक्ता किसी भी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता की सुरक्षा और उसके अधिकारों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 लागू किया। यह अधिनियम उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार प्रथाओं, भ्रामक विज्ञापनों, दोषपूर्ण वस्तुओं तथा खराब सेवाओं से बचाने के लिए बनाया गया है। साथ ही, यह उपभोक्ता विवादों के त्वरित और प्रभावी निपटान के लिए एक सुदृढ़ व्यवस्था प्रदान करता है।

यह अधिनियम 1986 के पुराने कानून का स्थान लेता है और एक महत्वपूर्ण बदलाव प्रस्तुत करता है। पहले "caveat emptor" अर्थात "खरीददार सावधान रहे" का सिद्धांत लागू था, जिसमें जिम्मेदारी मुख्य रूप से उपभोक्ता पर होती थी। लेकिन नए कानून में यह सिद्धांत बदलकर "विक्रेता की जिम्मेदारी" कर दिया गया है, जिससे अब विक्रेता और सेवा प्रदाता भी उत्तरदायी बन गए हैं। इस अधिनियम के प्रमुख उद्देश्य उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार प्रथाओं से बचाना, सुरक्षित वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध कराना, सरल और त्वरित शिकायत निवारण प्रणाली प्रदान करना तथा उपभोक्ता जागरूकता को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही, यह अधिनियम आधुनिक व्यापार प्रणाली जैसे ई-कॉमर्स और ऑनलाइन लेन-देन को भी नियंत्रित करता है।

अधिनियम उपभोक्ताओं को कई महत्वपूर्ण अधिकार प्रदान करता है। इनमें सुरक्षा का अधिकार, जानकारी का अधिकार, चयन का अधिकार, सुने जाने का अधिकार, प्रतिकार (मुआवजा) का अधिकार तथा उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार शामिल हैं। ये अधिकार उपभोक्ताओं को सशक्त बनाते हैं और उन्हें अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम बनाते हैं। उपभोक्ता विवादों के निपटान के लिए इस अधिनियम में तीन-स्तरीय व्यवस्था बनाई गई है। जिला आयोग ₹50 लाख तक के मामलों को देखता है, राज्य आयोग ₹50 लाख से ₹2 करोड़ तक के मामलों का निपटान करता है, और राष्ट्रीय आयोग ₹2 करोड़ से अधिक के मामलों की सुनवाई करता है। इन आयोगों को मुआवजा देने, वस्तु बदलने, धन वापसी करने, अनुचित व्यापार प्रथाओं को रोकने और दंड लगाने जैसी शक्तियाँ प्राप्त हैं।

इस अधिनियम की एक महत्वपूर्ण विशेषता केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) की स्थापना है। यह प्राधिकरण उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा करता है, उल्लंघनों की जांच करता है और भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ कार्रवाई करता है। यह जुर्माना लगा सकता है, उत्पादों को वापस मंगाने का आदेश दे सकता है तथा गलत विज्ञापनों पर रोक लगा सकता है।

अधिनियम में शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है। अब उपभोक्ता अपने निवास स्थान से या ऑनलाइन माध्यम से आसानी से शिकायत दर्ज कर सकता है। इसके अतिरिक्त, विवादों के त्वरित समाधान के लिए मध्यस्थता (मेडिएशन) की व्यवस्था भी की गई है, जिससे बिना लंबी कानूनी प्रक्रिया के मामलों का निपटारा संभव हो जाता है।

उत्पाद उत्तरदायित्व (Product Liability) इस अधिनियम की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। इसके अंतर्गत यदि किसी दोषपूर्ण उत्पाद या सेवा के कारण उपभोक्ता को नुकसान होता है, तो निर्माता, विक्रेता और सेवा प्रदाता सभी जिम्मेदार होंगे। इससे उपभोक्ताओं की सुरक्षा और अधिक मजबूत होती है।

अधिनियम में अनुचित व्यापार प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ भी कड़े प्रावधान किए गए हैं। झूठे विज्ञापन, नकली छूट, मिलावटी वस्तुएँ और अधिक मूल्य वसूली जैसे मामलों में कठोर कार्रवाई की जा सकती है। यहाँ तक कि ऐसे विज्ञापनों का समर्थन करने वाले प्रसिद्ध् व्यक्तियों को भी दंडित किया जा सकता है। अंततः, इस अधिनियम में अपराधों और दंडों का भी प्रावधान है। मिलावटी या असुरक्षित वस्तुओं की बिक्री तथा भ्रामक विज्ञापन करने पर जुर्माना और गंभीर मामलों में कारावास तक की सजा दी जा सकती है। इसके अतिरिक्त, अपील की प्रक्रिया, आदेशों का पालन और सरकार की नियम बनाने की शक्तियों से संबंधित प्रावधान भी इसमें शामिल हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 एक आधुनिक और प्रभावी कानून है, जो उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों की सुरक्षा, त्वरित न्याय, और सुरक्षित बाजार व्यवस्था प्रदान करता है। यह अधिनियम न केवल उपभोक्ताओं को सशक्त बनाता है, बल्कि व्यापार में पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित करता है।

***

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019

अधिकार, सुरक्षा और न्याय की नई दिशा

यह अधिनियम उपभोक्ताओं को सशक्त बनाता है,
उनके अधिकारों की रक्षा करता है और दिलाता है त्वरित न्याय।

उपभोक्ता के प्रमुख अधिकार

- सुरक्षा का अधिकार
- जानकारी का अधिकार
- चयन का अधिकार
- सुने जाने का अधिकार
- प्रतितोष का अधिकार
- उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार

अधिनियम, 2019 की प्रमुख बातें

- ई-कॉमर्स को कवर करता है
- उपभोक्ता संरक्षण परिषद
- उत्पाद दायित्व (Product Liability)
- त्वरित न्याय
- उच्च मुआवजा सीमा
- अनुचित व्यापार प्रथाओं पर रोक

क्या करें यदि आपके अधिकारों का उल्लंघन हो?

- शिकायत लिखें (तथ्यों और प्रमाणों सहित)
- उपयुक्त उपभोक्ता आयोग में शिकायत करें
- समय पर सुनवाई और न्याय प्राप्त करें
- मुआवजा/प्रतितोष प्राप्त करें

अधिक जानकारी के लिए SCAN करें

जागरूक बनें, अपने अधिकार जानें और उनका उपयोग करें!

सशक्त उपभोक्ता, सशक्त भारत

राजेश रायसिंघानी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्त्री होना एक वरदान है अभिशाप नहीं

भारत में लड़की के पैदा होते ही ज्यादातर परिवारों में मातम सा छा जाता है। वह मां, सासू माँ जो स्वयं स्त्री होती है, खुशी की जगह दुःख के आंसू बहाना शुरू कर देती है। रही सही कसर रिश्तेदार एवं आस पडोसी बधाइयों की जगह सांत्वना देकर पूरी कर देते हैं। बचपन से ही लड़की से भेद भाव होना शुरू हो जाता है। लड़के को तो सह-शिक्षा वाले स्कूल में भेजने में किसी को आपत्ति नहीं होती परन्तु लड़कियों के लिए लड़कियों के स्कूल की तलाश की जाती है। लड़के का भविष्य अच्छा बने तो उसे नामी स्कूल में प्रवेश दिलाने की तैयारी की जाती है जबकि लड़की को घर के आस-पास किसी लड़कियों के स्कूल में उसका प्रवेश करवा दिया जाता है। लड़कों को कॉलेज में पढाई के लिए गावं से शहर भेज दिया जाता है और हॉस्टल में भी रखा जाता है जबकि लड़कियों के लिए स्कूल की पढाई खत्म होते ही वर की तलाश शुरू कर दी जाती है। शहरों में यह प्रथा धीरे-धीरे कुछ बदल रही है परन्तु गाँवों में अभी भी कुछ खास फर्क नहीं पड़ा है।

गाँवों में स्कूल के बाद और शहरों में कालेज की शिक्षा या नौकरी लगने के बाद वर की तलाश शुरू हो जाती है। बहुत तलाश के बाद आखिर उस कन्या का विवाह कर दिया जाता है। अपने माँ बाप की लाडली लड़की को कोई भी काम करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता था परन्तु ससुराल में लडकी से सभी तरह के काम करने की अपेक्षा की जाती है। पुरुष यदि एक दो दिन के लिए भी कहीं बाहर चला जाये तो उसे अकेलापन खाने को दौड़ता है जबकि वह लड़की जो अपने सभी सगे संबंधियों को छोड़ कर ससुराल आती है, उसे वह गम भुलाने के स्थान पर 'यह काम ढंग से नहीं किया' जैसे ताने दिए जाते हैं। यदि ऐसी कोई खुशखबरी नहीं आती है तो जन्म पत्रियां आदि पंडितो को दिखाई जाने लगती हैं कि संतान का सुख कब मिलेगा। थोड़े पढ़े लिखे ससुराल वाले लड़की में कुछ कमी तो नहीं है इसके लिए डॉक्टरों के चक्कर लगाने शुरू कर देते हैं। यदि बच्चे नहीं होते हैं तो बाँझ होने के और यदि किसी को बच्ची हो जाती है तो कुलदीपक पैदा नहीं करके देने के ताने दिए जाते हैं। यह ताने भी ज्यादातर उन्ही के द्वारा दिए जाते हैं जो स्वयं भी स्त्रियाँ ही होती हैं।

पुरुषों को चाहिए कि वह स्त्रियों की इज्जत करें उनकी महत्वता को समझें क्योंकि यदि स्त्रियाँ नहीं होंगी तो पृथ्वी से मानव का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसी प्रकार स्त्रियों को चाहिए कि वह चाहे माँ, सास, ननद, बेटी, बहन, पड़ोसन किसी भी रिश्ते को निभा रहीं हों, सदा रिश्ते को अच्छे से निभाएं। मातम तो किसी के देहांत पर मनाया जाता है इसलिए पुत्री के जन्म पर पुत्र होने जितनी खुशियाँ तो कम से कम हर परिवार में मनाई जानी चाहिए। जब सभी पुरुषों एवं स्त्रियों में इस प्रकार की समझ आएगी तभी स्त्री को पूर्ण सम्मान मिल पायेगा।

***

शालिनी अग्रवाल (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: दुनिया को बदलने वाली तकनीक – अवसरों और चुनौतियों की रोचक कहानी

कल्पना कीजिए एक ऐसी दुनिया जहां मशीनें न सिर्फ काम करती हैं, बल्कि सोचती, सीखती और मानव से बेहतर निर्णय लेती हैं। वर्तमान में हम ठीक ऐसी ही दुनिया में जी रहे हैं। स्वास्थ्य से कृषि, परिवहन से रोजमर्रा की जिंदगी तक - AI हर क्षेत्र में जादू बिखेर रही है। यह तकनीक उत्पादकता बढ़ा रही है, जीवन बचा रही है और पर्यावरण की रक्षा कर रही है। लेकिन यह दोधारी तलवार है, एक तरफ जीवन को आसान और सुरक्षित बना रही है, दूसरी तरफ नई चुनौतियां पैदा कर रही है- जैसे बेरोजगारी, गोपनीयता का संकट, डीपफेक धोखाधड़ी और अत्यधिक ऊर्जा खपत। दुनिया भर के ताजा उदाहरणों से समझते हैं कि AI कैसे वरदान बन रही है और कैसे बड़ा खतरा।

AI के अद्भुत फायदे: जो सच में ज़िंदगी बदल रहे हैं:-

स्वास्थ्य क्षेत्र में AI ने चमत्कार कर दिखाए हैं। AI अब डॉक्टरों का बेस्ट फ्रेंड बन गई है। 2025-2026 में माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसे कंपनियों के AI टूल्स जटिल मेडिकल केसों को 85% से ज्यादा सटीकता से हल कर रहे हैं। अमेरिका में AI ब्रेस्ट कैंसर का पहले पता लगा रहा है, जिससे मरीजों की जान बच रही है। भारत में भी अब कई हॉस्पिटल्स में AI एक्स-रे, MRI देखकर डॉक्टर को बताती है कि कहाँ प्रॉब्लम है।

घाना जैसे अफ्रीकी देशों में Zipline नाम की कंपनी **AI ड्रोन** उड़ा रही है जो दूर-दराज के गाँवों में दवाइयाँ और वैक्सीन पहुँचा रही है - वो भी मिनटों में! **जहाँ सड़क तक नहीं पहुँचती, वहाँ ड्रोन उड़कर दवा डिलीवर कर देता है।**

परिवहन में AI क्रांति ला रही है। Waymo की **सेल्फ-ड्राइविंग कारें** अमेरिका के कई शहरों जैसे सैन फ्रांसिस्को, फीनिक्स, लॉस एंजिल्स और ऑस्टिन में लाखों सुरक्षित सवारी दे रही हैं। 2025 में Waymo ने 14 मिलियन से ज्यादा ट्रिप्स पूरी कीं, और 2026 में लंदन, टोक्यो, सैन डिएगो, लास वेगास, डेट्रॉइट, मियामी, डलास जैसे 20+ शहरों में विस्तार कर रही है। **सोचो, ट्रैफिक जाम में फँसने की टेंशन खत्म, गाड़ी खुद चल रही है और आप बस बैठकर नेटफ्लिक्स देख रहे हो!**

कृषि में AI किसानों की सबसे बड़ी सहायक बन रही है। अमेरिका में जॉन डियर कंपनी के ट्रैक्टर **AI से सिर्फ़ खरपतवार पर ही स्प्रे करते हैं, बाकी फसल को छूते तक नहीं।** इससे कीटनाशक 77% कम लगता है और पैदावार बढ़ती है।

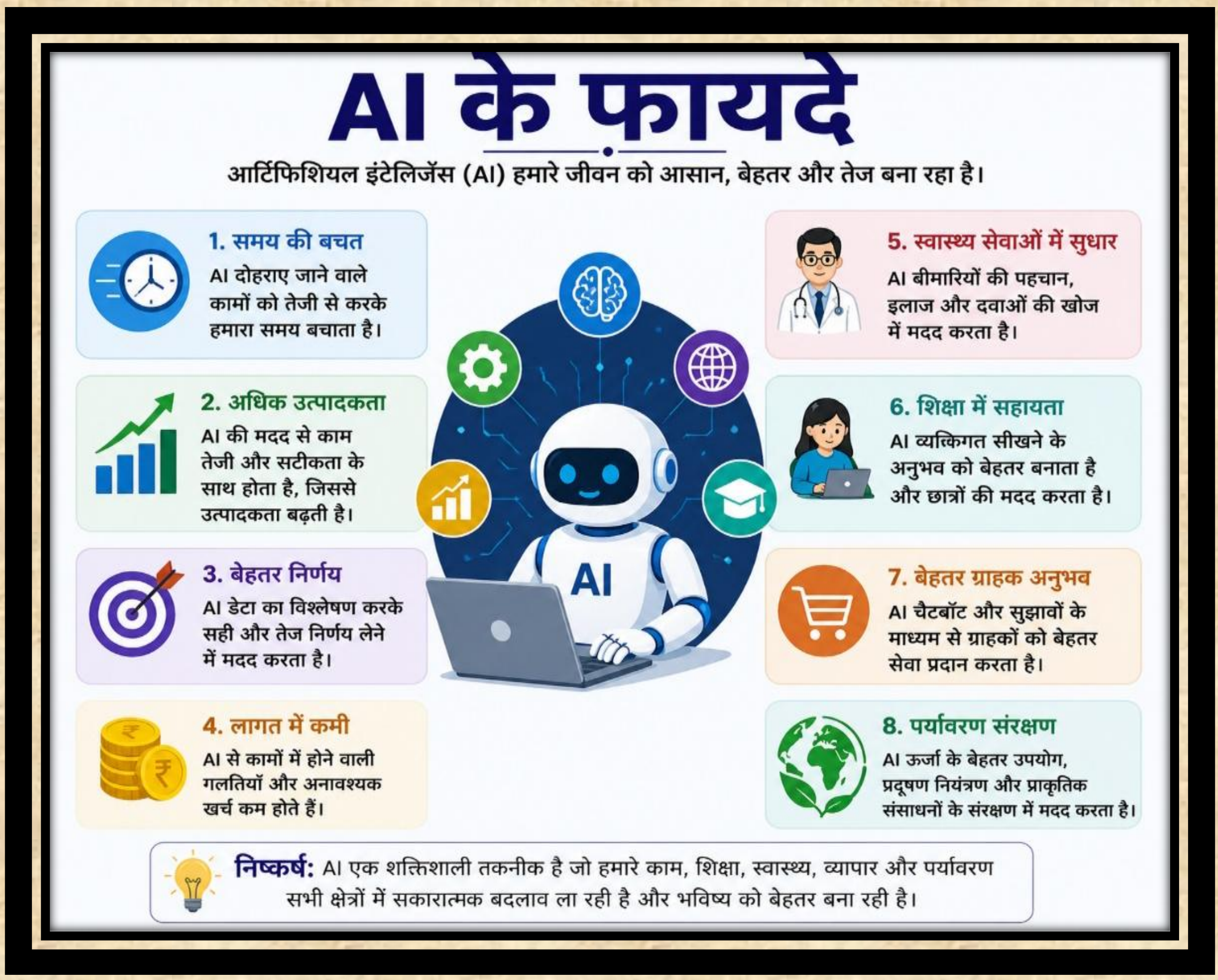

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के उदाहरण

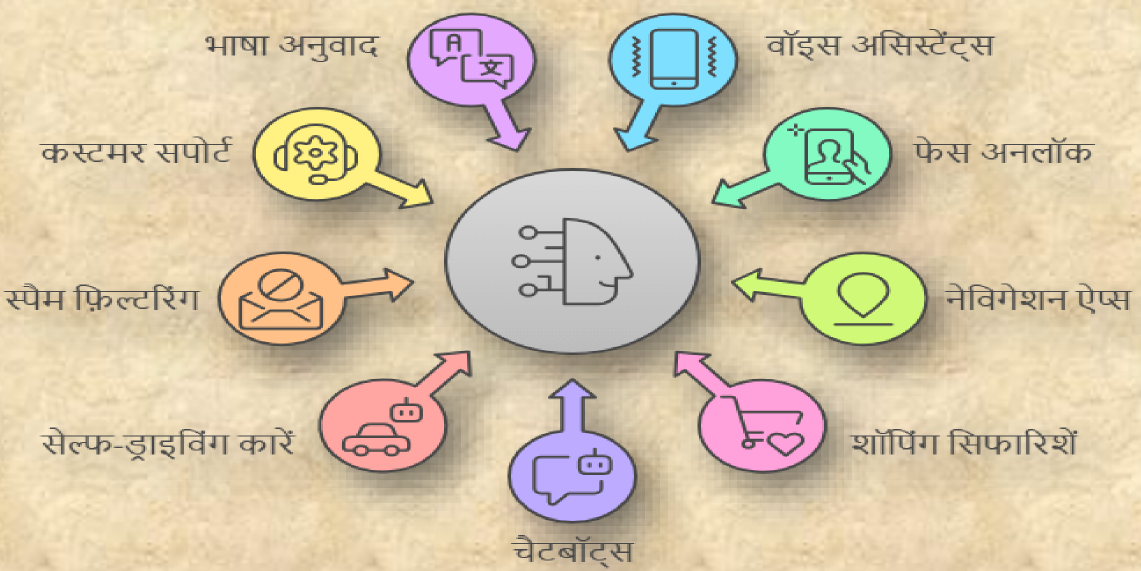

भारत, ब्राजील, तंजानिया में किसान ड्रोन उड़ा रहे हैं जो फसल की बीमारी पहले ही पकड़ लेते हैं। पानी की बर्बादी भी रुक रही है क्योंकि AI बताती है कि **कब और कितना पानी देना** है। छोटे किसानों की कमाई बढ़ रही है, पर्यावरण भी बच रहा है। 2025 में 70% नए एग्री स्टार्टअप्स AI इस्तेमाल कर रहे हैं।

शिक्षा में AI हर छात्र के लिए व्यक्तिगत लर्निंग दे रहा है। पर्यावरण में AI जलवायु मॉडलिंग कर ग्लोबल वॉर्मिंग से लड़ रही है। उद्योगों में रोबोट्स उत्पादकता दोगुनी कर रहे हैं। कुल मिलाकर, AI वैश्विक अर्थव्यवस्था में ट्रिलियंस डॉलर जोड़ रही है और सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स को हासिल करने में सहायक है। AI ने गरीब देशों में स्वास्थ्य और कृषि सुधारकर लाखों जिंदगियां बचाई हैं।

AI की छिपी चुनौतियां: दुनिया भर से डरावनी चेतावनियां

AI का नकारात्मक पक्ष भी कम नहीं है। सबसे बड़ी समस्या रोजगार का छिनना है। 2025 में अकेले अमेरिका के टेक सेक्टर में हज़ारों लोग बेरोज़गार हुए क्योंकि AI उनका काम करने लगी। डेटा एंट्री, कस्टमर सर्विस, ड्राइविंग, फैक्ट्री वर्क - सब स्वचालित हो रहा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2026 में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी आ सकती है, खासकर **एंट्री-लेवल व्हाइट-कॉलर** जॉब्स में 50% तक छिन सकती हैं।

"गॉडफादर ऑफ AI" जेफ्री हिंटन ने चेतावनी दी कि AI बेरोजगारी बढ़ाएगी।

डीपफेक का खतरा सबसे भयानक है। डीपफेक (Deepfake) एक उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित तकनीक है, जिसमें गहन शिक्षण (Deep Learning) एल्गोरिदम का उपयोग करके वीडियो, ऑडियो या छवियों में व्यक्ति के चेहरे, आवाज़ या व्यवहार को यथार्थपूर्ण रूप से प्रतिस्थापित या परिवर्तित किया जाता है।

आसान भाषा में समझे तो **डीपफेक एक तरह की नकली वीडियो, फोटो या ऑडियो होती है,** जो कंप्यूटर आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से बनाई जाती है। इसमें किसी इंसान का चेहरा या आवाज़ दूसरे व्यक्ति पर चिपका दी जाती है और वो इतनी सच्ची लगती है कि पता ही नहीं चलता कि ये झूठी है।

उदाहरण से समझिए: मान लीजिए कोई आपके बॉस का वीडियो बना दे जिसमें वो कह रहे हों - "सबको आज बोनस दे दो।" असल में बॉस ने ऐसा कुछ नहीं कहा, लेकिन वीडियो इतना परफेक्ट है कि आप मान जाएं और पैसे ट्रांसफर कर दें। या किसी मशहूर एक्टर का फेक वीडियो बना दिया जाए जिसमें वो ऐसी बातें कह रहे हों जिसे लोग देखकर गुस्सा हो जाएं या अफवाह फैल जाए।

ये कैसे बनती है? आसान तरीके से - AI को असली इंसान के ढेर सारे फोटो और वीडियो दिखाए जाते हैं। फिर AI सीख जाती है कि उस इंसान का चेहरा कैसे हिलता है, मुस्कुराता है, बोलता है। उसके बाद वो नया वीडियो बना देती है। आजकल तो मोबाइल ऐप से भी कोई भी डीपफेक बना सकता है।

2025 में डीपफेक इंसिडेंट्स लाखों तक पहुंच गए और मिलियन डॉलर्स का नुकसान हुआ। चुनावों में फेक वीडियो अफवाहें फैला रहे हैं। स्कूलों में स्टूडेंट्स डीपफेक से साथियों की फेक इमेज बना रहे हैं, जिससे साइबर बुलिंग बढ़ रही है।

गोपनीयता का संकट बढ़ रहा है - AI बड़े डेटा से व्यक्तिगत जानकारी चुरा सकती है। AI में बायस (पक्षपात) की समस्या है - ट्रेनिंग डेटा पूर्वाग्रही हो तो निर्णय अन्यायपूर्ण होते हैं। साइबर अटैक बढ़ रहे हैं, डेटा सेंटर्स **ऊर्जा खपत बढाकर पर्यावरण** को नुकसान पहुंचा रहे हैं - 2026 तक दोगुनी खपत हो सकती है। AI की ऊर्जा खपत क्लाइमेट चेंज को बढ़ावा दे रही है। स्वचालित हथियारों का डर अलग है।

निष्कर्षत: AI एक टूल है - हम कैसे इस्तेमाल करेंगे, वही इसकी दिशा तय करेगा। यह तकनीक आने वाले समय में दुनिया को और बेहतर बना सकती है - स्वास्थ्य सुधारकर, कृषि मजबूत कर, परिवहन सुरक्षित कर। लेकिन बिना जिम्मेदारी, नैतिकता और वैश्विक नियमों के यह बड़ा संकट ला सकती है।

हमें शिक्षा, रेगुलेशन और संतुलित विकास पर फोकस करना होगा। AI का सही उपयोग मानवता के लिए वरदान साबित होगा, लेकिन लापरवाही अभिशाप। वैश्विक सहयोग से हम इसके फायदे ज्यादा ले सकते हैं और जोखिम कम कर सकते हैं। भविष्य हमारे हाथ में है। AI से डरने की नहीं, बल्कि समझने की ज़रूरत है। अगर स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल किया तो यह तकनीक हमें आगे ले जाएगी।

***

जीवन का रहस्य

सतयुग की बात है, किसी नगर में एक विद्वान संत महापुरुष अपने आश्रम में कथा-प्रवचन कर रहे थे। उनकी कथा प्रवचन सुनने के लिए दूर-दूर से उनके शिष्यगण और ग्रामीण जन प्रतिदिन उनके आश्रम में आते थे। एक दिन की बात है कि उन संत पुरुष की ख्याति सुनकर उस नगर का राजा भी उन विद्वान संत महात्मा की कथा सुनने के लिए उनके आश्रम में पहुंच गया। नगर के राजा का कथा पांडाल में पहुँचने पर उनके लिए यथा योग्य बेठने के हेतु उचित आसन का प्रबन्ध किया गया।

प्रतिदिन की भांति संत महापुरुष ने अपनी कथा -प्रवचन प्रारम्भ किया और वह कहने लगे कि - हे राजन! हमारे शरीर और संसार को स्वप्न की तरह समझना चाहिए। जिस प्रकार पक्षीगण रात्रि को वृक्षों पर बैठकर प्रातःकाल उड़कर चले जाते हैं और उनको उनके (वृक्षों के) छोड़ने पर किसी प्रकार का दुःख नही होता है, यदि दुःख हो तो भी उसे वृथा ही समझना चाहिए। इसी प्रकार जीव संसार में उत्पन्न होकर के अपने कर्म के अनुसार ही शरीर पाकर सुख-दुःख का उपभोग कर के फिर पुनर्जन्म धारण करते है इसलिए उनका सोच करना भी वृथा ही है।

हे राजन् ! अब मैं आप के सामने एक व्यापारी का इतिहास सुनाता हूँ, जिसे आप सावधान होकर सुनो- एक व्यापारी बहुत-सा धन लेकर व्यापार करने की इच्छा से अपने देश से प्रस्थान कर विदेश को चल दिया किंतु उस मूर्ख ने रास्ते में चोर और डाकुओं से धन लूट जाने के भय से बचने के लिए कोई नौकर-चाकर अपने साथ नहीं लिया।

लम्बी दूरी के रास्ते और अकेले को देख कर छः चोर उसके पीछे लग गए। घर से काफी दूर चलने पर जंगल के मार्ग जाते हुए वह रास्ता भूल गया और वन में विकट रास्ते में भटकता हुआ दुःखित होता हुआ विचरने लगा। जब इस प्रकार वह थकित होकर रात्रि को एक नदी के किनारे सो रहा था तो अवसर पाकर उन छः चोरों ने उस पर आक्रमण कर दिया और बहुत देर तक बचाव करने पर भी उसका तमाम धन-माल लूटकर चम्पत हो गए। इस प्रकार चोरों से लुट जाने पर वह व्यापारी बहुत दुःखी हो दहाड़ मारकर जोर जोर से रो ही रहा था कि उसे वन के शेर, रीछ, भालू और हाथी आदि हिंसक जीवों के दहाड़ने और चीखने के भयानक शब्द सुनाई दिये। उन हिंसक जंगली जानवरों के भयानक शब्दो को सुनकर वह और भी ज्यादा घबराकर रोने लगा। परंतु विपत्ति ने अभी उसे पूरी तरह अपने झाल में नहीं लपेटा था क्योंकि कहा गया है कि -

इसी विपत्ति के अवसर में एक मदोन्मत्त हाथी उस पर झपटने के लिए दौड़ा चला आ रहा था, यह देख वह भयभीत हुआ नंगे पाँव किसी सुरक्षित स्थान की खोज में दौड़ने लगा किंतु किसी सुरक्षित स्थान का मिलना तो बहुत दूर बल्कि मेघ और गर्जना करती बिजली ने भी उसे असहाय जानकर अपने शब्द और वर्षा की बूंदों से अधिक भयभीत करना आरंभ कर दिया। यह देख वह सिर पर पैर रखकर नेत्र मूंदे हुए बिना किसी लक्ष्य के मदोन्मत्त हाथी से बचने के लिए अँधेरी रात में दौड़ ही रहा था कि जंगल में स्थित एक पुराने कुंए में गिर पड़ा। हे राजन् ! उस कुंए में गिरने पर उसके सौभाग्य से या दुर्भाग्य से एक बरगद का पेड़ था उसकी बहुत सी जड़े उस कुंए में लटक रही थीं, सो उनमें से एक जड़ की शाखा उसके पैरों में उलझ गई जिसके कारण वह कुएं में गिरने से तो बच गया किन्तु वह उसी कुंए में उलटा लटक गया। इसके बाद उसने ज्योंही ऊपर चढ़ने की इच्छा की त्योंही बिजली की तेज चमक की रौशनी से वही मदोन्मत्त हाथी कुएं के ऊपर डरावने चेहरे के साथ दिखाई दिया, किन्तु इससे भी अधिक दु:ख उसको तब हुआ, जब उसने उस कुंए में एक पांच फण वाला भयंकर विषधर सांप जीभ को लपायमान करते हुए देखा। कथा अमृतपान कराते हुए संत महापुरुष आगे बोले कि - हे राजन् ! ऐसी अवस्था में वह व्यापारी न ऊपर की ओर जा सकता था और न नीचे जा सकता था। किन्तु इतना होने पर भी दु:खों का पूरा पहाड़ नहीं टूट पाया था कि- उसने देखा और विचार किया कि जिस जड़ की सहायता से "मै उलटा लटक रहा हूँ"। उसको श्याम और श्वेत दो चूहे निरन्तर काट रहे हैं। इन तमाम बातों को देखकर जो कुछ उसके चित्त की चिंता हुई होगी इसका थोड़ा बहुत अनुमान हम स्वंय पाठकगण अपने मन में लगा सकते है। आगे की कथा सुनाते हुए संत पुरुष ने कहा कि - हे राजन्! तुमको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य होगा कि उस बरगद की जड़ों में मधु मक्खियों का छता था और उसमें से कभी-कभी शहद की बूंद टपक-टपक कर उसके मुख में पड़ जाती थी। सो उस छत्ते की उन मधु की बूँदो के स्वाद में वह इतना मग्न हुआ कि उपरोक्त दु:ख उसके मन से हवा हो गए और वह उन शहद के बूंदों के टपकने की आशा में अपना आनन्द से समय व्यतीत करने लगा। समय अपनी गति से गतिशील है अत: एक दिन उन दोनों चूहों से वह जड़ रूपी डाली काटी जाने से वह उस अँधियारे कुंए में गिर गया और गिरने के उपरान्त उस भयानक पांच फण वाले सर्प ने उसका भक्षण कर लिया।

यह सुनकर राजा संत महापुरुष से कहने लगे कि, हे भगवन्! मेरी समझ में यह बिल्कुल भी नहीं आया कि इतनी विपत्तियों को उन मधु मक्खियों के छत्ते से टपकने वाली शहद की बूंदों ने किस प्रकार व्यापारी की मनोदशा को शांतचित किया होगा। मेरी इस छोटी सी बुद्धि में तो केवल यही समाया है कि संसार में उस व्यापारी से बढ़कर कोई मूर्ख नहीं होगा। यह सुनकर विद्वान संत महापुरुष ने कहा कि - हे राजन् ! यही हाल हम सभी का और संसार का समझना चाहिए।

कथा को सुचारू रखते हुए संत महापुरुष ने ज्ञान के गूढ़ रहस्यमय को बताते हुए बोले कि हमारा यह जीव (आत्मा) एक व्यापारी है, जो स्वर्ग - नरक और मोक्ष का व्यापार करने के लिए इस संसार (मृत्युलोक) में आता है, यद्यपि पुनर्जन्म के पुण्यों का मनुष्य शरीर के रूप में बहुत सा धन/द्रव्य होता है, परन्तु अज्ञानवश वह जीवात्मा सत्संग रूपी कोई नौकर/चाकर पास में नहीं रखता है, इसलिए व्यापारी रूपी जीवात्मा के पीछे 1.काम, 2.क्रोध, 3. मद, 4. लोभ, 5. मोह और 6. अहंकार रूपी छः चोर उसके पीछे पड़ जाते है और उसके तमाम माल को लूटकर उसे बिल्कुल निकम्मा बना देते हैं। तब यह कर्म रूपी मदोन्मत्त हाथी से प्रेरित होकर संसार रूपी अंधियारे कुंए में गिर पड़ता है और उस के आवागमन रूपी बरगद के वृक्ष की आयु रूपी एक जड़ों के गुच्छे में फँस जाता है तथा गृहस्थ के नाना प्रकार के दुःखों से दुःखित होकर ज्यों ही यह उनसे छूटने का यत्न करता है, त्यों ही कुटुम्ब के मोह रूपी शहद की बूँदों का स्वाद चखकर उनमें ऐसा फँस जाता है कि उसे लुटने-पिटने का बिल्कुल भी कष्ट नहीं होता। इसके पश्चात आयु पूरी हो जाने पर दिन-रात रूपी चूहे उस आयु रूपी जड़/डाल को काट देते हैं और सर्प रूपी वह काल उसको भक्षण कर जाता है। अत: हे राजन् ! यदि आपका विचार इस संसार रूपी अँधियारे कुंए से बचने का है, तो आपको काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और अहंकार इन छः शत्रुओं से पूरी तरह बचने के लिए सदा सत्संग कर हरिभजन करना चाहिए। इतनी कथा सुन कर उस नगर के राजा ने संत पुरुष के चरणों में अपना शीश नवाकर विनम्र भाव से प्रार्थना करते हुए कहा कि - हे संत शिरोमणि ! आप द्वारा इस अथाह ज्ञान रूपी कथा को सुनकर मेरे हृदय के कपाट खुल गए और हृदय पटल पर ज्ञान रूपी दीपक प्रकाशित हो गया है।

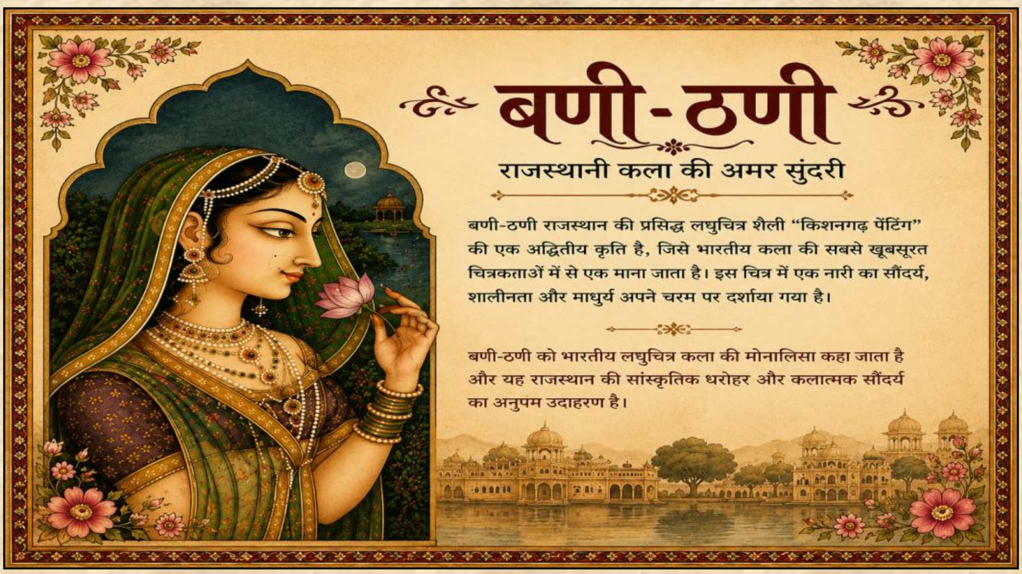

***

विनय शर्मा (डी.ई.ओ.)

कनाताल की ओर - सुकून की तलाश में एक यादगार सफ़र

व्यस्त जीवन, निरंतर बैठकों और जिम्मेदारियों के बीच मन कहीं प्रकृति की शरण में कुछ पल बिताने की चाह रखता है। इसी चाह ने हमें उत्तराखण्ड की शांत वादियों में बसे कनाताल की ओर प्रस्थान करने के लिए प्रेरित किया।

नई दिल्ली से लगभग 300-320 किलोमीटर की दूरी तय कर हम इस शांत पहाड़ी स्थल तक पहुँचे। सुबह-सुबह यात्रा आरंभ की थी। जैसे-जैसे वाहन महानगर की सीमाओं से बाहर निकला, ऊँची इमारतों की जगह खेतों की हरियाली और खुले आकाश ने ले ली। मेरठ, मुज़फ्फरनगर और रुड़की होते हुए जब हम देहरादून पहुँचे, तब तक मौसम में हल्की ठंडक घुल चुकी थी।

देहरादून से आगे पहाड़ी मार्ग प्रारंभ होता है। घुमावदार रास्ते, एक ओर गहरी घाटियाँ और दूसरी ओर आसमान छूते वृक्ष–यह दृश्य मन को रोमांच और उत्साह से भर देता है। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती गई, हवा और अधिक शीतल और शुद्ध होती गई। कुछ ही घंटों में हम कनाताल की शांत गोद में थे।

प्रकृति का सजीव चित्र कनाताल पहुँचते ही ऐसा अनुभव हुआ मानो समय ठहर-सा गया हो। यहाँ न तो शहरों का कोलाहल है और न ही भागदौड़ का तनाव। चारों ओर देवदार और चीड़ के वृक्षों की कतारें, दूर हिमालय की हिमाच्छादित चोटियाँ और नीचे फैली हरी-भरी घाटियाँ–यह दृश्य किसी चित्रकार की उत्कृष्ट कृति जैसा प्रतीत होता है।

प्रातःकाल का समय विशेष रूप से मनमोहक होता है। जब सूर्य की पहली किरणें पहाड़ों की चोटियों को स्पर्श करती हैं, तो पूरा वातावरण स्वर्णिम आभा से भर उठता है। हल्की ठंडी हवा और पक्षियों की मधुर चहचहाहट मन को गहरे सुकून का अनुभव कराती है।

सुरकंडा देवी की आध्यात्मिक यात्रा अगले दिन हमने निकटवर्ती सुरकंडा देवी मंदिर जाने का निर्णय लिया। मंदिर तक पहुँचने के लिए लगभग दो किलोमीटर की पैदल चढ़ाई करनी पड़ती है। रास्ते में हल्की थकान अवश्य महसूस हुई, परंतु प्रकृति के मनोहारी दृश्य और ताज़ी हवा ने हर कदम को आनंदमय बना दिया।

शिखर पर पहुँचकर जो दृश्य दिखाई दिया, वह शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। चारों ओर हिमालय की विस्तृत श्रृंखलाएँ, नीचे बसी घाटियाँ और दूर तक फैली हरियाली–मन श्रद्धा और विस्मय से भर गया। मंदिर की शांत वायु में एक आध्यात्मिक अनुभूति का संचार होता है।

टिहरी झील का रोमांच और शांति

कनाताल से कुछ दूरी पर स्थित टिहरी झील भी हमारी यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। विशाल जलराशि के बीच नौका विहार करना अत्यंत रोमांचकारी अनुभव था। नीले जल में आकाश का प्रतिबिंब और चारों ओर

फैले पर्वत झील की सुंदरता को और भी आकर्षक बना देते हैं। कुछ समय झील के किनारे शांत बैठकर बिताया। उस नीरव वातावरण में जल की हल्की तरंगें और मंद पवन का स्पर्श मन को ध्यान की अवस्था में पहुँचा देता है।

कैंपिंग, तारों भरी रात और अलाव

कनाताल में कैंपिंग का अनुभव इस यात्रा का सबसे यादगार हिस्सा रहा। खुले आकाश के नीचे तंबू में रात्रि विश्राम करना, दूर-दूर तक फैली नीरवता को महसूस करना और अलाव के पास बैठकर गर्म चाय की चुस्कियाँ लेना—यह सब मन में स्थायी स्मृति बन गया। रात्रि में जब आकाश की ओर देखा, तो असंख्य तारे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। शहरों में जहाँ प्रदूषण के कारण आकाश धुंधला रहता है, वहीं यहाँ आकाश मानो पृथ्वी के निकट आ गया हो।

स्थानीय संस्कृति और आतिथ्य

कनाताल के स्थानीय निवासी अत्यंत सरल और विनम्र हैं। उनके चेहरे पर सहज मुस्कान और अतिथि-सत्कार की भावना स्पष्ट झलकती है। हमने यहाँ पारंपरिक गढ़वाली व्यंजनों—मंडुवा की रोटी, गहत की दाल और झंगोरे की खीर—का स्वाद लिया। इन व्यंजनों में पहाड़ की सादगी और पोषण का सुंदर संगम है।

मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन

कनाताल की यात्रा केवल पर्यटन नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभव भी है। यहाँ का शांत वातावरण मन को स्थिर करता है। कुछ समय प्रकृति के बीच ध्यान लगाना या एकांत में बैठकर स्वयं से संवाद करना, जीवन के प्रति नई दृष्टि प्रदान करता है।

यहाँ बिताए गए दिन मानो मन और शरीर दोनों के लिए एक विश्राम थे। लौटते समय ऐसा लगा कि भीतर एक नई ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार हो चुका है।

निष्कर्ष - स्मृतियों में बसता कनाताल

जब वापसी का समय आया, तो मन भारी था। परंतु साथ में ऐसी स्मृतियाँ थीं, जो जीवन भर प्रेरणा देती रहेंगी। कनाताल केवल एक हिल स्टेशन नहीं, बल्कि प्रकृति की गोद में शांति का अनुभव है। जो भी व्यक्ति शहरी जीवन की आपाधापी से दूर कुछ पल सुकून और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहता है, उसके लिए कनाताल एक आदर्श गंतव्य है। यह यात्रा मन को नई ऊर्जा, सकारात्मक सोच और प्रकृति के प्रति गहरा लगाव प्रदान करती है।

***

जिंदगी तब समझ आती है

श्रीमती सुमित्रा (ऑडिट क्लर्क)

बचपन एक पल में छिन जाता है।
'अब इनकी अमानत हो" ये कहकर,
घर से विदा कर दिया जाता है।
कल तक जो बेटी थी,
आज बहु, बीवी व माँ बन जाती है।
जिंदगी तब समझ जाती है,
असल में जिंदगी तब समझ जाती है।

एक पल में अपना घर पराया,
पराया घर अपना बन जाता है।
पहले की वो मस्ती, शरारतों भरा जोश,
जिम्मेदारियों का बोझ बन जाता है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझ आता है।

हजार कोशिशें करके भी उनका दिल ना जीत पाती है।
कोई गुस्से में कुछ कह दे तो, छुपकर आँसू बहाती है।
"क्या तुम्हारी माँ ने यही सिखाया है", सुनकर भी
चेहरे पे मुस्कुराहट लाती है।
जिंदगी तब समझ जाती है,
असल में जिंदगी तब समझ जाती है।

परिवार की बदनामी होगी,
खुद को खुद ही ये समझाती है।
जिसके लिए घर छोड़ा, उसी के हाथों मार भी खाती है।
"डोली में आई हूँ, अर्थी में जाना है" ये सोच
खुद की चिता खुद ही जलती है।
जिंदगी तब समझ जाती है,
असल में जिंदगी तब समझ आती है।

अकेली खड़ी, अंधेरी सड़कों पर, चलने से घबराती है।
मुट्ठी बांध, गहरी श्वास भर,
दिल की धड़कन पे काबू पाती है।
थोड़ी सी आहट पे, माथे पे पसीना,
दिल में घबराहट आती है।
जिंदगी तब समझ जाती है,
असल में जिंदगी तब समझ जाती है।

जिम्मेदारियों का बोझ पड़ने पर,
ट्रेन, बस, ऑटो रिक्शा चलाती है।
साहस के साथ अंतरिक्ष को भेद,
वायुयान भी उड़ाती है।
वीर गाथा की अर्थी को कंधा दे,
शमशान तक पहुंच जाती है।
घर में माँ का हाथ बटाने के साथ,
पिता के कंधों का बोझ भी उठाती है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आता है।

आँसुओं से आँखें भरी होने पर भी,
हर बात पे मुस्कुराता है।
जख्मों से सीना छलनी होने पर भी,
मां का दिल रखने के लिए 'अच्छा हूँ" बताता है।
एक ख्वाब टूटा होने पर भी,
दूसरे को ईंधन की तरह जलाता है।
घर का इकलौता वारिस होने पर भी,
चार पैसे कमाने के लिए दर-दर की ठोकरें खाता है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझ आता है।

हर बात पे नखरे दिखाने वाला,
कभी रूखा-सुखा तो, कभी भूखा ही सोने लगता है।
माँ का लाडला कहलाने वाला,
जिम्मेदार पिता, पति व बेटा बनने लगता है।
हर पल शांत रहने वाला,
छोटी-छोटी बातों पे धीरज खोने लगता है।
"मर्द को दर्द नहीं होता" कहने वाला,
अपने आँसुओं का स्वाद खुद चखने लगता है।
जिंदगी को तब समझने लगता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझने लगता है।

माँ-बाप को बुढ़ापे में काम करता देख,
बीवी-बच्चों को अभावों में पलता देख,
दिन-रात, सुबह-शाम,
खुद को, जरूरतों की भट्टी में जलाता है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझ आता है।

गलत ना होने पर भी,
दरिंदा, जानवर जैसे दागों को उठाता है।
झूठे फेंमिनिज़्म के चक्कर में,
मासुम को मुजरिम बना दिया जाता है।
झूठे केस में लड़के के साथ,
परिवार को भी फंसा दिया जाता है।
बस में धक्का लगने पर,
सिर्फ लड़कों को ही जज किया जाता है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझ आता है।

आई व लुगाई की लड़ाई में,
गेंहूँ के घून की तरह पीसने लगता है।
दिल में राधा होने पर भी,
रूक्मिणी संग घर बसाने लगता है।
मर्यादा पुरुषोत्तम बन,
इच्छाओं पर आदर्शों का चोला चढ़ाने लगता है।
जिंदगी का मतलब तब समझ आने लगता है,
असल में जिंदगी का मतलब तब समझ आने लगता है।

महेंद्र सिंह बाजिया (अतिथि रचनाकार)

आटा-साटा की शादी

पहले ये देख लेते हैं क्या है आटा-साटा की शादी ??

इसे अदला-बदली या विनिमय विवाह भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से भारत के कुछ ग्रामीण इलाकों, खासकर राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में प्रचलित है और इसे एक कुप्रथा माना जाता है।

यह शादी की एक प्रथा है जिसमें शादी इस शर्त पर की जाती है कि जिस घर में लड़की की शादी होगी, उसी परिवार से किसी लड़की जैसे लड़के की बहन, चचेरी बहन, भतीजी या किसी अन्य लड़की की शादी पहले परिवार के लड़के से करनी होगी। स्पष्टतः यह लड़कियों की अदला-बदली का तरीका है और यह तरीका तब अपनाया जाता है, जब लड़का नशा करता हो, कामचोर हो, कोई काम ना करता हो, आजीविका का कोई साधन न हो, उम्र ज्यादा हो गई हो, पहली पत्नी की मृत्यु हो गई हो, दिमाग अल्पविकसित हो या ऐसा ही कोई अन्य कारण, जिससे सामान्य तौर पर कोई भी लड़की उस लड़के से शादी ना करना चाहती हो।

सबसे पहले इस प्रथा पर आधारित एक छोटी सी कहानी देखते है ताकि स्पष्ट हो सके कि असल में यह प्रथा क्या है तथा इसमें लड़कियों की बलि किस तरह चढाई जाती है-

मधु एक बहुत ही होनहार, मेहनती, चंचल व हँसमुख लड़की थी। बचपन से ही हर कक्षा में प्रथम आने वाली, खेल-कूद, नृत्य, संगीत हर गतिविधी में अव्वल, अपने माँ-बाप के सिर का ताज। बड़े होकर नौकरी करना तथा बुढापे में माँ-बाप का सहारा बनना उसका सपना था।

उसी का एक बड़ा भाई (राहुल) भी था, जो उससे बिल्कुल विपरीत था। ना पढाई में रूचि, ना खेल-कूद में, एकदम आलसी, सारे दिन दोस्तों के साथ आवारा घूमने वाला। ना कोई मेहनत, ना कोई सपने और संगति ऐसी मिली की बड़ा होकर नशा करना भी सीख गया, शराब पीकर गली-गलोच करता। एकदम नामसझ एवं जिद्‌दी। ना माँ-बाप की सुनता, ना परिवार में किसी और की।

अब वक्त के साथ माँ-बाप को राहुल की शादी की चिंता सताने लगी। उम्र 25 साल, काम-धंधा कुछ करता नहीं, ऊपर से नसेड़ी भी। कोई भी बाप अपनी बेटी की शादी राहुल से करने को तैयार नहीं था। कोई एक आध रिश्ता आता भी तो राहुल को देखकर तथा अड़ोस-पड़ोस की बातें सुनकर ना ही कर देते।

फिर एक बार पड़ोस के गाँव से धर्मपाल अपनी बेटी (नेहा) का रिश्ता राहुल के लिए लेकर आया। लेकिन शर्त यह थी कि यदि नेहा की शादी राहुल से की जाती है तो बदले में मधु की शादी धर्मपाल के बड़े भाई के

बेटे (मोहित) से करनी होगी, जो थोड़ा दिमागी तौर पर ठीक नहीं था। उम्र 20 साल व दिमाग 10 साल के बच्चे का। साथ ही मधु को अपनी पढाई भी छोड़नी पड़ेगी तथा हाऊस वाइफ बनकर रहना पड़ेगा।

जब मधु को यह बात पता चलती है तो उसके पैरों तले जमीन खिसक जाती है। मधु कहती है- “पिताजी मेरी तो अभी पढ़ाई बाकी है तथा मोहित से शादी, उसका कोई भविष्य नहीं है। मैं कैसे उसके साथ जी पाऊँगी और वैसे भी भैया (राहुल) ने तो वैसे ही अपनी जिंदगी बर्बाद कर रखी है। नेहा की शादी उससे करवाके नेहा की जिंदगी और बर्बाद कर रहे हो। मधु (रोते हुए) मम्मी-पापा में खूब मेहनत करुँगी, पढ़-लिखकर अच्छी नोकरी करुँगी तथा मैं आपके बुढ़ापे का सहारा बनूँगी। प्लीज मुझे पढाई करने दीजिए, अभी मेरी शादी मत कीजिये।”

लेकिन राहुल घर का इकलोता वारिस तथा माँ-बाप का बेटे के लिए प्यार के आगे मधु की मेहनत, उसका भबिष्य तथा बेटी के आंसू सब फीका पड़ गया और ये रिश्ता पक्का कर दिया गय। मधु की शादी मोहित से तथा राहुल की शादी नेहा से कर दी जाती है। मधु की पुरानी दुनिया, अभी तक की मेहनत सब उजड़ जाती है। लेकिन मधु बेहद समझदारी के साथ जो मिला उसको अपनी किस्मत मानकर स्वीकार कर लेती है तथा अपने ससुराल में सास-ससुर, दादी सास, दादा ससुर, पति के साथ ख़ुशी-ख़ुशी रहने लगती है। वह बहुत ही चतुराई से घर संभालने के साथ-साथ, सास-ससुर का खेत के काम में भी हाथ बटाती है तथा मोहित को भी छोटे-छोटे काम सिखाती है। वह अपनी सूझ-बुझ से जल्दी ही ससुराल में सब का दिल जीत लेती है तथा उसको परिवार में बहुत प्यार व सम्मान मिलता है। सब कुछ ठीक ही चल रहा था वह भी ससुराल में बहुत खुश थी। लेकिन मधु की जिंदगी इतनी आसान कहाँ थी। किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

इधर पीहर में कुछ भी ठीक नहीं था। भाई (राहुल) शादी के बाद ज्यादा बिगड़ गया, अपनी पत्नी (नेहा) की बिल्कुल भी इज्जत नहीं करता था। गाली-गलौच करता, नेहा पर हाथ भी उठाता। माँ-बाप, परिवार वालों के समझाने तथा ससुराल वालों के तलाक की धमकी देने पर भी वह नहीं सुधरा। हद तो तब हो जाती है जब एक दिन शराब के लिए पैसे ना होने पर यह अपनी पत्नी से गहने मांगता है तथा पत्नी के मना करने पर वह उसको (नेहा) को इतना मारता है कि वह बेहोश ही हो जाती है। उसको हॉस्पिटल में भर्ती करवाया जाता है।

इसके बाद नेहा के माता-पिता नेहा को अपने साथ घर ले जाते है तथा उसका राहुल से तलाक करवा देते हैं। राहुल पर घरेलु हिंसा का केस कर दिया जाता है। दोनों परिवारों में तना-तनी का माहोल बन जाता है। मधु के पिता भी मधु को अपने घर ले आते है तथा मधु पर भी मोहित से तलाक का दबाव बनाने लगते हैं। मधु के लाख मना करने पर भी उसकी एक नहीं सुनी जाती है। कुछ सामाजिक दबाव बनाके, कुछ इमोशनल ब्लैकमेल करके उसका भी मोहित से तलाक करवा दिया जाता है। अब मधु पूरी तरह से टूट जाती है। ना ही केरियर बचा, ना ही शादी। सपनों की उड़ान भरने वाली लड़की अब तलाकशुदा के नाम से जानी जाने लगी। आगे कोई राह नजर नहीं आ रही थी। सब अँधेरा ही अँधेरा।

लेकिन इस बीच जो अच्छा हुआ वो ये था कि राहुल की आदतों में, उसके व्यवहार में बहुत सुधार हुआ। उसका व्यवहार विनम्र हुआ तथा नशा भी लगभग छोड़ ही दिया था। माँ-बाप के मन में फिर से उम्मीद जागने लगी। बेटे का घर बसाने की फिर से सोचने लगे। लेकिन एक बार समाज में राहुल की जो इमेज बन गई थी वो कहा बदलने वाली थी। इसलिए फिर से वही रास्ता था, मधु के बदले में राहुल की शादी। अब चूँकि दोनों तलाकशुदा तथा राहुल के ऊपर इतने कलंक तो बहुत मुश्किल काम था।

बार-बार कोशिशें करने पर एक रिश्ता तय होता है। जिसमें राहुल की शादी एक 20 वर्षीय लड़की सीमा से तय की जाती है तथा बदले में मधु की शादी 40 वर्षीय मनोज, जो विधुर था तथा उसके पहले से 2 बच्चे थे। साथ में शर्त यह थी कि मधु अपनी कोई संतान पैदा नहीं करेगी क्योंकि मनोज तथा उसके परिवार को डर था कि मधु के अपने बच्चे हुए तो मधु का मनोज के पहले के बच्चों के लिए प्यार कम हो जायेगा, वह उन बच्चों पे ध्यान नहीं देगी।

राहुल तो इस रिश्ते से बहुत खुश था लेकिन मधु बिल्कुल स्तब्ध ना कोई ख़ुशी, ना कोई उम्मीद। इस बार उसने विरोध भी नहीं किया क्योंकि उसको पता था कि उसकी एक भी नहीं सुनी जाएगी, सब परिवार वाले मिलके उसे दबा ही देंगें।

खैर कहानी तो यही पूरी होती है। राहुल अपनी जिंदगी जी रहा है तथा मधु अपनी जिंदगी काट रही है। अब आगे क्या होगा यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

लेकिन सोचने वाली बात यह है कि यह किसी एक मधु की कहानी नहीं है। हर दुसरे घर में यही हो रहा है। हजारों मधु हर साल कुर्बानी देती है। हैरानी की बात यह है कि यह एक रिवाज बन चुका है तथा समाज इसको स्वीकार भी इस कदर कर चुका है कि उनको यह सब जायज लगता है। तथा लड़कियों का अपने अधिकारों के लिए बोलना नाजायज। जो लड़की इस प्रथा के खिलाफ आवाज उठाती है, उसको बदतमीज, कुलक्षिणी होने का ताज पहना दिया जाता है। उसके माँ-बाप, भाई-बहन ही उससे हमेशा के लिए रिश्ता ख़त्म करने की धमकी देते है तथा उसकी कीमत परिवार को, समाज की बाकी लड़कियों को चुकानी पड़ती है।

क्यों इस पितृसतात्मक समाज में बेटियों की खुशी के आगे बेटो की ख़ुशी का तराज़ू हमेशा ही भारी पड़ जाता है? हर बार बेटियों को ही कुर्बानी क्यों देनी पड़ती है? क्या बेटे आलसी हो, जॉब ना करें, नशा करें तो इसमें बेटियों की गलती है? अगर अवसर मिले तो बेटियां माँ-बाप की सेवा नहीं कर सकती? वो माँ-बाप के बुढ़ापे का सहारा नहीं बन सकती?

***

वस्तु बनी लड़की, नियत उसकी तय हुई,
जन्म लिया उसने, पर खुशी उसकी बह गई।
भाई की राह की वह सीढ़ी बन कर रह गई,
रिश्तों के बाज़ार में, वह चुपचाप चली गई।

उसके सपने, उसके रंग, सब ठोकर खाकर गिरे,
क्योंकि परिवार का दबाव था, जो सदियों से घिरे।
वह चुपचाप चली जाती, मायके का मान रख,
अधिकारों की बात करना, जैसे गुनाह हो अब तक।

आँखों में पीड़ा थी, पर होंठों पर मौन था,
उसकी इच्छाओं का वहाँ, कहाँ कोई मोल था।

उसका जीवन तो बस एक अनकहा संताप था,
इस कुप्रथा ने दिया उसे, सदियों का श्राप था।

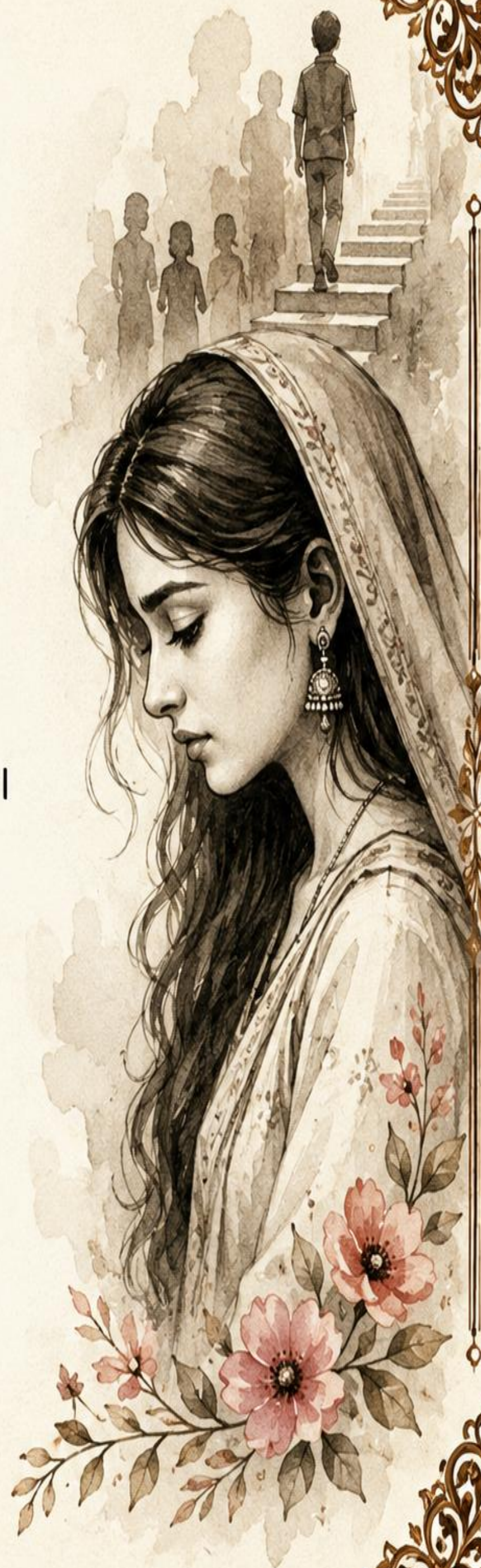

"भूरा" – एक बेजुबान की वफादारी

आज कई दिनों बाद जब मैंने कुछ लिखने के लिए कलम उठाई, तो विचारों की धारा स्वतः ही "भूरा" की ओर मुड़ गई। यह केवल एक भूरा की कहानी नहीं है, बल्कि हर उस बेजुबान जीव की कहानी है जो बिना किसी स्वार्थ के हमारे हित के लिए हमेशा तत्पर रहता है – चाहे उसके लिए उसे स्वयं को ही क्यों न दाँव पर लगाना पड़े।

भूरा हमारे मोहल्ले के एक कुत्ते का नाम था। गाँवों में जानवरों के नामकरण की कोई विशेष परंपरा नहीं होती; उनके रंग-रूप के आधार पर ही नाम रख दिए जाते हैं। जैसे काला हो तो कालू, सफेद हो तो धोलू, और भूरा रंग होने के कारण उसका नाम पड़ गया – "भूरा"।

भूरा बचपन से ही हमारे मोहल्ले में रह रहा था। मोहल्ले के लोग उसे अपनापन तो नहीं, पर उपेक्षा भी नहीं देते थे। किसी घर में रात का बचा हुआ खाना होता तो उसे भूरा के लिए बाहर रख दिया जाता। पास की पानी की टंकी से वह अपनी प्यास बुझा लेता और पूरे मोहल्ले में बेफिक्री से घूमता रहता। बच्चों के साथ खेलना, राहगीरों के पीछे-पीछे चलना और रात में पूरे मोहल्ले की रखवाली करना उसकी आदत बन चुकी थी। मोहल्ले वालों को भी उससे कोई शिकायत नहीं थी।

एक दिन गाँव के कुछ बच्चे मुख्य मार्ग के पास खाली पड़े मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे। भूरा भी हमेशा की तरह वहीं बैठा बच्चों को खेलते हुए देख रहा था। खेलते-खेलते गेंद पास की झाड़ियों और कीचड़ वाली जगह में जा गिरी। वहाँ घनी झाड़ियाँ थीं और वातावरण थोड़ा सुनसान-सा था। बच्चों में से एक लड़का गेंद लेने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा, भूरा अचानक जोर-जोर से भौंकने लगा। बच्चों को लगा कि शायद वह यूँ ही शरारत कर रहा है। उन्होंने उसे पत्थर मारकर भगाने की कोशिश की, पर भूरा कुछ दूर जाकर फिर वहीं आकर खड़ा हो गया।

जब वही बच्चा दोबारा गेंद लेने आगे बढ़ा, तो इस बार भूरा तेजी से दौड़कर उसके सामने आ गया और लगातार भौंकने लगा। बच्चे ने फिर भी आगे बढ़ने का प्रयास किया, तभी भूरा ने उसके पैर पर हल्का-सा काट लिया। बच्चा दर्द से रो पड़ा और बाकी बच्चे भी डरकर अपने-अपने घर भाग गए।

शाम तक पूरे मोहल्ले में खबर फैल चुकी थी कि "भूरा ने बच्चे को काट लिया।"
बस फिर क्या था...

जिस भूरा को रोज़ रोटी मिलती थी, उसके लिए सबके दरवाज़े बंद हो गए। अब वह किसी घर के पास जाता तो लोग डंडे लेकर उसे भगा देते। बच्चों को उससे दूर रहने की चेतावनी दी जाने लगी। कुछ लोगों ने तो उसे बोरी में भरकर गाँव से बाहर छोड़ आने की योजना भी बना ली।

लगातार पाँच दिनों तक भूरा भूखा-प्यासा मोहल्ले में भटकता रहा। उसे खाने की जगह डंडे मिले, प्यार की जगह तिरस्कार मिला। फिर भी एक बात सबने गौर की – वह अधिकतर समय उसी झाड़ी वाली जगह के आसपास मंडराता रहता और वहाँ से गुजरने वाले हर व्यक्ति पर जोर-जोर से भौंकता।

शायद वह अब भी किसी अनहोनी से लोगों को बचाने की कोशिश कर रहा था...
एक शाम लगभग पाँच बजे की बात है। एक राहगीर उसी रास्ते से गुजर रहा था। अचानक झाड़ियों में छिपे एक जहरीले साँप ने उसे डस लिया। उसकी हालत गंभीर हो गई और तुरंत उसे पास के सरकारी अस्पताल ले जाया गया।
यह खबर जैसे ही मोहल्ले में पहुँची, सबकी आँखें झुक गईं।

अब सभी को समझ आ चुका था कि उस दिन भूरा ने बच्चे को क्यों काटा था। वह बच्चा उस साँप के बेहद करीब पहुँच गया था और भूरा उसे खतरे से बचाने की कोशिश कर रहा था। उसने बच्चे को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं, बल्कि उसकी जान बचाने के लिए काटा था।
उस दिन मोहल्ले के हर व्यक्ति के मन में ग्लानि थी। जिस बेज़ुबान ने एक बच्चे की जान बचाने के लिए खुद सबकी नफ़रत सह ली, हम उसी को गाँव से बाहर निकालने पर उतारू थे।
उस दिन के बाद मोहल्ले में सब कुछ बदल गया।

अब भूरा सिर्फ एक आवारा कुत्ता नहीं था, बल्कि मोहल्ले का सदस्य बन चुका था। कई घरों में उसके नाम की एक अतिरिक्त रोटी बनने लगी। बच्चे फिर से उसके साथ खेलने लगे और लोग उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरने लगे। शायद पहली बार भूरा को भी यह एहसास हुआ होगा कि उसकी वफादारी समझ ली गई है।
पर आज भी एक प्रश्न मन को भीतर तक कचोटता है–
न जाने कितने ही "भूरा" हमारे आसपास होंगे, जिन्हें हम बिना समझे दुत्कार देते हैं, उनके भौंकने पर डंडे बरसाते हैं, उन्हें पत्थर मारकर भगा देते हैं... और फिर भी वे हर सुबह हमारे घरों के सामने केवल थोड़ा-सा प्यार पाने की उम्मीद में आ खड़े होते हैं।
बेज़ुबान जानवर बोल नहीं सकते, पर उनका प्रेम, उनकी वफादारी और उनकी संवेदनाएँ अक्सर इंसानों से कहीं अधिक सच्ची होती हैं।

***

भारतीय सिनेमा और एक आलोचनात्मक कहानी

भारतीय सिनेमा और एक आलोचनात्मक कहानी

(समाज, सपनों, व्यापार और सच्चाई का विशाल आईना)

भारतीय सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक परंपराओं, संघर्षों, प्रेम, राजनीति, गरीबी, अमीरी, नैतिकता और बदलते समय का जीवंत दस्तावेज भी है। जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है, उसी प्रकार सिनेमा आधुनिक युग का सबसे प्रभावशाली दर्पण है। करोड़ों लोग फिल्मों से प्रभावित होते हैं, उनसे सीखते हैं, उनके पात्रों को अपनाते हैं, उनके संवाद बोलते हैं और कई बार अपने जीवन के निर्णय भी फिल्मों से प्रेरित होकर लेते हैं।

भारत में सिनेमा की शुरुआत तब हुई जब दादासाहेब फाल्के ने वर्ष 1913 में *राजा हरिश्चंद्र* का निर्माण किया। यह केवल एक फिल्म नहीं थी, बल्कि भारतीय कला और तकनीक के नए युग की शुरुआत थी। इसके बाद धीरे-धीरे भारतीय सिनेमा ने लंबा सफर तय किया। मूक फिल्मों से लेकर बोलती फिल्मों तक, श्वेत-श्याम फिल्मों से रंगीन फिल्मों तक, एकल स्क्रीन थिएटर से मल्टीप्लेक्स तक और अब सिनेमाघरों से ओटीटी प्लेटफॉर्म तक भारतीय सिनेमा निरंतर विकसित होता रहा है।

भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता है। भारत में अनेक भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ हैं, और यही विविधता फिल्मों में भी दिखाई देती है। हिंदी सिनेमा जिसे प्रायः बॉलीवुड कहा जाता है, सबसे अधिक चर्चित रहा है, परंतु दक्षिण भारतीय सिनेमा–तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ फिल्मों–ने भी विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। बंगाली सिनेमा ने संवेदनशील कहानियाँ दीं, मराठी सिनेमा ने यथार्थवाद प्रस्तुत किया, पंजाबी सिनेमा ने उत्साह और संगीत दिया।

मुगल-ए-आज़म जैसी भव्य फिल्मों ने इतिहास को जीवंत किया, शोले ने दोस्ती, बदले और साहस को अमर बना दिया, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे ने प्रेम की नई परिभाषा दी। वहीं मदर इंडिया ने मातृत्व और संघर्ष को दिखाया, तारे ज़मीन पर ने शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न उठाया, आर्टिकल 15 ने सामाजिक भेदभाव को उजागर किया।

इन फिल्मों ने सिद्ध किया कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी हो सकता है।

भारतीय सिनेमा का स्वर्णिम युग

1950 से 1980 तक का समय भारतीय सिनेमा का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस दौर में कहानी, अभिनय, संगीत और भावनाओं का अद्भुत संगम देखने को मिला। राज कपूर, दिलीप कुमार, देव आनंद, नर्गिस, मधुबाला, मीना कुमारी जैसे कलाकारों ने अभिनय को कला का स्तर दिया।

उस समय फिल्मों में संवादों में गहराई होती थी, गीतों में दर्शन होता था और कहानियों में समाज की धड़कन सुनाई देती थी। संगीतकारों और गीतकारों ने ऐसे गीत दिए जो आज भी लोगों के दिलों में जीवित हैं।

आधुनिक सिनेमा और बदलती प्राथमिकताएँ

समय बदला, तकनीक बदली, दर्शक बदले और सिनेमा भी बदल गया। आज फिल्मों में भव्य सेट, महंगे विजुअल इफेक्ट्स, बड़े सितारे, विदेशी लोकेशन और विशाल प्रचार अभियान आम बात हो गए हैं। अब फिल्म की सफलता का पैमाना केवल कहानी नहीं, बल्कि पहले दिन की कमाई, सोशल मीडिया ट्रेंड और बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड बन गया है।

यहाँ से आलोचना आरंभ होती है।

कई फिल्मों में कहानी कमजोर होती है, परंतु बड़े सितारों के कारण वे सफल हो जाती हैं। दूसरी ओर, छोटे कलाकारों और गंभीर विषयों वाली फिल्में पर्याप्त प्रचार न मिलने के कारण अनदेखी रह जाती हैं। इससे प्रतिभा की तुलना में बाजारवाद अधिक शक्तिशाली प्रतीत होता है।

भारतीय सिनेमा की प्रमुख आलोचनाएँ

1. वास्तविकता से दूरी

कई फिल्मों में गरीबी भी सुंदर दिखाई जाती है, संघर्ष भी फैशन की तरह दिखता है और जीवन की कठिनाइयाँ दो गीतों में समाप्त हो जाती हैं। इससे समाज की सच्चाई धुंधली हो जाती है।

2. महिलाओं का सीमित चित्रण

लंबे समय तक फिल्मों में महिलाओं को केवल प्रेमिका, त्यागमयी पत्नी या सजावट के रूप में दिखाया गया। हालांकि अब स्थिति बदल रही है, फिर भी यह आलोचना लंबे समय तक सत्य रही है।

3. हिंसा और अपराध का महिमामंडन

कई फिल्मों में अपराधी पात्रों को स्टाइलिश नायक की तरह प्रस्तुत किया जाता है। इससे युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

4. परिवारवाद और अवसरों की असमानता

भारतीय सिनेमा पर अक्सर आरोप लगता है कि नए प्रतिभाशाली कलाकारों की तुलना में फिल्मी परिवारों से आने वालों को अधिक अवसर मिलते हैं।

5. व्यापार का अत्यधिक प्रभाव

कला की जगह कमाई को प्राथमिकता देने से कई बार सिनेमा की आत्मा कमजोर हो जाती है।

ओटीटी युग और नई आशा

डिजिटल युग में ओटीटी प्लेटफॉर्म ने सिनेमा को नई दिशा दी है। अब छोटे शहरों की कहानियाँ, नए कलाकार, अलग विषय और साहसी प्रयोग सामने आ रहे हैं। दर्शक अब केवल सितारों के नाम पर फिल्म नहीं देखते, बल्कि अच्छी कहानी भी खोजते हैं। यह भारतीय सिनेमा के लिए सकारात्मक परिवर्तन है।

आलोचनात्मक कहानी - "रोशनी के पीछे अंधेरा"

मुंबई शहर में लाखों सपने रोज़ उतरते हैं। उन्हीं सपनों में एक सपना अर्जुन का भी था। राजस्थान के छोटे कस्बे से आया अर्जुन अपने बैग में कुछ कपड़े, माँ की दी हुई तस्वीर और दिल में अभिनेता बनने का सपना लेकर मुंबई पहुँचा था।

वह हर रोज़ फिल्मी पोस्टर देखता और सोचता—एक दिन मेरा चेहरा भी यहाँ होगा। वह अभिनय सीखता, ऑडिशन देता, लाइन में खड़ा रहता, रिजेक्शन सुनता और फिर अगले दिन नई उम्मीद लेकर निकल पड़ता।

महीनों बाद उसे एक बड़े बैनर की फिल्म में छोटा रोल मिला। वह खुशी से रो पड़ा। उसे लगा अब जीवन बदल जाएगा।

पहले दिन सेट पर पहुँचा तो उसने देखा–कैमरों की रोशनी तेज थी, पर चेहरों पर थकान थी। सब मुस्कुरा रहे थे, पर कोई खुश नहीं था।

एक अभिनेता दूसरे से जल रहा था। लेखक अपनी कहानी कटते देख चुप था। निर्देशक निर्माता के दबाव में था। नया कलाकार डर में था। पुराना कलाकार असुरक्षा में था।

अर्जुन ने सोचा था कि यहाँ कला होगी, पर यहाँ गणना थी।

एक दिन उसने लेखक को कोने में उदास बैठे देखा। अर्जुन ने पूछा, "सर, क्या हुआ?"

लेखक बोला, "मैंने एक सच्ची कहानी लिखी थी, पर उसमें चार गाने, दो लड़ाइयाँ और एक विदेशी लोकेशन जोड़ दी गई। अब वह कहानी नहीं, सौदा है।"

अर्जुन के भीतर कुछ टूट गया।

फिल्म रिलीज हुई, खूब चली, करोड़ों कमाए। लोग तालियाँ बजाते रहे। लेकिन अर्जुन जानता था कि पर्दे पर जो चमक थी, वह भीतर के अंधेरे को छिपा रही थी।

उसने सब छोड़ दिया। गाँव लौटा। वहाँ बच्चों के साथ नाटक मंडली बनाई। बिना बड़े सेट, बिना कैमरे, बिना मेकअप–वह सच्ची कहानियाँ कहने लगा।

एक बच्चे ने उससे पूछा, "सर, आप मुंबई क्यों छोड़ आए?"

अर्जुन मुस्कुराया और बोला–
"क्योंकि वहाँ लोग अभिनय करते थे, यहाँ लोग जीते हैं।"

सिनेमा का समाज पर प्रभाव

सिनेमा फैशन बदलता है, भाषा बदलता है, सोच बदलता है। कई लोगों ने देशभक्ति फिल्मों से प्रेरणा ली, कई लोगों ने प्रेम करना सीखा, कई लोगों ने संघर्ष करना सीखा।

परंतु यदि सिनेमा गलत संदेश दे, हिंसा को आकर्षक बनाए, स्त्री का अपमान सामान्य दिखाए या झूठे सपने बेचे–तो उसका प्रभाव भी गहरा होता है। इसलिए सिनेमा की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है।

भविष्य का भारतीय सिनेमा कैसा हो?

भारतीय सिनेमा का भविष्य उज्ज्वल है यदि–

- कहानी को स्टारडम से ऊपर रखा जाए।
- नए कलाकारों को अवसर मिले।
- महिलाओं और समाज के हर वर्ग का सम्मानजनक चित्रण हो।
- क्षेत्रीय सिनेमा को बराबर महत्व मिले।
- मनोरंजन के साथ विचार भी दिया जाए।

भारतीय सिनेमा एक महासागर है–जिसमें कला भी है, व्यापार भी; संवेदना भी है, दिखावा भी; सच्चाई भी है, भ्रम भी। यह समाज को बदलने की शक्ति रखता है, पर स्वयं को भी बदलने की आवश्यकता है।

‘घूमर’ राजस्थान का प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जो मुख्यतः महिलाओं द्वारा किया जाता है। "घूमर राजस्थान की आन, बान और शान का प्रतीक लोक नृत्य है, जो रंग, संस्कृति और उत्सव का सुंदर संगम प्रस्तुत करता है।" 💃✨

***

सोनाली (अतिथि रचनाकार)

भगत सिंह के आख़िरी घंटे

भगत सिंह के आख़िरी घंटे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का वह अध्याय हैं, जिन्हें याद करते ही हर भारतीय की आँखें नम हो जाती हैं और सीना गर्व से भर उठता है। यह केवल एक वीर क्रांतिकारी की मृत्यु की कहानी नहीं, बल्कि उस युवा आत्मा की अमर गाथा है जिसने हँसते-हँसते मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

सन् 1931 का समय था। भारत अंग्रेजी हुकूमत की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। चारों ओर अन्याय, अत्याचार और दमन का अंधेरा फैला हुआ था। लेकिन इसी अंधेरे को चीरने के लिए कुछ नौजवान क्रांति की मशाल लेकर खड़े हुए थे। उनमें सबसे तेजस्वी नाम था भगत सिंह का।

भगत सिंह ने बचपन से ही देशभक्ति को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था। जब **जलियांवाला बाग हत्याकांड** हुआ, तब वे छोटे थे, लेकिन उस घटना ने उनके हृदय पर अमिट छाप छोड़ दी। कहा जाता है कि वे उस स्थान की मिट्टी अपने साथ घर ले आए थे। तभी उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वे इस देश को गुलामी से मुक्त कराएंगे। जब अंग्रेज सरकार ने लाला लाजपत राय पर लाठीचार्ज कराया और उनकी मृत्यु हो गई, तब भगत सिंह और उनके साथियों ने इसका बदला लेने का प्रण लिया। बाद में असेम्बली में बम फेंककर उन्होंने यह संदेश दिया कि उनका उद्देश्य हत्या नहीं, बल्कि बहरी सरकार को जगाना था।

इन घटनाओं के बाद अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। जेल में भी उनका साहस कम नहीं हुआ। उन्होंने कैदियों के अधिकारों के लिए लंबी भूख हड़ताल की। वे चाहते थे कि भारतीय कैदियों के साथ इंसानों जैसा व्यवहार हो। उनका संघर्ष जेल की सलाखों के पीछे भी जारी रहा।

फिर वह दिन आया - **23 मार्च 1931;** स्थान था लाहौर सेंट्रल जेल। पूरे देश की निगाहें इस जेल की ओर लगी थीं। लोग प्रार्थना कर रहे थे कि शायद सजा टल जाए, शायद अंग्रेज सरकार दया दिखा दे। लेकिन अत्याचारी सत्ता ने दया नहीं दिखाई।

कहा जाता है कि फाँसी का समय सुबह तय था, पर जनता के विद्रोह के डर से अंग्रेज अधिकारियों ने शाम को गुप्त रूप से फाँसी देने का निर्णय लिया। जेल के भीतर सन्नाटा था, लेकिन उस सन्नाटे के बीच एक कोठरी में बैठा एक नौजवान बिल्कुल शांत था–वह थे भगत सिंह।

वे उस समय व्लादिमीर लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। यह दृश्य अद्भुत था जिस युवक को कुछ ही क्षणों बाद मृत्यु के द्वार पर जाना था, वह ज्ञान और विचारों में डूबा हुआ था। जब जेल अधिकारी उन्हें लेने आए, तो उन्होंने शांत स्वर में कहा–**"ठहरिए, एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।"**

यह सुनकर अधिकारी भी स्तब्ध रह गए। मृत्यु सामने खड़ी थी, पर उनके चेहरे पर भय का नामोनिशान नहीं था।

कुछ ही देर बाद वे उठे। उन्होंने अपने प्रिय साथियों शिवाराम राजगुरु और सुखदेव थापर को गले लगाया। तीनों मित्रों की आँखों में आँसू नहीं थे, केवल गर्व और जोश था। वे जानते थे कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।

तीनों ने हाथों में हाथ डाले और फाँसीघर की ओर बढ़ने लगे। उनके कदमों में कंपन नहीं था, बल्कि ऐसा लगता था मानो वे विजय की ओर जा रहे हों। रास्ते भर उनकी आवाज़ गूँजती रही–

"इंकलाब ज़िंदाबाद!"

"साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

जेल की दीवारें भी जैसे इन नारों से काँप उठी थीं। अंग्रेज अधिकारी यह देखकर हैरान थे कि जिन्हें मौत दी जा रही है, वे स्वयं मौत का स्वागत कर रहे हैं। कहा जाता है कि फाँसी के तख्ते पर पहुँचकर भगत सिंह ने रस्सी को चूमा और मुस्कुराते हुए कहा कि वे भारत माता की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं। कुछ क्षणों बाद तीनों वीर सपूत अमर हो गए।

लेकिन अंग्रेज सरकार का भय यहीं समाप्त नहीं हुआ। उन्हें डर था कि यदि जनता को शव सौंप दिए गए, तो विद्रोह भड़क उठेगा। इसलिए रात के अंधेरे में उनके शवों को चुपचाप जेल के पीछे से निकालकर हुसैनीवाला के निकट सतलुज नदी किनारे ले जाया गया और जल्दबाजी में अंतिम संस्कार करने का प्रयास किया गया।

परंतु सत्य छिपाया नहीं जा सका। जब लोगों को पता चला, तो हजारों लोग वहाँ पहुँच गए। अधजली चिताओं से उन्होंने अपने शहीदों के अवशेष उठाए। पूरा देश रो पड़ा। गाँव-गाँव, शहर-शहर मातम छा गया। लेकिन उस शोक के साथ एक नई आग भी भड़क उठी–आजादी की आग।

भगत सिंह उस समय केवल 23 वर्ष के थे। इतनी छोटी आयु में उन्होंने जो साहस, विचार और बलिदान दिखाया, वह सदियों तक प्रेरणा देता रहेगा। वे केवल व्यक्ति नहीं थे, वे विचार थे। वे केवल नाम नहीं, एक आंदोलन थे।

आज भी जब कोई युवा अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है, जब कोई देश के लिए कुछ करने का सपना देखता है, जब कोई सत्य के लिए संघर्ष करता है–वहाँ भगत सिंह की आत्मा जीवित दिखाई देती है।

उनके आख़िरी घंटे हमें सिखाते हैं कि मृत्यु से बड़ा आदर्श होता है, और जीवन से बड़ा उद्देश्य।

***

वे फाँसी पर झूले नहीं थे, वे अमरता की ऊँचाइयों पर चढ़े थे।

वे मरे नहीं... भारत के हर दिल में बस गए।

राजस्थान के शूरवीर

शौर्य, स्वाभिमान और बलिदान की अमर गाथा

वीरों की इस पावन भूमि को शत्-शत् नमन

महाराणा प्रताप

स्वाभिमान के लिए जीवनभर
संघर्ष करने वाले मेवाड़ के
अमर योद्धा।

दुर्गादास राठौड़

मारवाड़ की आन-बान-शान
की रक्षा करने वाले
अद्वितीय वीर।

राणा सांगा

राजपूत वीरता और अदम्य
साहस के प्रतीक
महान शासक।

अमर सिंह राठौड़

असाधारण पराक्रम और
आत्मसम्मान के लिए
प्रसिद्ध अमर वीर।

पन्ना धाय

अपने पुत्र का बलिदान देकर
मेवाड़ के उत्तराधिकारी की
रक्षा करने वाली अमर वीरांगना।

हाड़ी रानी

राष्ट्र और धर्म की रक्षा हेतु
सर्वोच्च बलिदान देने वाली
वीरांगना।

जय राजस्थान • जय मातृभूमि

रण बाँकुरों की यह धरती, वीरों का यह अभिमान।
राजस्थान की गौरवगाथा, भारत की अमर पहचान॥

द्विभाषी शब्दों का संग्रह

क्रम संख्या	अंग्रेजी शब्द	हिंदी अर्थ
1.	Attestation	साक्ष्यांकन
2.	Assignment	सुपुर्द काम, समनुदेशन
3.	Bye- law	उप-विधि
4.	Bureaucracy	नौकरशाही
5.	Charge	कार्य-प्रभार, आरोप
6.	Discretion	विवेक
7.	Errata	शुद्धि-पत्र
8.	Enclosure	अनुलग्नक
9.	Forfeiture	जब्ती
10.	Indemnity bond	क्षतिपूर्ति बंधपत्र
11.	Letter of credit	शाख-पत्र
12.	Lump sum	एकमुश्त
13.	Mortgage	बंधक
14.	Nomination	नामांकन
15.	Outgo	खर्च
16.	Realization	वसूली, अनुभूति
17.	Rectification	परिशोधन
18.	Superannuation	अधिवार्षिकी
19.	Utilisation certificate	उपयोगिता प्रमाणपत्र
20.	Verification	सत्यापन

"हिंदी हमारी शान है,
भारत की पहचान है।"

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तित 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तित 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्तित 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टदप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिसटेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक ददारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिगि)	100%	100%	100%
8.	ददिभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
9.	जर्नल्ल और मानक सं[illegible]कों को छोइकर पुस्तकालाय के कुल अनुदान में से डिविटल सामग्री अर्थात हिदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, यैनडाइव तथा अंगेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई रशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जिनमें कंम्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेवसाइंट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सुचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रकाशित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स.चि./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मयालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक), वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	45%	35%	25%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधावा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।